

# रामचरित मानस और मोल्ल रामायण

(तुलनात्मक अध्ययन)

लेखक

डॉ. के. नरसिंहमूर्ति, एम.ए. पि.एचडी ,

शरवण पब्लिकेशन्स

1991

रामचरित मानस और मोल्ल रामायण  
(तुलनात्मक अध्ययन)

By

K. Narasimha Murthy

First Edition 1991

Copies 1000

For Copies :

K. NARASIMHA MURTHY  
Lecturer in Hindi  
Govt. Degree College,  
Piler.

This Book is Published under the financial Assistance of Tirumala  
Tirupati Devasthanams under their Scheme “Aid to Publish  
Religious Books”

PRICE : Rs. **50/-**

Printed at :

SRI SATYA SAI PRINTERS  
6-2-151C, T. Nagar, Tirupati.

## प्राक्कथन

तुलनात्मक अध्ययन नवीन शोध की एक विधा है। दो भिन्न भाषाओं के साहित्य के तुलनात्मक अध्ययन से अनेक ऐसे तत्वों का उद्घाटन होता है जिनके आधार पर मानवीय भावनाओं, विचारों और प्रवृत्तियों की विश्व जनीनता स्थापित की जा सकती है। कभी कभी अपनी एक ही कृति के आधार पर लेखक का स्थान साहित्य जगत में स्थाई बन जाता है। तुलसी का राम चरित मानस प्रथम परंपरा का है और मोल्ल का रामायण दूसरी परंपरा का।

तुलसी का व्यक्तित्व जहां विस्तृत और व्यापक है वहां मोल्ल का व्यक्तित्व सीमित और पूर्ण है। मोल्ल का रामायण मानस के समान विस्तृत महाकाव्य नहीं है फिर भी उसमें वर्णित मार्मिक स्थल मानस के मार्मिक स्थलों से साम्य रखते हैं। इन्हीं रोचक मार्मिक स्थलों की समानता से प्रेरित होकर लेखक ने ने प्रस्तुत अध्ययन की ओर अपनी रुचि दिखाई है।

मोल्ल और तुलसी के रामायणों का तुलनात्मक अध्ययन छः अध्यायों में किया गया है। प्रथम अध्याय एक दृष्टि से विशय प्रवेश कहा जा सकता है। इसमें प्रस्तुत विषय को सुग्राह्य बनानेवाले उन सभो तथ्यों का विवरण देनेका किंचित् प्रयास किया गया है जिन के प्रकाश में अध्ययन का अनुशीलन सुगम ही सके।

द्वितीय अध्याय कथावस्तु के सम्यक विवेचन से युक्त है। इसी के अंतर्गत विभिन्न काण्डों में तुलसी के और मोल्ल के द्वारा स्वीकृत अनेक प्रसंगों और घटनाओं का भी आकलन किया गया है। उन स्वीकृत घटनाओं के प्रेरणा स्रोतों पर भी प्रकाश डाला गया है।

तृतीय अध्याय तुलसी और मोल्ल की पात्र परिकल्पना से संबन्धित है। दोनों महान साहित्यिक व्यक्तित्वों की पात्र परिकल्पना में मौलिकता को भी स्पष्ट किया गया है।

भाव पक्ष और कला पक्ष ऐसे तत्व हैं जिनके आकलन के बिना किसी कृति का अध्ययन अपूर्ण है। तुलनात्मक अध्ययन में भी इस दृष्टि से साहित्यिक कृतियों का अध्ययन आवश्यक है। ये दोनों ऐसे पक्ष हैं जिनसे साहित्यकारों की विशिष्टता स्पष्ट हो जाती है। इन दोनों तत्वों पर क्रमशः चतुर्थ और पंचम अध्यायों में विचार किया गया है। षष्ठ अध्याय उपसंहार है।

प्रस्तुत अध्ययन के प्रस्तुतीकरण के पीछे अनेक व्यक्तित्वों के आशीर्वाद है। उनमें प्रथम उल्लेखनीय श्रद्धेय डा. यस. टी. नरसिंहाचारी, एम्. ए., पी. एच. डी. का है जिनकी प्रेरणा से लेखक इस अध्ययन में प्रवृत्त होने का अवसर मिला है। प्रस्तुत अध्ययन की रूपरेखा को बनाने में श्रद्धेय डा. चन्द्रभान रावत जी द्वारा दृष्टि मिली है और प्रस्तुतीकरण में श्रद्धेय डा. के. रामनाथन जी द्वारा दिशा।

## इस रचना के बारे में

करीब दो दशक पहले यम. ए. परीक्षा के लिए प्रस्तुत मेरा यह लघुशोध-प्रबन्ध ‘राम चरित मानस और मोल्ल राखायण’ (तुलनात्मक अध्ययन), आज बुध जनों के समक्ष सादर समर्पित किया जा रहा है। यह तो विधि का विधान है, मैं केवल निमित्तमात्र हूँ। मित्र, सहपाठी, विद्वत्तजन और साहिती चिन्तकों की सलाह को कार्यान्वित करने का शुभ समय आ गया है।

प्रप्रथम तिरुमल तिरुपति देवस्तानम् के प्रति मैं अत्यन्त आभार हूँ, जिनके आर्थिक अनुदान से यह कार्य संपन्न हो रहा है। इस योजना के प्राणदाताओं को और किन किन शब्दों में कृतज्ञता व्यक्त करूँ। मुझे निरन्तर साहित्य चिन्तन की प्रेरणा प्रदान करनेवाले श्रद्धेय प्रोफेसर एस. टि. नरसिंहाचारी और मेरे गुरुवर सम्माननीय डा. रामनाथन जी के प्रति भी मैं अत्यन्त आभार हूँ।

मेरी कृति को पुस्तक का रूप प्रदान करनेवाले श्री सत्यसाई प्रिन्टर्स के अधिपति और उनके सहयोगियों के प्रति भी मैं आभार जिनके अथक परिश्रम के कारण ही स्वल्प व्यवधि में यह योजना कार्यान्वित हुई।

यह कृति ममतामयी स्त्री मूर्ती मेरी पून्धमाताजी श्रीमति

मीनाक्षम्मा, मेरे पिताजी साधुवर श्री कोडूर वेंकय्या और मेरे अग्रज सम्माननीय श्री के. वि. नागराजु के शुभ चरणों में सादर हूँ समर्पित है। इनके अहेतुक वात्सल्य के अभाव में, यह अकिञ्चन कहीं दिशाहीन रहा हुआ होगा।

विद्वत् पाठकों को शताधिक वन्दन

ॐ। शान्ति शान्ति शान्ति।

डा. के. नरसिंह मूर्ति (उदयभानु)



## विषयानुक्रमणिक

इस रचना के बारें में

### प्राक्कथन

1	प्रथम अध्याय	प्रस्तुत प्रबन्ध : विधि और वस्तु	1
2	द्वितीय अध्याय	कथावस्तु	48
3	तृतीय अध्याय	पात्र परिकल्पना	105
4	चतुर्थ अध्याय	भावपक्ष	187
5	पंचम अध्याय	कलापक्ष	203
6	षष्ठ अध्याय	उपसंहार	239

\*



## प्रस्तुत प्रबन्ध : विधि और वस्तु

०-१ प्रस्तावना :

तेलुगु और हिन्दी में राम साहित्य का नर्माण विभिन्न परिस्थितियों में हुआ है। आश्चर्य की बात है कि उस में वस्तु की एककेता साध साथ सांस्कृतिक अभिन्नता अभिव्यक्त होती है। इस प्रकार एवं ही विषय दो विभिन्न भाषाओं की रचनाओं में किस रूप में ढाला गया है इस का विश्लेषण करना ही प्रस्तुत प्रबन्ध का उद्देश्य है। गमचरित मानस और मोल्ल रामायण के तुलनात्मक अनुशीलन से उत्तर और दक्षिण की सांस्कृतिक एकता पर प्रकाश पड़ता है। तुलसी ने राम को परब्रह्म के रूप में ग्रहण किया तो परवर्ती कवियों ने मधुर भाव के आलंबन के रूप में। तेलुगु के रामायण के कवियों ने राम को विष्णु सभूत आदर्श राजा के रूप में ग्रहण किया।<sup>१</sup>

इस प्रकार एक ही चरित्र को लेकर जो विभिन्न चिव प्रस्तुत किये गये हैं उनके पीछे गिहित कवियों की प्रवृत्तियां, विचार-धाराएं और साधना की विविध पद्धतियों को जानना अत्यंत आवश्यक है। परिस्थितियों के प्रभाव के कारण भारतीय

<sup>१</sup> डा. गिडुगु सीतापति, तेलुगु भाषा और साहित्य, पृ. ७५

संस्कृति किन किन दिशाओं को ग्रहण करती चली इसका ज्ञान भी प्रस्तुत विषय के अध्ययन से मालूम हो सकेगा।

### ०-११ साहित्यक अध्ययन में तुलनात्मक अनुशीलन की आवश्यकता :

किसी साहित्य का अध्ययन सार्वदोषक और सार्वकालिक रूप में होना चाहिए। अध्ययन के द्वारा विषय को व्यापक धरातल पर ले जाना और अपने अनुसंधान में उच्चकोटि की वैज्ञानिकता के द्वारा सीमा बढ़ता लाना अनुसंधानाका कर्तव्य है तुलना करते समय इन चार तत्वों के प्रकाश में अध्ययन करना आवश्यक है। १) समता २) अभेद ३) पार्थक्य और ४) विषमता। ज्ञान देश और काल में व्याप्त होता है। इन दोनों में से किसी दिशा को चुनकर उसके द्वारा अध्ययन कर सकते हैं। इस प्रकार तुलनात्मक अध्ययन दो प्रकार है। १) जिन तथ्यों को हम मानते हैं उनके सादृश्य समानांतर तथ्य जो उसी काल में विभिन्न भूभागों में मिलते हैं उनको आधार मानकर समसामयिक तथ्यों की तुलना की जा सकती है। २) कालों के सादृश्य तत्वों में भी प्रस्तुत तथ्यों की तुलना की जा सकती है।

अनुसंधान अपनी दृष्टि को गहराई में स्थित काव्य की अंतरात्मा की ओर ले जाने का प्रयत्न करता है। इस प्रकार

वह काव्य का ठीक ठीक मूल्यांकन कर सकता है। विषय के तुलनात्मक अध्ययन से ज्ञान की वृद्धि भी संभव है।

साहित्य का आधार भाव है। किसी कृति में अन्तर्निहित भाव को देश, काल, जाति, भाषा आदि संकीर्ण क्षेत्रों में बांध लेना उनके महत्व को कस करना है। इस तरह की प्रवृत्ति अवैज्ञानिक मानी जाती है। इस जिस प्रकार भाव विश्व व्यापी है उसी प्रकार भावात्रित साहित्य भी विश्व व्यापी है। इस विश्व व्यापी साहित्य की भाषा, काल आदि संकीर्णताओं से मुक्त करके उसका अध्ययन करना चाहिए। इस दृष्टि से देखा जाय तो तुलनात्मक अध्ययन की आदर्श लक्ष्य-सिद्धि संभव होती है।

तुलनात्मक अध्ययन की इन विशेषताओं से प्रभावित हो कर बड़े से बड़े विद्वान् का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। देश विदेशों में साहित्य, दर्शन, इतिहास, कलाएं आदि क्षेत्रों में तुलनात्मक अध्ययन को मान्यता मिलने लगा है।

#### ०-१२ भौगोलिक परिस्थितियाँ :

आनन्द देश के उत्तर में उडीसा और मध्य प्रदेश, पश्चिम में महाराष्ट्र और कर्णाटक प्रदेश, दक्षिण में मद्रास और पूर्व में बंगाल की खाड़ी स्थित है। तमिल से तेलुगु की समानता को देखकर ग्रिडुगु सीतापति जी, कोराड रामकृष्णय्या जी आदि

विद्वान् तेलुगु भाषा को द्रविड़ भाषा मानते हैं। नारायणराव जी के अनुसार तेलुगु प्राकृत जनित आर्य भाषा है और वेंकटा चलम् भी आन्ध्र जाति को आर्य जाति ही मानते हैं।<sup>१</sup> वैदिक युग से लेकर अब तक भारत एक ही संस्कृति से संपन्न भूभाग है इस विशाल क्षेत्र का संस्कृति वेदों, उपनिषदों और उस समय संस्कृत में उपलब्ध सारे साहित्य में पायी जाती है। उत्तर और दक्षिण में तथा पूर्व और पश्चिम में संस्कृत साहित्य की भाषा थी। साधारण जनता बोलचाल में प्राकृत भाषाओं का व्यवहार करती थी। चतुर्थ वर्ग फलप्राप्ति को प्रतिपादन करनेवाले श्रुति, स्मृति, पुराण और काव्यों में प्रतिपादित कर्मकाण्ड के अनुसार ही जनता अपनी प्रादेशिक संस्कृति की रक्षा करती थी। इस प्रकार पुराने जमाने से ही हमारी संस्कृति की रक्षा होती थी। महर्षियों जैसे भरद्वाज, अंगीरस, हरीति आदि के वंशज भारत के उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम सभी दिशाओं में फैले हुए थे और आज भी हैं। प्राकृत और अपध्यांश भाषाओं के द्वारा संस्कृति की अभिव्यक्ति होती रही। धीरे धीरे देशी भाषाएँ भी अपनी कालगत विशेषताओं के साथ विकसित हुईं। मुसलमानों के आक्रमण के पश्चात फारसी और देशी भाषाओं की प्रधानता बढ़ने लगी। मुसलमानों की भाषा भारतीय संस्कृति को प्रतिबिबित करने में असमर्थ रही। इसी लिए देशी भाषाओं में साहित्य का निर्माण होने लगा। संस्कृत भाषा में भी संस्कृति का चिन्हण था। उसी संस्कृति का रूप हमें देशी भाषाओं

---

१ को. वेंकटाचलम्, आन्ध्र लेवर? पृ. ५८

में मिलता है। संस्कृत भाषा की व्यापकता के अभाव के कारण वह अपने प्रान्त में ही सीमा बढ़ ही गयी थी। बाद से अंग्रेजी शासन भारत में जप गया और फारसी का स्थान अंग्रेजी ले ली। अंग्रेज विद्वानों ने अपने विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण के द्वारा भारतीय संस्कृति का महत्व आंकड़े का प्रयत्न किया। साथ ही विभिन्न प्रदेशों के बीच गहरी खाई खोद डाली। उनको ही कूट नीति ने उत्तर और दक्षिण भारत के बीच आर्य और द्राविड भाव की दीवार खड़ा करने की चेष्टा की। वेद और उपनिषद के समय में आर्य और द्राविड संभवतः रहे हो। लेकिन अंग्रेजों के आक्रमण के बहुत पहले ही दोनों वर्ग मिल गये थे। अंग्रेजों की इस कूटनीति को भारतीय इतिहासकारों ने निर्विरोध मान लिया है। किन्तु आज उत्तर और दक्षिण भारत में जाति गत कोई अंतर नहीं रह गया है। दक्षिण में भी वेदों और उपनिषदों का अध्ययन किया जाता है। इतना ही नहीं विवाह, मृत्यु आदि के समय पर किये जाने वाले संस्कार और उस समय पढ़े जानेवाले मंत्र, त्रिकाल संध्या, नैमित्तिक कर्म, वर्ण व्यवस्था आदि अनेक बातों में उत्तर और दक्षिण भारत में सांस्कृतिक एकता विद्यमान है। उत्तर भारत के लोग दक्षिण के कांची, रामेश्वर आदि तीर्थस्थानों की यात्रा से ही अपने जीवन की सार्थकता मानते हैं। दक्षिण के लोग भी काशी, गया को पवित्र क्षेत्र मानते हैं और पितरों

की मोक्ष प्राप्ति के लिए पिंड प्रदान करना आवश्यक समझते हैं।<sup>1</sup>

भारतीय संस्कृति से संबन्धित अंग्रेजी ग्रंथ जो अंग्रेजों और भारतीयों के द्वारा लिखे गये ये अधिकांश जनता के लिए अबोध रहे। इस तरह सर्व जन सुलभ भाषा के माध्यम के अभाव के कारण भारत की मूलभूत एकता को समझाने में जनता असमर्थ हो गयी। हमारी संस्कृति पर आक्रमणकारी विदेशियों की संस्कृति का प्रभाव पड़ा। प्रत्येक प्रांत के लोग अपने को अन्यों से अधिक संस्कृत, अपनी भाषा को सर्वाधिक साहित्य से संपन्न और अपनी भूमि को अधिक समृद्ध समझने लगे। और दूसरों के प्रति अवहेलना व्यक्त करने लगे। यह प्रवृत्ति भारत की एकता में बाधा डालती है।

आजादि की प्राप्ति के बाद आसेनु हिमाचल एक संविधान और झंडे के नीचे आया है। भारत में आचार गत विभिन्नता है लेकिन उसमें भावात्मक एकता है। इस बात की जन जन को भली भाँति अवगत कराना और अपने ज्ञान और सहानुभूति की परिधि को विस्तार करना अत्यंत आवश्यक है। इसी आवश्यकता को मन में रखकर भारतीय संसदने अधिकांश जनता से व्यवहृत सुबोध हिन्दी को भारत की सांस्कृतिक एकता

1 अयोध्या मधुरा माया काशी कांची अवंतिका।

पुरी द्वारकावतीश्वर सप्तौता मोक्ष दायिका ॥

स्थापित करने का गुरुतर भार सौंप दिया है। हिन्दी के द्वारा ही अन्तर्राष्ट्रीय रंगमंच पर भारत का प्रतिनिधित्व सिद्ध करना हिन्दी भाषा का लक्ष्य माना गया है। वाल्मीकि रामायण की प्रेरणा से तेलुगु, तमिल, कन्नड और मलयालम में अनेक राम काव्य के रचे गये। मोल्ल रामायण और रामचरित मानस के तुलनात्मक अनुशीलन के द्वारा यह स्पष्ट होता है कि राम के आदर्श चरित्र ने हिन्दी और तेलुगु साहित्यों को लगभग समान रूप से प्रभावित किया है।

#### ०-२ काल निर्धारण : कवि और काव्य रूप

हिन्दी में स्वामी रामानंद, गोस्वामी तुलसीदास, केशवदास अग्रदास, सूरदास, गुरुगोविंद सिंह, नामादास, प्राणचंद चौहान आदि ने राम काव्यों की रचना की। उनमें विविध काव्य रूप और छंदों का प्रयोग हुआ है। तेलुगु में राम साहित्य १३ वीं शताब्दि के उत्तरार्थ में पाया जाता है। तिकना के निर्वचनोत्तर रामायण के पश्चात रंगनाथ, भास्कर, कोरवि सत्यनारायण, एर्ना, मोल्ल, अन्नमाचारि, रामभद्रुहु, रघुनाथ नाथक आदि अनेक कवियों ने राम साहित्य का प्रणयन विविध काव्यरूपों और छंदों में किया है। आनंद का राम साहित्य इतने विस्तार से रचा हुआ है कि इस में तेलुगु देश की संस्कृति और सभ्मता का प्रतिबिंब है।

लगभग समस्त भाषाओं की रामकथा का मूल स्रोत

वाल्मीकि रामायण है। डा. कामिल बुल्के ने अपनी 'रामकथा' में इसका निरूपण किया है।<sup>१</sup> वैदिक साहित्य में इक्ष्वाकु, दशरथ सीता, जनक आदि के नाम आते हैं, पर वास्तव में उन पात्रों का रामायण की कथा से कोई संबन्ध नहीं है।<sup>२</sup> वाल्मीकि रामायण के आधार कहे जानेवाले ग्रंथ भी वास्तव में वाल्मीकि राम कथा से नितांत भिन्न है। महाभारत के द्वोण शांति पर्व के संक्षिप्त रामचरित तथा अन्य निर्देशों से आभास होता है कि वाल्मीकि के पहले ही रामकथा संबन्धी आख्यान प्रचलित था। और कुछ आलोचक उनको वाल्मीकि का स्रोत मानते हैं। लेकिन वे आज अप्राप्य हैं। वाल्मीकि रामायण के नारद-वाल्मीकि संवाद से पता चलता है कि वाल्मीकि राम के सम-कालीन थे। और उनके जीवन काल में रामायण की रचना हुई थी। अन्त में यह कह सकते हैं कि वाल्मीकि रामायण की रामसाहित्य में संबन्धित प्राचीनतम रचना है जिसके आधार पर आगे चलकर संस्कृत में विस्तृत राम साहित्य रचा गया उन रचनाओं में कवियों की मौलिक प्रतिभा का दर्शन होता है। तूलसीदासकृत मानस और आतुकूरि मोल्ल कृत मोल्ल रामायण का मूल स्रोत भी यही वाल्मीकि रामायण है। उसी के माध्यम से वे उन दोनों युगीन परिस्थितियों का चित्रण करके अपनी मौलिक प्रतिमा का प्रस्फुटन किया है।

१ डा. कामिल बुल्के, रामकथा और उसका विकास, पृ. १०२

२ वही, पृ. २७, ३०

१०-३ निष्कर्ष :

यथपि भारतीय संस्कृति और जीवन में आध्यात्मकता की प्रथानता है, फिर भी उसके साथ भौतिकता का समन्वय भी है। आध्यात्मकता भारतीय संस्कृति की विशेषता है जो उसके साहित्य, अनन्य ललित कलाओं में आदि सभी में दृष्टिगोचर होती है। संस्कृत भाषा के माध्यम से यह संस्कृति देश भाषाओं में भी व्याप्त हो गयी है। भगवान की पूजा में भी भारत के विभिन्न नदियों के जल का आवहन किया जाता है। 'गंगेच यमुनेचैव, गोदावरी, सरस्वती, नर्मदे सिंधु कावेरी जलोस्मिन् सन्निधि कुरु।' इन सब बातों से भारतीय संस्कृति की एकता का स्पष्टीकरण होता है। भारत के विभिन्न प्रान्तवासी आज एक दूसरे को अजनबी समझकर अन्य भाषाओं के उस साहित्य से अनभिज्ञ हो जाते हैं जिसमें सांस्कृतिक एकता प्रतिबिंबित है। वास्तव में उत्तर और दक्षिण भारत की एकता का दिग्दर्शन करनेकाले ग्रंथ पर्याप्त संख्या में नहीं हैं। दक्षिण और उत्तर को निकट लाकर एक दूसरे का सम्यक् परिचय देनेवाली सरल सामान्य भाषा का अभाव इस द्यन्नीयः स्थिति का कारण है। इस समूचे कार्य को अंग्रेजी पूरा नहीं कर पाती। आज हिन्दी ही एक ऐसी भाषा है जिसके द्वारा भारत के कोने कोने की साहित्यक और सांस्कृतिक विशेषताओं को व्यक्त कर सकते हैं। इस के माध्यम से भारत का सही चित्र उपस्थित कर सकते हैं। रामकथा का संबन्धी तुलनात्मक अनुसंधान हिन्दी के माध्यम से

करने में लेखक का यही उद्देश्य है। इस प्रकार के कार्यों के द्वारा यह आशा की जा सकती है कि भारतवासी एक दूसरे के निकट आयेगे और सांस्कृतिक एकता की धारा को पहचानेंगे

०-४ हिन्दी रामकाव्य परंपरा और मानस का स्थान :

०-४१ प्रस्तावना :

हिन्दी साहित्य में रामकथा को लोक प्रियता अनादि काल से हैं। संत कवियों ने राम का नाम लेकर ही निर्गुण साधना का प्रचार किया है। राम साहित्य भक्ति काल तक ही सीमित न रहा रीतिकाल में दरिया साहेब ने, ज्ञान रत्न ते<sup>१</sup> तथा तुलसी साहेब ने घटरामायण<sup>२</sup> में निर्गुणवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हिन्दी साहित्य के आदिकाल में रामानंद ने उत्तर भारत में जन साधारण की भाषा में राम भक्ति का प्रचार किया। उस साहित्य की चार प्रवृत्तियाँ हैं तुलसी का एकाधिपत्य, लोक संग्रही दास्य भक्ति का प्राधान्य, कृष्ण काव्य का प्रभाव, विविध रचना शैलियों, छंदों और साहित्यक भाषाओं का प्रयोग।

हिन्दी राम साहित्य में रामचरित मानस का एक विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण स्थान है। परवर्ती रामकाव्य मानस के प्रकाश

१ हिन्दी साहित्य कौश, भाग १ पृ. १७३

२ वही, पृ. १७५

में निष्प्रभ हो जाते हैं। तुलसी ने मर्यादा पुरुषात्म राम की गुणगाथा गाते हुए रामानंद द्वारा निरूपित लोक संग्रही सगुण दास्य भक्ति को प्रतिपादित किया है। तुलसी के द्वारा प्रतिपादित दास्य भक्ति इतनी लोकप्रिय सिद्ध हुई कि परवर्ती राम की मधुरोपना विकास मात्र मानी जाती है। भक्ति काल में ही अग्रदास के अष्टायाम में राम की रामकीड़ा का वर्णन है। इस मधुरोपना में शृंगार भाव रातिकाल या सखी सांप्रदाय के शृंगार से भी अधिक हो गया था। दूसरे शब्दों में शाखा में विछूंखल रूप से शृंगार और विलासता का चित्रण होने लगा। जिससे कि उसमें अश्लीलता का भी प्रवेश अधिक मात्रा में हो गया। उसकाल के अनेक गम काव्यों में राम और सीता साधारण नायक-नायिका बनकर शृंगारपूर्ण चेष्टाएं करती दिखाई देती है। अंत में यह कह सकते हैं कि रचना शैलियों छंदों और साहित्यक भाषाओं की अधिक विविधता भी इन काव्यों में पायी जाती है। प्रबन्ध काव्य का प्राधान्य रहते हुए ए भी हिन्दी राम साहित्य का मुक्तक काव्य नगण्य नहीं है। हिन्दी के प्रारंभिक नाटक साहित्य में भी राम साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है। खड़ीबोली गद्य निर्माण में भी उसका विशिष्ट सहयोग है।

#### ०-४२ तुलसी के पूर्व राम साहित्य :

तुलसी के पूर्व राम-साहित्य अत्यंत विकसित नहीं है।

रामानंद के कुछ भक्ति परक पद सुरक्षित है। सुर सागर में भी रामकथा के मार्मिक स्थलों पर पचास पदों की रचना की गयी है। पृथ्वीराज रासो९ के द्वितीय समय में दशावतार कथा के अंतर्गत रामकथा के विषय के सौ छंद मिलते हैं। ईश्वर दास की रचना में मानस का पूर्वामास मिलता है। भरत-मिलाप में अर्योध्याकांड की कथा वस्त्र दोहा-चौपाई छंदों में वर्णित है। ईश्वरदास कृत रामजन्म, अंगद फौज भी सुरक्षित है। वे एक विस्तार ग्रंथ के अंश हैं।

#### ०-४३ तुलसी के समकालीन राम साहित्य :

तुलसी के समकालीन अग्रदास और उनके शिष्य नाभादास ने रामभक्ति साहित्य की रचना की। अग्रदास की पदवाली ध्वनि मंजरी में नामादास कृत रामचरित के पदों में मंफी हुई भाषा के भक्ति पूर्ण पद मिलते हैं। दौनों ने अष्टयाम नामक ग्रंथों की रचना की है।

अ) तुलसी के समकालीन मुनिलाल नामक कवि १५८५ में 'राम प्रकाश' की रचना की है।

आ) रामचन्द्रिका : आचार्य केशवदास कृत रचना है। इस में रोति कालीन साहित्य की प्रवृत्तियां दिखाई पड़ती है।

<sup>१</sup> श्रीनिवास विहार विवेदी, मैथिली शरण अभिनंदन पत्रिका,  
पृ. ११३

इ) आदि रामायण : १७ वों शती के आरंभ में मेहर-बान से लिखा गई है। काव्य गद्यात्मक और भाषा हिन्दी मिश्रित पंजाबी है।

ई) इसी समय में रामानन्द का 'लक्ष्मणाय' और माधौ-दास कृत 'रामरासो' उल्लेखनीय रचनाएं मानी जाती हैं।

०-४३ तुलसी की परवर्ती रामकाव्य परम्परा :

१९३८ में रामललज पाण्डेय कृत 'हनुमच्चरित्र' उल्लेखनीय रचना है। जैमिनि रामकथा के अनुसार चरित्र चित्रण किया गया है। लालदास कृत 'अवधि विलास' सेनापति कृत 'कवित रत्नाकर, नरहरिदास कृति' 'अवतार चरित' इस कोटि के अंतर्गत आती है।

तुलसी ने मानस में काव्य सौंदर्य, भक्ति और लोक संग्रह का अपूर्व समन्वय किया है। कथा प्रवाह, धार्मिक स्थलों की पहचान, मर्यादित श्रृंगार, पत्रानुकूल भाषा, चरित्र चित्रण आदि की दृष्टि से मानस सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। उपास्य राम का शील, संकोंच और सहृदयता मनुष्य मान्त्र को आकर्षित करने में समर्थ है। वे लोक संग्रह का अधिक ध्यान रखते थे। वे पारिवारिक तथा सामाजिक कर्तव्यों और आदर्शों का इतना प्रभाव शाल्मी चित्रण प्रस्तुत करते हैं कि महात्मा युद्ध के बाद वे ही सबसे बड़े लोकनायक हैं।<sup>१</sup> महात्मा बुद्ध और वाल्मीकि

<sup>१</sup> प. रामभद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ. ८

के सम्मिलित व्यक्तित्व से युक्त तुलसी उत्तर भारतवासियों के लिए बहुत ही आंराधनीय हुए।

#### ०-५ रीतिकालीन राम साहित्य :

रीतिकाल का राम साहित्य महत्कपूर्ण न होने पर भी भक्ति काल तथा आधुनिक काल तथा आधुनिक काल की अपेक्षा अधिक विस्तृत है। संस्कृत की व्यापकता प्रसिद्ध संस्कृत रामकाव्यों के पद्मानुवाद, हनुमान विषयक रचनाओं का बाहुल्य प्रारंभिक नाटक तथा गद्य साहित्य में रामकथा का प्रणयन आदि रीतिकालीन राम साहित्य की प्रमुख विशेषताएं हैं। १७ वीं शतों के उत्तरार्थ में भूपति कृत रामचरित रामायण? उल्लेखनीय रचना है। दोहा-चौपाइयों के द्वारा इस में रामकथा वर्णित है। १६७९ में गोविन्द सिंह कृत गोविंदरामायण<sup>१</sup> सुखदेव भिन्न कृत दशरथ राय, केशव कवि कृत बाली चरित, रामदास कृत श्रीरामायण, पद्माकर कृत रामरसायन, मैथिल कवि शिवदत कृत सीता हरण उल्लेखनीय हैं।

#### ०-५१ कृष्ण साहित्य से प्रभावित राम साहित्य :

कुछ कवियों के ग्रंथ यथापि राम कथा से संबन्धित हैं, फिर भी उस पर कृष्ण साहित्य की गहरी छाप है।<sup>२</sup>

१ हिन्दी साहित्य कौश, भाग १, पृ. १७५

२ हिन्दी अरुशीलन, धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक, पृ. ५००।

रामप्रियशरण कृत सीतायन, शिवनाथ सिंह कृत रामायण, रामरणदास कृत कवितावली रामायण, रामरहस्य, कौगचेरु रहस्य, जनकदास कृत सत्योपाख्यान, प्रतापसिंह कृत जुगल नखशिख, रामनाथ प्रधान कृत राम कलेवा रहस्य, राम होरो, भगवानिदास श्रीराम रहस्य उल्लेखनीय है। विश्वनाथसिंह,<sup>१</sup> केशव कवि, भगवतराय खोची, मनियार सिंह आदि ने हनुमद् भक्ति परक रचनाएं की है। हिन्दी गद्य में राम कथा का गौरवनीय स्थान है। भक्तिमाल में नाभादास ने एक अष्टायाम ब्रजभाषा गद्य में लिखा था।<sup>१</sup> सोढ़ी मेहबान की आदिरामायण भी गद्यात्मक है। खड़ी बोली गद्य के प्रमुख कवि रामप्रसाद निरंजनी कृत भाषा—योगवाशिष्ट (१७४१), दांलतराम का पद्मपुराण (१७६१), सदल मित्र का रायचरित (१८०७) है।

#### ०-६ आधुनिक काल:

यह काल गद्यकाल होने पर भी रामसाहित्य काव्य रूप में अधिक प्रचलित है। सुधाकर द्विवेदी कृत रामकहानी, प्रेमचन्द की रामचर्चा, अक्षयकुमार जैन कृत 'युग पुरुष राम', छोटी का मैथिली में विरचित 'सीता वनवास' और उनका उपन्यास उल्लेखनीय है। भारतेंदु से लेकर आधुनिक काल तक राम विषयक मुक्तकाव्य के अतिरिक्त पुरानी धारा के प्रबन्ध काव्य अपेक्षाकृत महत्वपूर्ण हैं। रसिक बिहारी कृत राम

<sup>१</sup> हिन्दी साहित्य कोष, पृ. १७६

रसायन, रघुनाथदास कृत विश्राम सागर, रघुराम सिंह 'राम स्वयंवर', बगेली कुवारी कृत अवधि विलास, बलदेव प्रसाद मिश्र कृत कोसल किशोर, शिव रत्न शुक्ल विरस कृत श्रीरामावतार रामनाथ ज्योतिषी कृत श्रीरामचन्द्रोदय उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। १९२० के बाद खड़ी बोली नाम काव्य अपेक्षा कृत समृद्ध है। निराला कृत रामकी शक्ति पूजा<sup>१</sup>, प्रदक्षिण और पंचवटी आदि छोटी रचनाओं के अतिरिक्त महाकाव्य भी रचे गये हैं। रामचरित उपाध्याय कृत रामचरित चिन्तामणी, भैथिलीशरण गुप्त कृत साकेत, अयोध्यासिंह उपाध्याय कृत वैदेही वनवास, बलदेव प्रसाद मिश्रकृत साकेत सत, केदारनाथ प्रसाद कृत कैकेयी, बालकृष्ण नवीनकृत ऊर्मिला, प्रसिद्ध रचनाएँ सानी जाती उपर्युक्त रचनाओं में तीन प्रमुख विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं— १) वुद्धिवादी दृष्टिकोण के कारण अवतारवाद को कम महत्व दिया गया है। राम आदि पत्रों को मानव के रूप में चित्रित किया गया है। २) भक्तिकाल की धार्मिक भावना तथा रीतिकालीन शृंगारि कता के स्थान पर नवीन सामाजिक तथा राजनैतिक आदर्शों को प्रमुख स्थान मिला है। ३) परन्तरी रामकाव्य के उपेक्षित पात्रों को नायिका-नायक बनाने की प्रवृत्ति उदाहरणार्थ ऊर्मिला, कैकेई, साकेत सत आदि।

०-७९२ रामकाव्य की परम्परा में मानस स्थान

मानस को हिन्दी रामकाव्य परपरा में एक महत्वपूर्ण

<sup>१</sup> हिन्दौ माहित्य कोष, पृ. १७७

स्थान है। यदि तुलसी के मानस की रचना न हुई होती तो प्रबन्ध काव्य के क्षेत्र में एक पब-बड़ा अभाव बना रहता। मानस केवल रघुनाथ गाथा ही नहीं वह सारे मानव जीवन का काव्य है। उसके अंतर्गत जीवन के प्रायः सभी पक्षा आ गये हैं। प्रेम, धर्म, अर्थ व्यवस्था, राजनीति, लोकनीति, समाज विधान, शिक्षा क्ला आदि सभी पक्षों पर प्रकाश डासा गया है। मानस एक महाकाव्य ही नहीं, प्रस्तुत एक समय का इतिहास, एक जीवन की पूरी व्यवस्था, एक काव्य परंपरा की पूर्णाभिव्यक्ति है। तुलसी की रचना में मूलतः वैयक्तिकता की छाप है। तुलसी की यह रचना भावना, चिंतन और वैयक्तिक आचरण के समन्वय से विनिर्मित समर्थ अभिष्यक्ति की दृष्टि से आज तक के हिन्दी काव्य में सम्मान्य है। इसी काव्य परंपरा के अंतर्गत जानेवाले अन्य कवियों का महत्व मानस के सामने फीका रह जाता है। इस लिए इस हिन्दी रामकाव्य परंपरा में रामचरित मानस के एका विशेष स्थान है।

#### ०-७ तेलुगु रामकाव्य परंपरा में मोल्ल रामायण का स्थान :

कथा वस्तु की दृष्टि से तेलुगु रामायणों की वस्तु वही है जो वाल्मीकि रामायण की है, यथ्यपि उसकी प्रस्तुतीकरण में कवियों की मौलिकता प्रस्फुट हुई है। वाल्मीकि और आलोच्य काल के तेलुगु रामायण के कवियों के दृष्टिकोण में बहुत समाझ

नता है, तथापि तेलुगु कवियों ने भक्ति का अंश वाल्मीकि की अपेक्षा थोड़ा अधिक समाविष्ट किया है।<sup>१</sup> वैदिक धर्म के पुनरुद्धार के लिए महाभारत का तेलुगु में रूपांतर हुआ। और शैव सांप्रदाय के प्रचार के लिए वोर शैव वाड-मय और वैष्णव धर्म की स्थापना के लिए आमुक्त माल्यदा का आविर्भाव हुआ था। लेकिन रामायण के मूस में इस प्रकार की धार्मिक प्रेरणा प्रायः नहीं रही। राम कथा को कवियों ने विभिन्न काव्य रूपों के द्वारा प्रस्तुत किया है।

#### ०-७१ विपुल काव्य परंपरा :

क) भास्कर रामायण : यह तेलुगु का अत्यंत प्राचीन रामायण और विपुल काव्य परंपरा में अत्यंत प्रथम है। कहा जाता है कि इस रामायण का प्रणयन जार कवियों द्वारा हुआ था। उनमें भास्कर कवि अत्यंत प्रमुख होने के कारण उन्होंके नाम से यह प्रसिद्ध है।<sup>२</sup> भव्य कविता शिल्प और वृत्त विन्यास का कौशल इस काव्य में देखे जा सकते हैं।

ख) एर्नन रामायण : एर्रा प्रगोड से विरचित इस काव्य में अधिक भाग नष्ट हो गया है। लेकिन भास्कर रामायण में इस रामायण के कुछ छंद पाये जाते हैं।

ग) गोपीनाथ रामायण : भास्कर रामायण के बाद

<sup>१</sup> आनन्द विज्ञान सर्वास्तु, : तेलुगु संकृति, पृ. १४१

<sup>२</sup> कंदुकूरि वीरेश लिंगम् पंतुलू, आनन्द कबूल चरित्र, पृ. १४

गोपीनाथ कृत एक रामायण प्रसिद्ध माना जाता है। यह काव्य वाल्मीकि रामायण का रूपांतर है। वाल्मीकि रामायण की कवियों को गोपीनाथ ने इस काव्य में आने नहीं दिया। इस में तत्सम शब्दों की बहुलता है। इस में कवि ने अपनी मौलिकता का प्रदर्शन किया है।

घ) यथा वाल्मीकि रामायण : काव्य कर्ता घनगिरि रामकवि है। परन्तु बाल काण्ड के कुछ अंशों को छोड़कर शेष सब अनुपलब्ध है।

च) आन्ध्र वाल्मीकि रामायण : इस काव्य के कर्ता वाविलि कोलनु सुब्बाराव है। रचना का समय १९००-१९०८ है। यह परिकर, परिकराकुर आदि अलंकारों से संपन्न है। वाल्मीकि रामायण में जो बीजाक्षर हैं, उनका भी उल्लेख इस रामायण में है। इस में तेलुगु और संस्कृत के शब्द समान रूप से प्रयुक्त हैं।

छ) घनसार रामायण : जतर्मचि शेषाद्रि शर्मा।

ज) श्रीमद्रामायण कल्प वृक्षमु : बिश्वनाथ सत्य नारायण।<sup>१</sup>

०-७२ संक्षिप्त काव्य परंपरा :

क) रामाभ्युदयमु : कर्ता अय्यलराजु रामभद्र कवि हैं।

<sup>१</sup> डा. दिवाकर्ल वेंकटावधानि, आन्द्र वाड-मय चरित्र सग्रहम्, पृ. ११४

उनका समय १५९०-१५८० और रचना काल १५५०। इस काव्य के कृतिभर्ता गोबूरि नरसराजु है। यह एक प्रौढ़ काव्य है। उत्तर काण्ड की कथा इस में नहीं है।

ब) मोम्ल रामायणम् : इन का समय १५२५ के आस पास का था। और वे श्रोकृष्णदेव राय के समकालीन मानी जाती थीं।<sup>१</sup> काव्य में शब्दालंकर, चंपकमाला, उत्पलमाला, कंद और सीस छंदों की बहुलता है।

ग) रघुनाथ रामायणम् : इस काव्य के कर्ता रघुनाथ नायक हैं। काव्य लघु होने पर भी इसमें मौलिकता है। इसके द्वारा तत्कालीन सामाजिक और आर्धिक परिस्थितियों पर प्रभाव पड़ता है।<sup>२</sup> कृष्णशृंग चरित में शृंगार और हस्था रस का पोषण हुआ है।

इन के अतिरिक्त अनंत राजु जन्नय। चित्रकवि वेंकट्रमण कवि, मिक्किलि मल्लिकार्जुनुडु आदि कवियों ने लघु रामायणों की रचना की। जन्नय कृत रामकथामिरामम् और मल्लिकार्जुन कृत रामचन्द्रोपाख्यानम् प्रसिद्ध ग्रंथ हैं।

#### ०-७३ वर्णनात्मक प्रबन्ध काव्य परंपरा :

इन वाव्यों में कथावस्तु, प्रबन्धपटुता आदि की मौलिकता पायी जाता है।

<sup>१</sup> श्रीमति ऊँकूरि लक्ष्मीकांतम्मा, आन्द्र कवयितुलु, पृ. १२०

<sup>२</sup> श्री. यस. वी. जोगाराव, आन्द्र यज्ञगान वाठ. मय चरित्र, पृ. १२५.

अ) पट्टाभिराम विलासमुः : शैव ब्राह्मण नागलिंग कवि इसके कर्ता है। राम अयोध्या को लौटते समय हनुमान के मुह से विनुकोंडा और कोंडवीडु का वर्णन कराकर कवि ने राम की प्रशस्ति को बढ़ाया है। काव्य में यमक और अनुप्रास अलंकार है।

आ) रामचन्द्रोपाख्यानमुः : इस काव्य के कर्ता वारणासि वेकटेश्वरलु है।

गौण रचनाओं में दाशरथि प्रबंधमु, चेरकुमूडि कृष्णकवि कृत शृंगार राघवमु, भावन कवि कृत परशुराम विजयमु, गंटि सिगराचार्य कृत दशरथ नंदन चरितमु, उप्पलराजु कृत सीता चरितमु। नंदूरि बाप मंत्री कृत रामचरित्रमु, चेन्न कृष्णर्थ कृत संख्या रामायणमु, एनुगु लक्ष्मण कवि कृत रामविलासमु, प्रगड सूर्य प्रकाश कवि कृत सीताराम विलासमु, आदि।

०-७४ मंसल काव्य परंपरा :

इस परंपरा में सीता राम के विवाह तक का इतिवृत्त लिया गया है।

१-सीता कल्याणमु<sup>१</sup>: इस में चार आवश्यक हैं और कर्ता पिछुपर्ति बसवप्प कवि।

२ जानकी-राघवमु : इस काव्य के कर्ता बेतंपूडि कृष्णर्थ हैं और कृति भर्ता मडप नारप्प हैं।

<sup>१</sup> के वेंकटनारायण राव, आन्द्र वाङ्मय चरित्र संग्रह, पृ. २३४

३ जानकी परिणयमुः कर्ता कूचिमंचि जग्गाकवि ।

४ सीता कल्याणमुः कर्ता मरिणाटि सिंगराचार्युलु ।

०-७५ द्विपद काव्य परंपरा :-

१ रंगनाथ रामायणमुः इस काव्य के कर्ता के संबन्ध में विभिन्न मत हैं। कुछ लोग रंगनाथ मानते हैं और कुछ आलोचकों के अनुसार इस के कर्ता गोन बुद्धा रेहु द्वितीय हैं। ग्रंथ के शारंभ और हरएक काण्ड के अंत की पुष्पिका में लिखा हुआ है कि गोनबुद्ध भूपति ने अपने पिता की आज्ञा से उनके नाम पर इस रामायण की रचना की। पिंगलि लक्ष्मी कांतमु जी ने काव्य के अंत की पुष्पिका के आधार पर इसे गोन बुद्धा रेहु कहा ही माना है। उनके पिता का नाम पांडुरंग विट्ठलनाथ है। और पांडु और विट्ठल को छोड़कर रंग तथा नाथ को अपने नाम के रूप में ग्रहण किये होंगे। शिष्टा राम-कृष्ण शास्त्री के अनुसार कर्ता के नाम से काव्य का नाम प्रसिद्ध होता है। अतः काव्य कर्ता रंगनाथ ही हो सकते हैं। रामायण को पूर्ण रूप से सुनकर बुद्धराजु ने इसे अपनेर नाम से लिखवाये हों। इसलिए काण्डांत के गद्यों में इनका नाम आया है। इस तरह हम कह सकते हैं कि इस काव्य के कर्ता रंगनाथ थे और गोनबुद्धा रेहु नहीं।

१ मल्लपल्लि सोमशेखर शर्मा, रंगनाथ रामायण की पीठिका,

२ द्विपद रामायण : इस काव्य के कर्ता कट्टा वरदराजु हैं।<sup>१</sup> इन का समय १६००—१६५० है। वाल्मीकि रामायण का अनुवाद होने पर भी यह एक मौलिक रचना है। इसमें कुछ अवाल्मीकि घटनाएं भी हैं। राम के अवतार प्रसंग में भास्कर रामायण का प्रभाव है। सीता-राम और लक्ष्मण का संवाद रस युक्त हैं।

३ ताल्लपाक अन्नमाचार्युलु जी ने १५०३ में द्विपद रामायण की रचना की थी। उसका कुछ अंश रामकथा के नाम में तंजाऊँ पुस्तक भांडार में रखा गया है।

४ भोसल एकोजी : १७३५ में इन्होंने रामयण द्विपद छंद में लिखा है। उनके पिता की इस काव्य के कृति भर्ता थे।

५ तरिगोंड वेंकमांवा ने द्विपद छंद में वाशिष्ठ रामायण की रचना की थी।

#### ०-७६ श्लेष काव्य परंपरा :

इस काव्य के हर एक छंद से दो अर्थ निकल सकते हैं। पूरे काव्य में इस प्रथा का अनुसरण हुआ है। पिंगलि सूरन कृत राघव पांडवीयमु अचलात्मजा परिणयमु, और यादव-राघव-पांडवीयमु उल्लेखनीय रचनाएं हैं। इनके अतिरिक्त वेंकटा-चलपति कृत रामकृष्णोपाख्यानमु और सिंगराचार्युहु कृत

<sup>१</sup> पिंगलि लक्ष्मीकांतमु, रंगनाथ रामायण पीठिका, पृ. ६

राघव-वामुदेवीयमु उल्लेखनीय है। चंपू रामायण, विचित्र रामायण, शतकण्ठ रामायण, अद्भुत रामायण आदि रूपों में भी रामायण का अवतरण हुआ है। भोज राज कृत सस्कृत चम्पु रामायण को तेलुगु में बुलुसु सीताराम कवि ने अनुवाद किया है। यह ग्रथ अभिषिक्त राघवमु नाम से भी अनूदित है। ऋग्वेदमु वेंकटाचल कवि ने भी चंपू रामायण की रचना की है।

#### ०-७७ अन्य रामायण ।

१ शतकण्ठ रामायण : इस का कथांश सीता का शतकण्ठ रावण का वध करना है। यह शतमुख रामायण और सीता-विजय नाम से भी प्रसिद्ध है। इस काव्य के कर्ता मर्द्दना है। लिगना नामक कवि ने भी इसी ग्रथ का अनुवाद किया है। सीता विजय नाम से रंगया नामक कवि ने भी इस ग्रंथ का अनुवाद किया है।

२ अद्भुत रामायण : मुडिचि कृष्णय्या से आध्यात्मा रामायण का अनुवाद किया गया है। विश्वामित्र कृत सस्कृत आध्यात्म रामायण को तेलुगु में पेहन सोमयार्जि और नागय्या-मात्युड्डु ने अलग ग्रथों के रूप में अनुवाद प्रस्तुत किसे है।

३ वाशिष्ट रामायण : वशिष्ट का राम की तत्क का उपदेश देना इस काव्य का विषय है। इस काव्य को कृष्ण गिरि वेकटरमण कवि ने तेलुगु में अनुवाद किया है।

४ रामचरित मानस सरोवरमुः : यह गोस्वामी तुलसी-दास कृत रामचरित मानस का अनुवाद है। शिष्टा कृष्णमूर्ति शास्त्री ने यह अनुवाद किया है।

५ कंब रामायण : कंबन कृत रामायण का यह स्वेच्छानुवाद है। श्रीराम चन्द्र जी लक्ष्मण के साथ राजवीथि के जाते समय सीता-राम का परस्पर विलोकन, उसके बाद उनकी अनंग दशा का वर्णन, दशरथ के श्राद्ध-कर्म वशिष्ठ शत्रूघ्न से करवाना, अगत्याश्रम से पंचवटी जाते समय सीता और राम का जटायु से बातचीत करना, रावण सीता को ले जाते समय पृथ्वी को भी उखाड़ना, रावण माया जनक की मृष्टि करके उन से सीता को दुर्नीति का उपदेश दिलवाना इस रामायण के कुछ मौलिक प्रसंग हैं। इस काव्य का अनुवादक पूतलपट्टे श्रीरामुलु रेहु है। घटु वेंकट रमण कवि ने उत्तर काण्ड की कथा को लेकर पट्टाभि रामायण नामक काव्य को मौलिक रूप से लिखा। इन के अतिरिक्त तत्व संग्रह रामायण, तारक रामायण, सहस्रकंध रामायण, दशकंठ रामायण आदि अनेक रामायण हैं।

६ उत्तर रामायण : उत्तर रामायण के कर्ता महाकवि तिक्कना हैं। इस में तिक्कना ने श्रेष्ठ क्षत्रिय और आदर्श मानव के रूप में राम का वर्णन किया तिक्कना ने जिन अशों को छोड़ा है उन्हों को लेकर जयंति रामभट्ट एकाश्वास पुराण की रचना की।

इन सब ने अधिक प्रचलित उत्तर रामायण कंकटि पाप-राजु कृत है। करुणा, शूँगार तथा अद्भुत रसों का इसमें सुन्दर पोषण हुआ है। साथ ही इसमें वर्णन की बहुलता है। कुछ छंदों से दो अर्थ भी निकल सकते हैं। सीतावनवास प्रसंग में करुण रस, रावण दिग्विजय में वीर रस, कपिल संदर्शन में भीभत्स रस, बलि की सन्निधि में हास्य, भयानक अद्भुत रसों का पोषण हुआ है।

७ रंगनाथ रामायण का उत्तर भाग : गोन बुद्धा रेहुनी के पुत्र काच भूपति और विट्ठल राजु ने इस की रचना की है। रचना का समय १३२५ है।

८ यक्षगान काव्य परंपरा : लेपाक्षि रामायण, कोम्मल-पाटि रामायण, सुन्दरकाण्ड, बौम्मलाट रामायण, आध्यात्म रामायण आदि काव्य यक्षगानों के रूप में लिखे गये हैं।

९ सत्तेनदीवि रामायणमु : इस काव्य के कर्ता का नाम अज्ञात है। इस के समस्त कीर्तन सत्तेनदीवि के हनुमान को समर्पित हैं। कीर्तनों की संख्या ५० हैं।

१० शारदा रामायण : छन्द की अंतिम पंक्ति से पता चलता है कि इस काव्य के कर्ता वेंकटेश्वर कवि हैं।

०-७८<sup>८८</sup> तेलुगु रामकाव्य परम्परा में मोल्ल रामायण का स्थान:

तेलुगु राम साहित्य का परिचय देते समय यह स्पष्ट किया

गया है कि मोल्ल रामायण संक्षिप्त काव्य परंपरा के अंतर्गत आता है। यह लघु काव्य है। इसलिए इस में महाकाव्य की विशेषताओं को ढूँढना उचित नहीं है। मोल्ल के समय में तेलुगु साहित्य में भी काव्यधाराएं समानांतर रूप से आ रही थी—मार्गी कविता और देशी कविता। देशी शब्दावलों में जन सामान्य के लिए उद्दिष्ट रचनाएँ देशी कविता है और उभय भाषा पंडितों को उद्दिष्ट संस्कृत शब्दों से युक्त प्रौढ़ रचनाएँ कविता है। मोम्लने अपनी इस रचना में दोनों काव्यधाराओं को जोड़ने का भरसक प्रयत्न किया है। इस लक्ष्य की पूर्ति में मोल्ल का यह विशेष योग दान है। पीठिका ने मोल्ला ने स्वयं उल्लेख किया है कि वह अपनी रचनाओं के द्वारा गूँगी और बहरे लोगों में भी रस संचार कराना चाहती है।<sup>१</sup> मोल्ला ने वाल्मीकि रामायण का अनुसरण करने पर भी उसका हूँ व हूँ अनुवाद नहीं किया। अपनी रुचि के अनुकूल प्रसंग आने पर उन्होंने मौलिकता का परिचय दिया। कथा संक्षिप्त रूप में होने के कारण बहुत सूक्ष्म प्रसंग छोड़ दियेगये हैं। बालकांड में मारीचु सुबाहु प्रसंग, भरत के ननिहाल जाना, भरत के अयोध्या में आगमन, सुन्दरकाण्ड में हनुमान का लंका प्रवेश करते समय लंकिणी राक्षसी का आगमन, युद्ध काण्ड में अंगद दौत्य आदि प्रसंग मोल्ल रामायण में नहीं है। इस काव्य में ऊमिला कुश ध्वज की पुत्री मानी गयी है, जब कि वाल्मीकि

रामायण में जनक की पुत्री कही गयी है। कैकेयी का वर याचन प्रसंग प्रकृति का विस्तार वर्णन देने के उपरांत अप्रत्याशित रूप से आजाता है। दशरथ का राम को युवराज बनाने का निश्चय करना और मंत्रियों को नगर अलंकृत करने की आज्ञा का उल्लेख करके काव्य परिपाठि के अनुसार रात्रि का वर्णन किया गया है। केवी दशरथ से वर मांगने का प्रसंग आन्ध्र महाभारत के रामोपाख्यान से अत्यधिक प्रभावित है। अरण्यकाण्ड में शूर्पणखा का प्रवेश वाल्मीकि रामायण के जैसा है। सुन्दर और किञ्छिकधां कांड के प्रसंग भी वाल्मीकि रामायण के समान है। रंगनाथ और भास्कर रामायणों में जो अवाल्मीकि प्रसंग हैं उनमें कालनेमि वृत्तांत, रावण का पाताल होम, अंगद की मंडोदरी के केश को पकड़कर खींचना मोल्ल रामायण में श्वशी हैं। निष्कर्ष के रूप में कह सकते हैं कि मोल्ल रामायण को संक्षिप्त काव्य परंपरा में विशिष्ट स्थान है। मोल्ल रायायण सुलभ शैली, कथन की वक्रता विशिष्ट प्रसंग योजना आदि के कारण अधिक लोक प्रिय मानी गयी है। लोकप्रियता और सरल रचना शैली की दृष्टि से मोल्ल रामायण को तेलुगु राम साहित्य परंपरा में एक विशिष्ट स्थान है।

#### ०-८ परिस्थितियाँ :

##### ०-८१ प्रास्ताविक :

कोई भी साहित्य अपने समय की विभिन्न परिस्थितियों

प्रभावित हुए बिना कदाचित् नहीं रह सकता। उभय क्षेत्रीय राम काव्यों में जो प्रवृत्तिगत साम्य एवं वैषम्य है इन के मूल कारणों की खोज तत्कालीन विभिन्न परिस्थितियों के प्रकाश में संभव है। इसी लिए यहां केवल १५ वीं और १६ वीं शताब्दियों की विभिन्न परिस्थितियों का संक्षिप्त विवरण दिया जा रहा है।

#### ०-८२ राजनैतिक परिस्थितियाँ :

उत्तर भारत में राज्य सत्ता मुसलमान राजाओं के हाथ में थी। लेकिन दक्षिण में हिन्दू राजा ही सत्ता रुढ़ थे। उत्तर में लोढ़ी वंश का हास और मुगल साम्राज्य के उदय के कारण दोनों में संघर्ष रहा।<sup>१</sup> अकबर तक आते आते, एक सुदृढ़ केन्द्रीय सत्ता भी स्थापित हो गयी। तेलुगु क्षेत्र में भहमनी राज्य को छोड़कर मुसलमान सत्ता को स्थान नहीं था। अंत में विजयनगर साम्राज्य के हाथ विजयश्री रही।<sup>२</sup>

उत्तर भारत में मुसलमान सत्ता को रोकने का प्रयत्न राजपुत वीरों ने किया। मुसलमान शासन सत्ता ने उत्तर भारत को स्थिर रूप में अपने वश में कर लिया। मुसलमानों की विजय का कारण हिन्दुओं का पांरस्परिक सांप्रदायिक विद्रोष था। विजयनगर के कुशल राजनैतिज्ञ राजा एक और अपने

<sup>१</sup> हिस्टरी ऑफ मिडीवल इंडिया पृ. २६७

<sup>२</sup> विजयनगर सेक्सेटेनरी कम्मेमोरेशन, यस. वेंकटराव, पृ. ४२

राज्य का विस्तार करते हुए दूसरी ओर हिन्दुओं में एकता की भावना लाने के लिए सतत प्रयत्नशील रहे। कृष्णदेव राय ने मुसलमानों को अपनी सेना में नियुक्त किया।

मुसलमानों का आक्रमण होने पर भी दक्षिण में मुसलमानों के प्रति हिन्दुओं ने राजनैतिक विरोध भाव ही रखा, धार्मिक नहीं। अकबर के समय के पूर्व उत्तर भारत की शासन सत्ता से हिन्दू प्रजा नितांत असंतृष्ट थी। दक्षिण में हिन्दुओं के लिए राजनैतिक विजय और उत्तर भारत में राजनैतिक पराजय था। इस प्रकार दोनों क्षेत्रों में सशक्त केन्द्रीय शासन की स्थापना के पश्चात शांतिमय वातावरण उपस्थित हो गया था। हिन्दी क्षेत्र में इसके फलस्वरूप जर्जर हिन्दू धर्म और दर्शन के सूत्रों का पुनर्नियोजन अनिवार्य हो गया। और राजनैतिक परिस्थितियों के साथ साथ ऊपरी समझौता करके संत और भक्तों की मनीषा आत्म निरीक्षण और आस्तिकता की स्थापना में लगी। इन कवियों ने राजनैतिक क्षेत्र में चलते हुए धार्मिक राष्ट्रीयता से प्रेरित संघर्षों को स्पष्टतया कोई स्थान नहीं दिया। और न मुसलमान सत्ता का व्यक्त विरोध ही किया। यथough अव्यक्त रूप से इनका चित्रण मिलता है, उत्तर में केन्द्रीय सत्ता मुसलमानों के हाथों में भी इसलिए इन भक्त कवियों ने इन को उपेक्षा कर दी। मुसलमानों की उदारता को कुछ हिन्दू आचार्यों ने संदेह की दृष्टि से देखा। यही कारण है कि बलभाचार्य जी ने तत्कालीन शासन की कटु

आलोचना की थी।<sup>१</sup> मुसलमानों के उद्दंड शासन की प्रतिक्रिया के रूप में दक्षिण के राघवानंद, वल्लभाचार्य आदि ने व्यापक भक्ति और सांस्कृतिक आंदोलन को चलाया। लेकिन दक्षिण के कवि राज्याश्रय में रहकर भक्ति और शृंगार को अपने प्रबन्ध या भूक्तक रचनाओं में समावेश करने लगे। मुक्तक रचना को राज्याश्रय में स्थान नहीं मिला। हिन्दी के समान तेलुगु में भक्ति साहित्य की एक ऐसी धारा है जो राज्याश्रय से निरपेक्ष होकर प्रगति पा रही थी।

#### ०-८३ सामाजिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियाँ :

उत्तर भारत के ब्राह्मण के द्वारा हिन्दू जनता में अंध-विश्वास की व्याप्ति के कारण मुसलमान शासकों ने उन्हें उच्च वर्ण के व्यक्ति के रूप में पूज्य नहीं माना।<sup>२</sup> ब्राह्मणों की आर्थिक स्थिति बिगड़ने लगी जिसके फलस्वरूप वे उत्तर भारत में धर्म और मंदिरों की आड लेकर अपने पतन का मार्ग प्रशस्त कर रहे थे। लेकिन दक्षिण के राजा ब्राह्मणों का सम्मान करते थे और उनके बौद्धिक विकास के लिए अवसर प्रदान करते थे। अन्य वर्गों में क्षत्रिय ब्राह्मणों के पश्चात आते हैं। आन्ध्र में क्षत्रियों के अतिरिक्त रेड्हियों को भी क्षात्र प्रतिष्ठा प्राप्त हो गयी थी। हिन्दी क्षेत्र में केवल राजपूत जातियाँ इस रूप में प्रतिष्ठित थीं।

१ औचार्य वल्लभ कृत खोड़स ग्रंथांतर्गत कृष्णाध्य के २, ३, ५ श्लोक दृष्टव्य है।

२ ट्रावेल्स इन मोगल एंपाइर, बर्नियर, पृ. ३०३ से ३०६

दीनों के ही स्थानों पर वैश्य वर्ग व्यापार व्यवसाय से संबद्ध था। समाज की आर्धिक व्यवस्था का संतुलन इस वर्ग के हाथ में था।<sup>१</sup> लेकिन सामाजिक प्रतिष्ठा को दृष्टि से उसे तृतीय स्थान ही प्राप्त था। निम्न वर्ग की दोनों ही क्षेत्रों में दयनीय अवस्था थी। शिक्षा संस्कार ओर सामाजिक अधिकार सभो दृष्टियों से निम्न जातियां पिछड़ी हुई थीं।

नारियों की स्थिति समाज में विलास और शृंगार पर आंको जाती थी। यहां तक कि वे दोनों क्षेत्रों में स्त्रियों का व्यवसाय भी होता था।<sup>२</sup> मुसलमान सामंतों से रक्षा पाने के लिए उत्तर भारत में परदे का आश्रय लेना पड़ा। लेकिन दक्षिण में स्त्रियां इस प्रथा ने मुक्तं थी। उत्तर भारत के हिन्दुओं में बालविवाह की प्रथा चल पड़ी। दक्षिण में भी हिन्दुओं में यह प्रथा अवश्य थी। बहु विवाह की प्रथा विशेष रूप के दोनों क्षेत्रों के उच्च वर्गों में प्रचलित थी। सती प्रथा हिन्दी क्षेत्र की अपेक्षा तेलुगु क्षेत्र में प्रबलतर थी। राजकीय निषेध के रहते हुए भी उत्तर भारत में कुछ स्त्रियां अवश्य सती होती हैं थी। राजपुतों में सती की प्रथा और दूसरे रूप में रही। दक्षिण में इस प्रथा के प्रति राजा एवं प्रजा, में आदर की दृष्टि बनी रही। विजय नगर साम्राज्य में एक या

<sup>१</sup> सोशियल एण्ड पोलिटिकल लाइक इन विजयनगर एंपाइर,  
पृ. ३४

<sup>२</sup> तारीखे फिरोजशाहो, बरानी, पृ. ३८४

दो वर्गों के लोगों को सती की प्रथा का निषेध भी था। एक राजा की एक से अधिक पत्नियां होने पर सामूहिक रूप से सती होना भी घटित होता था। नारी समाज से संबन्धी इन प्रथाओं से यह स्पष्ट होता है कि उस समय नारी का अवमूल्यन होता था। दोनों क्षेत्रों में कवयित्रियां भी हुई किन्तु अंतर इतना है कि उत्तर की परिस्थितियों ने वीरागनाओं को जन्म दिया और आन्ध में विद्विषियों एवं कवयित्रियों को संख्या अधिक रही।

उत्तर भारत में हिन्दू और मुसलमान दोनों के अनेक उत्सव तथा मेले होते थे। आन्ध में दशहरा, होली आदि हिन्दू त्योहार विशेष रूप से मनाये जाते थे।<sup>१</sup> दक्षिण में हिन्दू उत्सवों को अधिक राज्याश्रय प्राप्त हुआ था। तुलसी के अनुसार उस समय पुण्य क्षेत्र तथा पुण्य स्थान अनाचार के केन्द्र होते थे। अधिकांश ब्राह्मण चरित्रहीन और जीवन चलाने के लिए विद्या का विक्रय करते थे। लेकिन दक्षिण में ब्राह्मणों का चरित्र गिरा नहीं था। श्रीकृष्णदेव राय ने आमुक्त माल्यदा में ब्राह्मणों को संपूर्ण स्थान देने के संबन्ध में लिखा है।<sup>२</sup> कृष्णदेव राय ने अधिकांश ब्राह्मणों को उच्च स्थानों पर नियुक्त करके अपनी राजनीति का अच्चा परिचय दिया है। पेहना ने भी अपने काव्य में ब्राह्मणों का वेद, वेदांग, मीमांसा, न्याय

<sup>१</sup> आन्द्रल सांविक चरित्र, सुरवरपु प्रताप रेड्डी, पृ. २२९

<sup>२</sup> आमुक्त माल्यदा, ५।२०७

पुराण, धर्म शास्त्र आदि विद्याओं में पारंगत होने की बात का उल्लेख किया है। उनके लिए धर्म शालाएं भी खोली गयी हैं। उत्तर के जैसे शोषक ब्राह्मण भी दक्षिण में पाये जाते हैं। पेढ़ना के अनुसार ब्राह्मण विद्वत्ता से जीविका का निवहि करते थे। कुछ ब्राह्मण जो बिना बुलाए यमदूत के समान श्राद्ध कर्मों के लिए जाते हैं, उनका भी वर्णन आमुक्तमाल्यदा में है। जहाँ तक क्षत्रिय का संबन्ध है इन्होंने दोनों क्षेत्रों में साहित्य को प्रोत्साहन दिया। दोनों क्षेत्रों में वैश्य वर्ग देश विदेश में विविध रूप आभूषण आदि का संकलन करके क्रय विक्रय की व्यवस्था करता था। निम्न वर्ग के निरक्षर पर निर्भय और अक्कड़ नेताओं का यह विश्वास था कि इस अवस्था के लिए शास्त्रीय धर्म व्यवस्था और ब्रह्मण वर्ग उत्तरदायी है।

नारी व्यवस्था का संकेत तेलुगु काव्यों में मिलता है।<sup>१</sup> बहु विवाह की प्रथा तत्कालीन साहित्य पर दृष्टिगत नहीं होता। तेलुगु क्षेत्र में राज्याश्रय के कारण दम्रक्षण नायिकत्वा में राजाओं के बहु विवाह का अव्यक्त प्रतिबिब माना जा सकता है। मुकु तिष्मना के पारिजापहरण इस का प्रमाण है। अन्नमाचारि, वेंकटेश्वर भगवान के दक्षिण नायिकत्व के निरूपण में उनके स्वयं के दक्षिण नायिकत्व का प्रतिबिब माना जा सकता है। तांत्रिक क्रियाओं का प्रयोग भी तेलुगु साहित्य में है। तत्कालीन

---

१ थ. परम योगी विलसनु, ताल्लपाक चिन चिरु वेंगल नाथ,  
पृ. ५८६-८७

उत्सव और त्योहार का भी साहित्य पर प्रभाव पड़ा और हिन्दी के कीर्तन काव्यों में सभी प्रमुख ऋतु उत्सवों और त्योहारों के संदर्भ में वर्णण प्राप्त होते हैं।<sup>१</sup> इस प्रकार सामाजिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का प्रभाव साहित्य पर पड़े बिना रह नहीं सका।

#### ०-८५ धार्मिक परिस्थितियाँ :

उत्तर भारत में हिन्दू के समकक्ष ही देव मंदिर ध्वंस जाते थे। देव मूर्तियाँ नष्ट भ्रष्ट की जाती थी और धार्मिक पुस्तकालय जलाये जाते थे। अकबर के पूर्ण प्रयत्न करने पर भी मुसलमान और हिन्दुओं में समन्वय स्थापित नहीं हो सका। लेकिन दक्षिण भी मुसलमानों के आक्रमण से मुक्त नहीं था। फिर भी विजयनगर राजाओं ने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि मुसलमानों के आक्रमण से दक्षिण भारत की रक्षा करके विशाल हिन्दू साम्राज्य की स्थापना करनी है। धर्म के पुनरुत्थान के लिए तोन प्रकार के साधनों को अपनाये। १) मंदिर का उद्धार २) ब्राह्मणों का संरक्षण तथा ३) विज्ञान का पोषण। उत्तर भारत में शेष और वैष्णवों में वैष्णव्य दृष्टि-गोचर नहीं हीता। काकतीय तत्त्व राजाओं के सुग में शेष सांप्रदाय की प्रतिष्ठा की। जब विजय नगर का राजा विरुपाक्ष वैष्णव धर्मावलंबी हुआ तब से वैष्णव शक्ति संग्रहीत करने लगे।

---

१. हिस्टरी आफ इंडिया, भाग ४, ईलियट, पृ. ४२९।

वैष्णव धर्म को अपने पर भी अन्य हिन्दू धर्म से उनका विरोध नहीं था। आनंद में प्रहले सगुण भक्ति की ही मान्यता मूल्य रूप ने रही। हिन्दी क्षेत्र का वैष्णव साहित्य अतेक संप्रदायों से प्रत्यक्ष या प्रचलन रूप से प्रभावित था। तेलुगु क्षेत्र का वैष्णव साहित्य श्रांप्रदाय को छोड़कर और किसी सांप्रदाय से प्रभावित नहीं दीखता। इन सब के मूल में किसी विशेष सांप्रदाय की प्रेरणा रहीं थी। राधाकृष्ण की उपासना उत्तर भारत में थी और वह तेलुगु क्षेत्र में नहीं। लेकिन राम के साथ हनुमान की उपासना तेलुगु और हिन्दो क्षेत्रों में समान है।

दक्षिण में उत्तर के जैसे हिन्दू मुस्लिम एकता के लिए प्रयास नहीं हुआ। दक्षिण में हिन्दू राजा ओं ने धर्म की रक्षा और पुनरुद्धान के लिए दीक्षा ली थी। उत्तर भारत में हिन्दू मुस्लिम संघर्ष जो धार्मिक धरातल पर चल रहा था दक्षिण में यही राजनैतिक क्षेत्र में अग्रसर था। इसलिए दोनों धर्मों का समन्वय दक्षिण में नहीं था। शैव वैष्णव संघर्ष का विवरण आमुक्त माल्यदा<sup>१</sup> धूर्जटी कृत श्रीकालहस्तीश्वर शतक<sup>२</sup> आदि ग्रंथों में देखा जा सकता है। उन दोनों धर्मों ये समन्वय का भी प्रयत्न दक्षिण में हुआ। वह उस रूप में नहीं था जिस रूप में तुलसी के मानस में है। तिक्कना, पोतना आदि ने भी शिव केशव अभेद की पूर्ण अभिव्यक्ति अपने काव्यों में की।

१ आमुक्त माल्यदा, ४१४२, ४३, ४४, ४७

२ श्रीकालहस्तीश्वर शतकम्, पद्म १७, १९

। । । उत्तर में जिस प्रकार रामानन्द सांप्रदाय आदि -अनेक सांप्रदाय थे, उस प्रकार तेलुगु क्षेत्र में पृथक् सांप्रदाय, नहीं मिलते। भागवत भारत, राधामाधव, पांडुरंग महात्म्य अद्विदी काव्य तेलुगु में उस समय रचे गये। दार्शनिक क्षेत्र में निर्गुण सगुण का संघर्ष हिन्दी साहित्य में तेलुगु साहित्य की अपेक्षा अधिक था। निर्गुण के खण्डन की उक्तियां तेलुगु के वैष्णव साहित्य में कम मिलती हैं। हिन्दी और तेलुगु क्षेत्र में जो अंतर दृष्टि गोचर होता है उसका मूल कारण यह था कि हिन्दी क्षेत्र में निर्गुण और सगुण नाम से दो भक्ति सांप्रदाय थे। तेलुगु क्षेत्र में वेमना जो निर्गुण संत था उनका संबन्ध योग से था भक्ति से नहीं।

। । तेलुगु क्षेत्र में राम और कृष्ण के अतिरिक्त विष्णु और उनके विभिन्न विग्रहावतार प्रसिद्ध थे। हिन्दी क्षेत्र में यह बात नहीं थी। जहां तेलुगु क्षेत्र में उक्ति तीनों विग्रहों को विभिन्न आचार्यों ने 'महत्व ब्रदान' किया वहां हिन्दी क्षेत्र में आचार्यों ने राम और कृष्ण को विविध भगवानों से संयुक्त करके अपना उपास्य देव बनाया। विष्णु के अन्य अवतार हिन्दी और तेलुगु दोनों ही क्षेत्रों में मान्य रहे। पर हिन्दी में उनका उल्लेख दास्य भक्ति-साहित्य में भक्त वत्सलता जैसे वैष्णव जनोचित दिव्य अलौकिक गुणों के प्रदर्शन के लिए हुआ है। लेकिन तेलुगु में अन्य अवतारों पर स्वतंत्र रूप से भी कुछ साहित्य की रचना हुशी है। यहां राम और कृष्ण के अतिरिक्त अन्य अवतारों

के चरिकों पर आश्रित पुराण साहित्य की भी मान्यता रही। इस प्रकार धार्मिक परिस्थितियों का वैष्णव साहित्य पर प्रभाव पड़ा था।

#### ०-८५ साहित्यक परिस्थितियाँ :

हिन्दी क्षेत्र में निर्गुण और सगुण शाखाएं थी। उसी तरह शैव एवं शृंगार रसात्मक साहित्य की उपलब्धि तेलुगु में होती है। हिन्दी में सगुण भक्ति सांप्रदाय के अंतर्गत राम और कृष्ण भक्ति शाखाएं थी। तेलुगु में राम और कृष्ण की लेकर पृथक तो हुई लेकिन सांप्रदायों की स्थापना नहीं हुई। इसी लिए तेलुगु रचनाएं में विष्णु, उनके विग्रहावतार और अवतारों से संबन्धित स्वतंत्र साहित्य की उपलब्धि होती है। विष्णु पुराण में श्रीकृष्ण की लीलाओं का सरस वर्णन मिलता है। अन्नमाचार्य के शृंगार रस के कीर्तनों का अलंबन अधिक स्थलों पर कृष्ण जी प्रतीत होते हैं। कवि श्रीराम और कृष्ण को श्री वेंकटेश्वर से अभिन्न मानकर भक्तिगत अनुभूतियों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति में प्रवृत्त होते हैं। तेलुगु में भी हिन्दी के समान राम और कृष्ण से संबन्धित विस्तृत साहित्यिक रचना हो रही थी। जहां तक राम साहित्य का संबन्ध है १४ वीं शताब्दि में ही रंगनाथ, भास्तकर और निर्वचनोत्तर रामायणों की रचना हो चुकी थी। इसी लिए इस युग में राम साहित्य की गति मंद पड़ गयी। इस युग में रामाभ्युदयमु और मोल्ल रामायण के अतिरिक्त-

उल्लेखनीय रामकाव्य नहीं है। हिन्दी और तेलुगु में रामकाव्य का परिमाण गत साम्य होने पर भी काव्योत्कर्ष का साम्य नहीं मिलता है। विद्यापति और केशव को छोड़कर समस्त हिन्दी कवि राज्याश्रय से मुक्त होकर भक्ति काव्य की रचना में निरत रहे। तेलुगु में वैष्णव साहित्य एक और राज्याश्रय में पलता रहा तो दूसरी और स्वतंत्र रूप से। हिन्दी राम साहित्य में प्रबन्ध काव्यों की रचना हुई। तेलुगु में अन्नमाचारि और कुछ शतक कारों को छोड़कर समस्त साहित्य की रचना प्रबन्ध काव्यों की रूप में ही हुई है।

#### ०-८५ निष्कर्ष :

मुसलमान शासन के कारण हिन्दी के भक्त कवि राज्याश्रय में मुक्त होकर भक्ति भाव में तल्लीन हो रहे थे। किन्तु तेलुगु क्षेत्र के हिन्दू राजा और सामंतों ने हिन्दू धर्म के पुनरुद्धार की दीक्षा ली थी। तेलुगु के भक्ति साहित्य का सृजन जहाँ एक और स्वतंत्र रूप से हो रहा था वहाँ दूसरी ओर उसके उन्नयन में राजाओं का भी सहयोग रहा। निर्गुण और सगुण भक्ति शाखा के साहित्य ने हिन्दी को समृद्धि करने में योगदान किया। सूफी सांप्रदाय के कवियों ने प्रेम मार्गी काव्यों से हिन्दी भारती का शृंगार किया। दक्षिण में रामानुज भी जन जन को प्रभावित कर रहे थे। शैव सांप्रदाय की शक्ति वैष्णव सांप्रदाय की लोक-प्रियता के समक्ष क्षीण हो गयी थी। इसीं के कारण तेलुगु में

राम; विष्णु और कृष्ण से संबन्धित अमूल्य साहित्य का उन्नयन होने लगा। और दूसरी और धूर्जटी आदि शैवधर्मावलंबी वैष्णव साहित्य की स्पर्धा करते हुए शैव साहित्य को रचना में संलग्न रहे। श्री कृष्ण देवराय आदि राजाओं के नेतृत्व में कुछ कवि प्रशस्त लौकिक शृंगार रस से युक्त मनु चरित्र आदि काव्यों की रचना में प्रवृत्त हो रहे थे। दोनों क्षेत्रों में उच्च वर्ग की आर्थिक स्थिति विलासिता की सीमा तक पहुंचगयी थी। हिन्दी के राज्याश्रित साहित्य में उच्च वर्गीय विलासिता का प्रतिबिंब पड़ने लगा और राज्याश्रय से निरपेक्ष हिन्दी भक्त कवियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तेलुगु क्षेत्र में शृंगार रस काव्य के प्रणोत्ता कवियों के साहित्य में उच्चवर्गीय उद्घाम विलासिता के चिह्न हैं ही साथ ही राज्याश्रय से निरपेक्षित रचनाओं पर भी इस लौकिक विलासिता का प्रतिबिंब पड़ने लगा। उच्च वर्गीय शोषण की प्रतिक्रिया के फूल स्वरूप तेलुगु में समाज सुधारक कवि वेमना की वाणी मुखरित हुई। इसी तरह हिन्दी साहित्य के कबीर, दादू आदि निर्गुण संत कवियों ने वर्णाश्रय धर्म, धार्मिक पाखण्डता एवं धार्मिक कुरीतियों के विरुद्ध तीव्र क्रांति मचायी। उसी समय हिन्दी साहित्य में लोक नृत्य लीला ने रास लीला की जन्म दिया और उसके लिए कृष्ण भक्त कवि नवीन पदों की रचना में प्रवृत्त होते रहे। तेलुगु क्षेत्र के शास्त्रीय नृत्य के शैलें ने यक्ष गानों को जन्म दिया। और कवियों को यक्षगानों की रचना के लिए बाध्य

करता रहा। इस प्रकार दौनों क्षेत्रों की साहित्यक गति-विधियों के सूक्ष्म सूक्ष्म भी तत्कालीन परिस्थितियों से व्यक्त था अव्यक्त रूप में बांधे हुए मिलते हैं।

### ०-९ जीवन परिचय और व्यक्तित्व :

#### ०-९१ प्रस्तावना :

आतुकूरि मोल्ल आनन्द की कवयित्रियों में द्वितीय और रामायण की रचयित्रियों में प्रथम है। तुलसी की जीवनी के संबन्ध में लिखना पिष्टपेषण मात्र होंगा। अतः यहाँ पर मोल्ल की जीवनी और व्यक्तित्व के संबन्ध में परिचय दिया जा रहा है।

#### ०-९२ बाह्य स्रोतों के आधार पर :

आतुकूरि मोल्ल का जन्म लगभग १५२५ में हुआ। ये विजयनगर के राजा श्रीकृष्णदेवराय के समकालीन थी। जाति की वे कुम्हारिन थी और केसन सेट्री की पुत्री। बचपन में ही ये 'बिधवा हुई' और नेल्लुर मंडल के आत्मकूरु नामक गाँव 'उनका निवास स्थान है।'

मोल्ल के समान तुलसी दास जी का जन्म लगभग एक ही काल में हुआ था। मोल्लमांबा का संबन्ध किसी सांप्रदाय विशेष से नहीं था। परन्तु कहा जाता है कि तुलसी का संबन्ध स्मार्थ वैष्णव सांप्रदाय से था। मोल्लमांबा के गुरु के संबन्ध में

कुछ भी पता नहीं है। वे श्रीकण्ठ मल्लेश्वर की कृपा से प्रस्तुत काव्य की रचना में प्रवृत्त हुईं। तुलसीदास जी के गुरु के संबन्ध में भी स्पष्ट रूप से पता नहीं चलता। वैसे उन्होंने नर रूप हरि कहकर गुरु का उल्लेख किया है।

०-०,३ काव्य समीक्षकों के ग्रंथों के आधार पर

जगमार्जन तत्पर और शिव भक्त पिता से मोल्ला ने दोक्षा ग्रहण की। उन्होंने मोल्ल रामायण की पीठिका में स्वयं उल्लेख किया है कि वह श्रीकण्ठ मल्लेश्वर की कृपा से रचना में प्रवृत्त हुईं।<sup>१</sup>

... ... विख्यात गोप  
वरपु श्रीकण्ठ मल्लेशु वरमु चेत  
नेरि गवित्वबु जेप्पगा नेर्चिकोटि।

(अर्थात् प्रसिद्ध गोपवरपु श्रीकण्ठ मल्लेश्वर की कृपा से मैं ने अच्छी कविता कविता कहना सीखा है )

एकांब्रनाथ नामक पहले इतिहासकार के अनुसार मोल्ला ने तिक्कना की प्रेरणा से काव्य रचना की और जब वह प्रताप स्त्र के दरबार में सुनाया गया तब वहां के पडितों ने उनकी हँसी उडायी। इसका कारण यह है कि उस काल में ब्राह्मणेतर अन्य वर्ग के व्यक्ति कविता करने के लिए अयोग्य माने जाते

<sup>१</sup> मोल्लरामायण की पीठिका, छ १२

थे। उसी दरबार में भास्करामात्य उनकी कविता से प्रभावित होकर काव्य रचना के लिए उन्हें प्रेरित भी करते हैं।<sup>१</sup> श्री आरुद्रा के अनुलार जब एकांब्रनाथ प्रताप चरित्र लिखते थे उस समय मल्लिम राम का पुत्र मोहम्मद खुली पादुसाह गोल्कोँडा का राज्य करता था। उनके शासन काल १५८१-१६१२ के आसपास को था। मोल्ल १५८१ के पहले की कवियित्री मानी चाती है। मोल्ला ने अपने काव्य की पीठिका में जिन कवियों की वंदना की है उनमें श्रीनाथ का नाम भी है जिससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि मोल्ल यातो श्रीनाथ की समकालीन होगी या उसका जन्म श्रीनाथ के बाद ही हुआ होगा। इस दृष्टि से देखने पर भी मोल्ल का जीवन काल सोलहवीं शताब्दी सिद्ध होता है।

पूल गोसाई चरित के अनुसार तुलसी का विवाह रत्नावली नामक एक कन्या से हुआ किन्तु थोड़ी समय के बाद ये विरक्त हो गये और चित्रकूट, अयोध्या, प्रयाग, बद्री नारायण आदि तीर्थों का ऋषण करके अंत में काशी पहुंचे तथा आजीवन वही रहे।<sup>२</sup> इसके बाद उन्होंने दक्षिण के रामेश्वर की भी यात्रा की थी।<sup>३</sup> वैराग्य के कारण पत्नी के रहते हुए भी तुलसी

१ समग्र आनंद साहित्यम्, वाल्युम ८,

२ डा. माता प्रसाद गुप्त, तुलसीदास, पृ. १४५

३ श्यामसुन्दर दास. तुलसीदास, पृ. ४१, हिन्दी साहित्य का इतिहास रामचन्द्र शुल्क, पृ. १४४, रामबहोरी शुल्क, तुलसी, पृ. १५

उससे उदासीन रहे। मोल्लमांझा ने भी बाल विधवा होने के कारण इष्टदेव रामजन्द्र जी को सब कुछ समर्पित किया। तुलसी और मोल्लमांझा दोनों के इष्ट देव राम ही थे। इसी से दोनों राम काव्य के प्रणयन में प्रवृत्त हुए। तुलसीदास ने सब सगे संबन्धियों तथा प्रिय वस्तुओं को त्यागकर भक्ति करने का उपदेश दिया।<sup>१</sup> ऐसे ही भक्ति के हृदय में भगवान निवास करते थे। भगवान की ओर अपनी समस्त प्रवृत्तियां और भावनाओं को उन्मुख करने के लिए यह आवश्यक है कि उनका सांसारिक विषयों से विच्छेद हो जाय। इसी लिए संसार की निरर्थकता, असारता और नश्वरता की बात तुलसी ने बल देकर कही है। तुलसी ने इन संबन्धों के प्रति आसक्ति को मृगजलमंथन के समान निष्फल कहा है। इस प्रयत्न को छोड़कर भगवान की शरण में ही जाता है।<sup>२</sup> तुलसी ने भी 'बडे भाग मनुष तन पावा' कहकर मानव जन्म की विशिष्टता की ओर संकेत किया है। तुलसीदास जी का व्यक्तित्व इतना सर्वग्राही है कि वे एक साथ साहित्य शिरोमणि, राजनीति विशारद, धर्मसंस्थापक समाजसुधारक, और युग निर्माता भी हैं।<sup>३</sup> उन्होने भक्ति की साधना के लिए सांसारिक आकर्षणों से असंपृक्त रहकर वैराग्य भावना को अपनाना एक आवश्यक तत्व मान लिया है।

१ मानस, अयोध्याकाण्ड, ३।१३०

२ विनय पत्रिका, पद १३३

३ इन्द्रनाथ मदान, तुलसीदास एक सर्वेक्षण, पृ, १२

अनुश्रुतियों के अनुसार मोल्ल राम की अनन्य उपासिका थी। प्रस्तुत संक्षिप्त काव्य में उन्हें अपनी भक्ति भावना को अभिव्यक्ति करने का अवसर नहीं मिला। अगर कोई मुक्तक काव्य होता तो मोल्ल अपनी भक्ति की तन्मयता को व्यक्त कर सकती थी। काव्य कला के दायित्वों को निभाते हुए भक्ति का प्रतिपादन इस लघु काव्य में करना उन्हें उचित नहीं लगा। फिर भी मोल्ल रामायण की पीठिका से स्पष्ट होता है कि मोल्ल इष्ट देव राम के प्रति तन मन से आसक्त थी। इसी लिए इस काव्य के कर्तृत्व का हेय वह अपने ऊपर नहीं लेती। रामचन्द्र जी ने ही उनके मुह से यह सब कुछ कहलवाया है।<sup>१</sup> इस काव्य का प्रेरणा स्रोत भी राम भक्ति ही है।<sup>२</sup> रामभक्ति को अक्षुण्ण रखने के लिए ही तुलसीदास ने लवकुश वृत्तांत को मानस में प्रस्तुत नहीं किया। इसी प्रकार मोल्लमांबा ने भी उत्तर काण्ड को नहीं अपनाया। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि मोल्ल ने राज्याश्रय से निरपेक्ष होकर काव्य की रचना की है। राम की रचना में अपना उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए उन्होंने व्यक्त किया है कि 'भक्ति एवं मुक्ति प्रदाता भगवान् श्रीरामचन्द्र जी की क्रितने ही बार स्तुति क्यों न की जाय उसमें दोष क्या है। श्री रामचन्द्र जी जैसे नरपालक की स्तुति के लिए अभ्यस्त यह जिह्वा क्या कभी फुटकल रज्जाओं की स्तुति कर सकती

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण की पीठिका, छ. १३

<sup>२</sup> वही, छ. २३

है।<sup>१</sup> काव्य के कर्तृत्व का गौरव और श्रेय श्रीरामचन्द्र जी को प्रदान करके कवित्री ने अपना निरहंकार तथा भक्ति पूर्ण व्यक्तित्व का परिचय दिया है :

चेष्टुमनि रामचंद्रुडु  
चेप्पिचिन पलुकु मीद जेपेद नेने  
ललप्पुडु निहपरसाधन  
मिष्टुण्य चरित्र तप्पु लेचकुडु कवुलु।<sup>२</sup>

भगवान श्री रामचन्द्र जी ने स्वयं मेरी वाणी के द्वारा ऐहिक एवं पारलौकिक सुखों के साधन स्वरूप इस पुण्य कथा को कहलाया है। अतः हे कवियों! इस काव्य का चिद्रान्वेषण मत करना। इस तरह उन्होंने स्पष्ट रूप से अपनी काव्य लक्षणों से अनभिज्ञता की घोषणा करके निराडंबर स्वरूप का भी परिचय दिया है।

तुलसीदास जी का व्यक्तित्व भी 'मोल्लमांबा' से भिन्न नहीं है। मोल्लमांबा की तरह तुलसी भी राज्याश्रय से निरपेक्ष रहे। दोनों राज्याश्रय के आकर्षक प्रलोभन से दूर रहे। मोल्ल की भाँति तुलसी भी प्राकृत जन गुणगान से दूर रहे। इन के संबन्ध में उनकी यह प्रसिद्ध उक्ति द्रष्टव्य है :

कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछताना।

### ०-९५ निष्कर्ष :

जीवन और व्यक्तित्व संबन्धी तुलनात्मक अध्ययन से इस निष्कर्ष पर पहुंच सकते हैं कि मोल्ल और तुलसी दोनों अपने अपने युग से अत्यंत प्रभावित थे। तुलसी का समय साहित्य की दृष्टि से स्वर्ण युग था। लेकिन धार्मिक और राजनैतिक दृष्टि से वह पराजय का काल था। इसलिए भक्ति की पुनः स्थापना तुलसी का उद्देश्य है। लेकिन दक्षिण में मोल्ल के समय ऐसी परिस्थितियाँ नहीं थी। उनका उद्देश्य केवल युग का चित्रण और राम की पुण्य गाथा का वर्णन करना है।

द्वितीय अध्याय

## कथा व स्तु

१-१ रामकथा की रुढ़ियाँ :

१-११ प्रस्तावना :

संस्कृत वाल्मीकि रामायण का प्रभाव परवर्ती संस्कृत साहित्य पर पड़ा। आध्यात्म रामायण, प्रसन्नराघव, रघुवंश आदि ग्रंथों को उदाहरण के रूप में ले सकते हैं। हिन्दी और तेलुगु राम साहित्य परस्पर एक दूसरे से प्रभावित है। सामाजिक धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों की विभिन्नता होने पर भी उनका मूल तत्व एक ही है। मोल्ल और तुलसी दोनों वाल्मीकि रामायण से अत्यंत प्रभावित होने के कारण यह जानना आवश्यक है कि उन्होंने कौन कौन से परिवर्तन और परिवर्द्धनों को अपने अपने ग्रंथों में किया है। वाल्मीकि रामायण, पद्मपुराण प्रसन्नराघव आदि से भी प्रभावित हुए हैं जिसकी चर्चा आगे की जायेगी।

१-१२ वाल्मोकि रामायण से संबन्धित रुढ़ियाँ :

राम चरित मानस और मोल्ल रामायण मूलतः वाल्मीकि रामायण पर आधारित हैं। फिर भी आवस्यकता के अनुसार दृष्टिकोण की विभिन्नता के कारण अपने निजी व्यक्तित्व

का प्रभाव उनकी रचनाओं में यक्त तत्त्व दिखाई पड़ता है : तुलसी-दास राम कथा के प्रति अपनी मान्यता व्यक्त करते हैं। इससे तुलसी की वैयक्तिकता और दृढ़ विश्वास पर प्रकाश पड़ता है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण की पीठिका में भी मोल्ल राम कथा की रचना में अपना उद्देश्य स्पष्ट करती है।

आदि रघुरामु चरितमु  
नादरमुग विन्न ग्रोत्तयै लक्षसं  
पादंभै पुण्यस्थिति  
वेदभ्यै तोचकुन्न वेरिने चेप्पन् २

(आदि राम का चरित आदर के साथ सुनने से नया, और पुण्य स्थिति प्रदान करनेवाला है न समझती ती में क्या पागल थी कि उसे कहती ।)

... ... ... भक्तिकि भुक्तिकि मूल मेनया  
राजुनु दैवमैन रघुरामु नुर्तिचिन दप्पु गलुगुने ।३

(भक्ति और भुक्ति के मूल राजा राम की स्तुति करने से क्या बुराई होगी?) फिर भी आवश्यकता के अनुसार निजी व्यक्तित्व का प्रभाव दिखाई पड़ता है। वाल्मीकि रामायण में राम आदर्श पुरुष के रूप में दिखाई देते हैं। मोल्ल ने भी राम

<sup>१</sup> स्वात्तः सुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-  
भाषा निबन्धपति मंजुल मांतनीति ।—मागस, बालकाण्ड, ७ ।

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, पीठिका, छ. २०

<sup>३</sup> वही, छ. २१

के इसी रूप को ग्रहण किया। लेकिन तुलसी का राम आदर्श पुरुष तो हैं साथ ही आध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, योगवाशिष्ट आदि के परब्रह्म विराट भगवान के रूप में भी राम का चित्रण हुआ है। अपने हृदयगत इस रूप को जन जन के लिए उपलब्ध कराना और तद्वारा रामभक्ति का प्रचार करना ही तुलसी का लक्ष्य है। इस उद्देश्य को सामने रखकर तुलसी ने वाल्मीकि रामायण की कथा को अपने मानस के अनुसार परिवर्तन किया। आरंभ में किये गये इष्ट देव वंदना, साधु संतों और सत्कवियों की प्रशंसा, दुर्जनों और प्राकृत कवियों की निंदा राम नाम महिमा, रामावतार के विभिन्न कारण आदि तुलसी ने मौलिक रूप में प्रस्तुत किया है। मोल्ल की रचना में ऐसी प्रवृत्ति दिखाई नहीं पड़ती है। रामायण की कथा को वाल्मीकि ने नारद-वाल्मीकि संवाद रूप में रखा जिसका ठोक अनुसरण में भी पाया जाता है। लेकिन तुलसीदास ने आध्यात्म रामायण से आध्ययण से प्रभावित होकर शिव-पार्वती के संवाद के रूप में रामकथा को प्रस्तुत किया है। इस में तुलसी का उद्देश्य शैव और वैष्णवों का समन्वय है।

१ कुम्भकर्ण, रावण आदि राक्षसों का जन्म वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड में वर्णित हैं। लेकिन मोल्ल और तुलसी ने इस प्रसंग का वर्णन बाल काण्ड में ही किया है। रामायण के अनुसार यज्ञ की रक्षा के लिए विश्वामित्र जब राम लक्ष्मण को मांगते हैं तब राजा दशरथ अस्वीकार करते हैं। उस

समय के तुलसी के विश्वामित्र कृष्ण भी होते हैं। पर वाल्मीकि के विश्वामित्र के समान मोल्ल और तुलसी का विश्वामित्र कृष्ण नहीं होता। मोल्ला के विश्वामित्र दशरथ को ढाढ़स बंधाकर राम को अपने साथ ले जाते हैं।

२ मिथिला जाते समय वाल्मीकि रामायण के गंगावतरण आदि प्रसंगों को अवांतर समझकर तुलसी और मोल्ल ने छोड़ दिया है।

३ मिथिला नगर को देखने के लिए राम लक्ष्मण के विहार करने का प्रसंग मानस में हैं। लेकिन संक्षिप्त काव्य होने के कारण इन प्रसंगों का वर्णन मोल्ल रामायण में नहीं किया गया है।

४ पुष्पवाटिका प्रसंग को भी तुलसी ने वाल्मीकि रामायण से ग्रहण किया। लेकिन अपनी आवश्यकता के अनुसार विषय का परिवर्तन किया। लेकिन मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

५ वाल्मीकि रामायण के अयोध्या काण्ड में दशरथ भरत के प्रति अपनी शंका प्रकट करते हैं जिससे ऐसा लगता है कि इन्होंने भरत को युवराज बनाने का वचन दिया हो जिसे वे अब तोड़ना चाहते हैं। लेकिन मानस में राम को राज्याभिषेक का समाचार वशिष्ठ देते हैं। मोल्ल रामायण ये यह प्रसंग नहीं है।

६ अरण्य काण्ड में भी इन्द्र का पुत्र कौए के रूप में आकर सीता के स्तन के बीच में चौंच मारकर धायल करने का उल्लेख है। लेकिन मर्यादा की दृष्टि से तुलसी ने इस प्रसंग का परिवर्तन किया है। मोल्ल रामायण में इस प्रसंग का उल्लेख नहीं है। तुलसी के इस प्रसंग पर आनंद रामायण का प्रभाव है। इसी तरह राम और लक्ष्मण शबरी के सामने भक्ति का निरूपण करते हैं। मानस का यह प्रसंग मोल्ल रामायण में नहीं है। सीता हरण का प्रधान नैमित्तिक कारण वाल्मीकि के अनुसार खरदूषण का वध और सूर्षणखा से रावण को सुनाया गया सीता का सौंदर्य वर्णन था। लेकिन तुलसी ने इस प्रसंग को परिवर्तित किया। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग वाल्मीकि रामायण के अनुसार है।

७ वाल्मीकि रामायण के अनुसार किञ्चिधा काण्ड में मायावालि के युद्ध करते समय एक वर्ष तक सुग्रीव ने गुफा के द्वारा पर वालि की प्रतीक्षा की है। लेकिन इस प्रसंग को भी तुलसी ने परिवर्तित किया है। मोल्ल रामायण में राम वालि के बीच वाद विवाद होता है। लेकिन मानस में वालि राम से भक्ति की मांग करता है। पर मोल्ल रामायण में इस प्रसंग का उल्लेख नहीं है। तुलसी की इस मौलिकता पर आध्यात्म रामायण के तारा विलाप में जो स्वाभाविकता है वह मानस में नहीं है। लेकिन मोल्ल रामायण के इस प्रसंग में मानवीय स्वाभाविकता है।

८ सुन्दर काण्ड के रावण के वैभव और विलासता के वर्णन में जुगुप्सा मिश्रित शृंगार है। तुलसी ने इस प्रसंग की संक्षेप में व्यक्त किया है। मोल्लरामायण में इस प्रसंग का उल्लेख नहीं है। वाल्मीकि रामायण में रावण सीता को मारने के लिए उघत होने का उल्लेख नहीं है। लेकिन मानस में 'इस प्रकार का उल्लेख है। मोल्ल रामायण में भी रावण सीता को मारने का प्रयत्न करता है। लेकिन राक्षसों स्त्रियों उनकी रोक लेती हैं। वाल्मीकि रामायण में सीता वेणी की फांसी लगाकर आत्म हत्या करने को उद्यत होती है। उसी 'प्रसंग' को तुलसी ने विलक्षणतां के 'साथ वर्णित' किया है। लेकिन मोल्ल रामायण में ऐसा प्रसंग नहीं है। वाल्मीकि रामायण और मोल्ल रामायण में लंका दहन के पहले ही सीता हनुमान को चूडामणि देती है। लेकिन 'मानस' में 'यह प्रसंग' इस रूप में नहीं है। रावण विभीषण को 'लात' मार कर जाने का प्रसंग वाल्मीकि रामायण मानस और मोल्ल रामायण तीनों में है। राम के लका की ओर जाने के साथ ही वाल्मीकि रामायण में सुंदर काण्ड समाप्त होता है। मोल्ल रामायण में भी इसी तरह काण्डों का 'विभाजन' है। लेकिन 'मानस' में 'युद्ध' काण्ड (लंका काण्ड) की 'कुछ कथा' सुंदर काण्ड में जाती है। वाल्मीकि रामायण में सागर राज वेषधारण करके आता है। लेकिन मोल्ल रामायण में समुद्र मानवाकृति को धारण करता है और मानस में समुद्र विकृत रूप धारण करता है।

-९ लंकाकाण्ड वाला भाग मोल्ल रामायण में युद्धकाण्ड के नाम से अभिहित किया गया है। मोल्ल रामायण का युद्ध काण्ड तीन आश्वासों में विभाजित है। वाल्मीकि रामायण में भी लंका काण्ड का शीर्षक रखा गया है। राम के लंका प्रवेश के बाद मंडोदरी रावण को जो उपदेश मानस में वे देती है वही प्रसंग वाल्मीकि रामायण में युद्ध के प्रारंभ होने के बाद है। वाल्मीकि रामायण में इन्द्रजीत, ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके राम और लक्ष्मण को मूर्छित कर देता है। जांबवान के कथन के अनुसार हनुमान संजीविनी लाने के लिए जाता है। यहां सुसेणा की बात नहीं आती। दूसरी बार जब लक्ष्मण मूर्छित होते हैं तब सेसेणा राम को सांत्वना देता है। लेकिन सुसेणा का संबन्ध मानस से रावण से है। मोल्ल रामायण में वाल्मीकि रामायण का अनुसरण हुआ है। औषधी लासे समय भरत हनुमान को अपने तीर पर बैठने को कहना वाल्मीकि रामायण के गोड़ीय पाठ में है। कुम्भकर्ण के वध का प्रसंग वाल्मीकि रामायण में लक्ष्मण की मूर्छा के पहले आता है। यह प्रसंग मोल्ल रामायण में भी इसी तरह वर्णित है। मानस में लक्ष्मण की मूर्छा और कालनेपि वध के बाद कुम्भकर्ण का वध होता है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार इन्द्रजीत राम और लक्ष्मण दोनों को ब्रह्मास्त्र से घायल करता है। मानस और मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

१० इन्द्रजीत की मृत्यु के बाद सीता को उस अनर्थ का

कारण समफकर रावण का उसे मारने का प्रयत्न करना वाल्मीकि रामायण में है। लेकिन मानस और मोल्ल रामायण में यह प्रसग नहीं है। वाल्मीकि रामायण में हनुमान से संजीविनी लाया जाना दो बार वर्णित है। लेकिन मानस और मोल्ल रामायण में यह प्रसग एक ही बार है। रावण का यक्ष करना राम वानरों के साथ उसका भग करने का प्रयत्न करना आदि प्रसग वाल्मीकि रामायण में है। मोल्ल रामायण में और मानस में भी ये प्रसंग पाये जाते हैं। मानस में नारियों के केश को खीचसे के स्थान में केवल मंडोदरी के केशु खीचने का ही उल्लेख है। रावण के माया युद्ध का वर्णन राम चरित मानस और मोल्ल रामायण में है। वाल्मीकि रामायण में नहीं है। रावण का सिर काट डालने पर नये सिरे उगनेवाला प्रसंग वाल्मीकि रामायण में है। लेकिन वाल्मीकि रामायण में अमृत कलश प्रसग नहीं है। इस प्रसंग का उल्लेख मोल्ल रामायण में है।

११ मानस के उत्तर खाड़ और वाल्मीकि के उत्तर काण्ड में काफी अन्तर है। वाल्मीकि रामायण के उत्तर काण्ड में राक्षसों के जन्म का कारण है। लेकिन मानस में राज्याभिषेक और रामराज्य का वर्णन है। इस प्रकार मानस में ज्ञान भक्ति और कर्म का सम्बन्ध है। मोल्ल रामायण में उत्तर काण्ड नहीं है, लेकिन युद्ध काण्ड में ही राम के राज्याभिषेक और रामराज्य का थोड़ा परिचय है।

१-१३ आध्यात्म रामायण से संबन्धित, रुद्धियाँ :

१ वाल्मीकि रामायण के बाद आध्यात्म रामायण ही गणनीय रचना है जिसका प्रभाव मोल्ल और तुलसी पर समझन, रूप से पड़ा है। मानस के बालकाण्ड में पायस विभजन प्रसंग में सुमित्रा को चरु स्वयं राजा देते हैं। लेकिन वाल्मीकि के अनुसार चरु सुमित्रा को कौसल्या और कैकेयो के द्वारा मिलता है। तुलसी ने इस प्रसग की अध्यात्म रामायण से ग्रहण किया है। मोल्ल रामायण में भी तुलसी के समान यह प्रसंग योजना है।

२ इसी प्रकार राम के जन्म लेते समय कौसल्या को विष्णु का चतुर्भुज रूप दिखाना और तुरन्त ही शिशु राम ही जाना आदि प्रसगों में भी, तुलसी आध्यात्म रामायण से प्रभावित है। वाल्मीकि रामायण में अहल्या का अदृश्य होने का उल्लेख है। लेकिन अहल्या का शिला बनने के प्रसग में दोनों आध्यात्म रामायण से प्रभावित हैं।

३ मानस में गंगा पार करते समय केवट राम से कहता है कि आप के चरणों की धूल में कोई विशेषता है जिसने पत्थर को स्त्री के रूप में बदल दिया। अगर मेरी नाव भी ऐसा बन बन जाय तो मैं कहा जाऊँ। अतः आपके चरण को धोकर ही आप को नाव पर चढ़ाऊँगा। तुलसी के इस प्रसंग का आधार आध्यात्म रामायण है जिसका ठीक अनुसरण मोल्ल रामायण में भी है।

५ राम और लक्ष्मण का शबरी के सामने भक्ति का निरूपण करना आध्यात्म रामायण से प्रभावित प्रसंग है और मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है। खर और दूषण के बाद राम वास्तविक सीता को अग्नि में डालकर माया सीता को अपने पास लेते हैं। मानस के इस प्रसंग में आध्यात्म रामायण का प्रभाव है। मोल्ल में ऐसी प्रसंग योजना नहीं है। मानस में वालि राम से भक्ति की मांग करता है। इसका भी आधार आध्यात्म रामायण है। लेकिन मोल्ल रामायण में ऐसे प्रसंग का उल्लेख नहीं है। स्वयंप्रभा का राम के पास आकर उनकी अनपायनी भक्ति प्राप्त करने का उल्लेख जो मानस में है उसका आधार आध्यात्म रामायण है। मोल्ल रामायण में यह नहीं है।

६ जब सीता रावण का अपमान करती है जब रावण खड़ग में मारने को तैयार होता है और मंडोदरी उनको रोक लेतो है। इस प्रसंग में तुलसी आध्यात्म रामायण से अधिक प्रभावित हैं। मोल्ल रामायण में रावण सीता को खड़ग से मारने का प्रयत्न करता है लेकिन वहाँ की स्त्रियाँ उनको रोक लेती हैं। शुक रावण की लात खाकर राम की शरण आने के बाद राम का रूप धारण करना आदि प्रसंग आध्यात्म रामायण में है जिनसे तुलसी अत्येत प्रभावित हुए हैं। ये प्रसंग मोल्ल रामायण में नहीं हैं।

६ लंकाकाण्ड में सागर पार करने के पूर्व राम के समृद्ध

के तीर पर शिव लिंग की प्रतिष्ठा करना भी आध्यात्म रामायण में है, जिससे तुलसी अत्यंत प्रभावित हैं। मोल्ल रामायण में इस तरह की प्रसंग योजना नहीं है। राम रावण के मुकुटों को गिराने का वर्णन आध्यात्म रामायण में है जिससे तुलसी अत्यंत प्रभावित है। मोल्ल रामायण में ऐसे प्रसंग नहीं हैं। लक्ष्मण की मूर्छा, कालनेमि वध, वानर का रावण यज्ञ का भंग करना, ब्रह्मास्त्र से राम रावण को भारना आदि प्रसंगों में आध्यात्म रामायण का हाथ है। इसका अनुसरण मोल्ल रामायण में भी पाया जाता है।

#### १-१४ प्रसन्न राघव से संबन्धित रुद्धियाँ :

१ मानस में रावण और ब्राण दोनों धनुष यज्ञ के संदर्भ में आते हैं। वे धनुष को देखकर धीरज खोते हैं और खिसक जाते हैं। इसी तरह का प्रसंग प्रसन्न राघव में भी है। लेकिन वे कुछ वाद-विवाद करने के बाद धनुष को बिना हुए ही छले जाते हैं। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

२ मानस के परशुराम गर्वभंगवाला प्रसंग प्रसन्न राघव के आधार पर है। मोल्ल रामायण में भी यह प्रसंग प्रसन्न राघव के सादृश्य है। परशुराम राजा जनक के दरबार में प्रवेश करते हैं और राम को युद्ध करने केलिए ललकारते हैं।

#### १-१५ आनन्द रामायण से संबन्धित रुद्धियाँ :

मानस के बालकाण्ड में राम नगर-विहार करते समय

नगर की स्त्रियां उनके सौंदर्क की प्रशंसा करती हैं। आनंद रामायण से तुलसी ने इस प्रसंग को लिया है। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

### १-१६ हनुमन्नाटक से संबन्धित रुद्धियाँ :

मानस के शिव धनुर्भगवाले प्रसंग पर हनुमन्नाटक का प्रभाव है। इस प्रसंग की अनेक पंक्तियां हनुमन्नाटक के पद्यों का अनुवाद सी लगती है। मोल्ल रामायण के इस प्रसंग में भक्ति का अभाव नहीं है।

### १-१७ निष्कर्ष :

मानस और मोल्ल रामायण की रुद्धियों पर आध्यात्म रामायण, वाल्मीकि रामायण, प्रसन्न राघव, आनन्द रामायण और हनुमन्नाटक आदि राम काव्यों की रुद्धियों का प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभाव पड़ा है। विभिन्न स्रोतों से रुद्धियों को अपनाने पर भी उन कवियों ने मौलिक रूप से उनको अपने काव्यों में प्रस्तुत किया है।

### १-२ मोल्ल की विशेष प्रसंग-योजना :

मोल्ल रामायण का प्रेरणा स्रोत वाल्मीकि रामायण है। वाल्मीकि रामायण की भाँति मोल्ल रामायण में भी राम की कथा नारद वाल्मीकि को सुनाते हैं। मोल्ल ने मौलिक प्रसंगों

के निर्वाह में प्रायः वाल्मीकि का अनुसरण किया है। कहीं कहीं ऐसे प्रसंग हैं जिनमें मोल्ल के स्त्रीत्व की फलक दिखाई पड़ती है।

### १-२१ मोल्ल के विशेष प्रसंग :

१ साकेत पुरी का वर्णन : मोल्ल ने साकेत पुरी के सदन, गोपुर, प्राकार, वहाँ के संपन्न वैश्य, फंडित बरेष्य, हय, राजकुमार, संपन्नता, वेश्याएं, सरोवर आदि का वर्णन विस्तार से किया है।<sup>१</sup> प्राचीन काव्यों के विभिन्न वर्णनों की लेकर उन्होंने इस प्रसंग का निर्काह किया है। इस प्रसंग का आधार वाल्मीकि रामायण है। फिर भी इसमें मोल्ल की मौलिकता है।

२ सीता स्वयंवर : सीता के स्वयंवर में भाग लेने के लिए आये हुए राजकुमार उनके वाहन, शरासन<sup>२</sup> और उसे देखकर भयभीत होनेवाले राजकुमारों आदि का विस्तृत वर्णन मोल्ल रामायण में है।<sup>३</sup> धनुर्भंग के द्वारा राम के शैर्य पर प्रकाश पड़ता है।<sup>४</sup>

३ रात्रि का वर्णन ; अयोध्या कांड का यह प्रसंग वर्णन की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। चन्द्रोदय, अन्धकार की बाहों में मस्त रात विशृंखल वैश्या विहार, और सूर्योदय आदि का वर्णन मोल्ल ने विभिन्न अलंकारों में प्रस्तुत किया है।<sup>५</sup>

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ११९-२०

<sup>२</sup> वही, ११६६-८२

<sup>३</sup> वही, २११-२२

५८४ निषाथ वाला प्रसंग : गुह अन्योक्ति के द्वारा राम के पद रजों की महिमा बताकर उनके चरण प्रक्षालन करने की इच्छा प्रकट करता है। यह प्रसंग संक्षिप्त होने पर भी इस में मौलिकता है। साथ ही इसमें प्रकारांतर रूप से मोल्ल के हृदय में अपने इष्ट देव रामचन्द्र-जी के प्रति जी भक्ति भाव है उसकी मार्मिक अभिव्यक्ति भी हुई है।

५ शूर्पणखा का रावण को सीता की और आकर्षित करना : शूर्पणखा अरण्य काण्ड के आरंभ में राम और लक्ष्मण से अपमानित होती है और उनसे प्रतिशोध लेने के लिए रावण को सीता की और आकर्षित करने का प्रयत्न करती है। इस प्रसंग में शूर्पणखा सीता का नखशिख वर्णन रावण को सुनाती है। इस वर्णन में अश्लोलता की व्यंजना हुई है। उदाहरण के लिए द्रष्टव्य :

कुचमुलु बंगारु कुड़लो चक्रवा  
कम्मुलो चेलि केरुगंगारारुदु ।

... ... ... ... ...

पिरुदु पुलिनंबो मन्मदु पेंडिल यरुगो ।

(अर्थात् यह जानना कठिन है कि सीता के कुच, या स्वर्ण के घडे हैं या चक्रवाक के जोडे— — सीता के नितंब पुलिन हैं या मन्मथ की विवाह वेदिका है।) शृंगार रस का वर्णन करते

समय मोल्ल मर्यादा का उल्लंघन यत्र-तत्र करती है। तुलसी ने शृंगार रस के वर्णन में कहीं भी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया। तेलुगु के सोलहवों शताब्दि के साहित्य में राज्याश्रय में जितने वर्णनात्मक प्रबन्ध काव्य लिखे गये थे, सब में प्रायः शृंगार रस का ही विस्तृत वर्णन है। तत्कालीन 'साहित्य' का यत्किञ्चित प्रभाव मोल्ल पर पड़े बिना नहीं रह सकता। मोल्ल और तुलसी में इस अंतर का कारण यह दीखता है कि जहाँ तुलसी कवि होने के साथ लोकनायक भी थे, दास्य भाव के अग्रण्य भक्त थे, वहाँ मोल्ल में कवि पक्षा और सरल भक्ति भाव मात्र ही विद्यमान है।

६. राम का विरह वर्णन : अपहृत सीता का स्मरण करके राम विरह का अनुभव करते हैं। राम प्रकृति के चक्रवाकों को संबोधित करते हुए कहते हैं कि आप जैसी स्तनवाली सीता को अपने कहीं देखा है।<sup>१</sup> इस तरह विरह का अनुभव करनेवाले राम हमें साधारण मानव के समान दिखाई पड़ते हैं। मोल्ल के इस विरह वर्णन में काम वासना की व्यंजना उत्कठ रूप से हुई है। इस वर्णन को बढ़कर राम के प्रति पाठकों की सहानुभूति होती ही नहीं। तुलसी के इस प्रसंग में इस प्रकार की अश्ली-लता दृष्टिगोचर नहीं होती। तुलसी के विरह वर्णन में हृदय स्पर्शता है। साथ ही उसमें वैराग्य भाव का संस्पर्श भी है।

७ वालि-सुग्रीव युद्ध : वालि और सुग्रीव के युद्ध के समय राम तरु के पीछे खड़े होकर बाण चलानेवाले प्रसंग में विभिन्न अलंकारों की योजना हुई है।<sup>१</sup>

८ वर्षा ऋतु वर्णन : राम सीता की कल्पना करके वियोग में संयोग का अनुभव करते हैं। राम सीता को परिरंभण क्रीड़ा के लिए पुकारते हैं और उनके अधरामृत का आस्वाद करते की इच्छा प्रकट करते हैं।<sup>२</sup> विरहभग्न राम को भी कहुआ लगता है। मानस के किञ्चिक्धा काण्ड में उक्त प्रसंग नहीं है।

९ रावण का सीता से प्रणय की याचना करना ? अलंकृत रावण सीता के सामने खड़े होकर सीता के मुख, कुछ आदि का वर्णन करके अंत में मतेभ कुंभस्तनी कहकर संबोधन करता है।<sup>३</sup> भक्ति से प्रेरित रचना होने पर भी मोल्ल रामायण के इस प्रसंग में अश्लीलता ही अधिक है। मोल्ल कुछ आलोचकों के अनुसार विधवा थी। इस लिए उन्होंने अपने योन उद्रेगों की संभवतः इस रूप में अभिव्यक्ति पायी है। रावण के चरित्र को यहां मोल्ल ने नीचे गिरा दिया है। यही मोल्ल युद्ध काण्ड में एक विशेष सन्दर्भ में रावण के चरित्र को राम से भी ऊपर उठा देती है। चरित्रगत यह विषमता पाठकों को अखरता है। तुलसी के रावण में भी इस प्रकार की कामुकता नहीं है।

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण ४१९-१८

<sup>२</sup> वही, ४१९१-२८

<sup>३</sup> वही, ५१४९-५९

१० हनुमान का सीता को राम का रूप वर्णन सुनाना  
मोल्ल ने सुलभ शशदों में हनुमान के मुख से राम के रूप स्मैर्ट्र्य  
का वर्णन सुनाती है। इस प्रसंग के द्वारा मोल्ल की राम  
भक्ति पर कुछ प्रकाश बढ़ता है।<sup>१</sup>

११ लंकादहन और हनुमान का युद्ध : हनुमान लंका  
की राक्षस स्त्रियों में डर उत्पन्न करते हैं। वहाँ के दशग्रीव  
पिगलाक्ष, दीर्घ जिह्वा, शत जिह्वा, रुधिराक्ष, रक्त रोम, व्याघ्र  
कबल, शूल दष्ट आदि समस्त राक्षसों में युद्ध करते हैं। जंबु-  
माली, अक्षकुमार, आदि राक्षसों से हनुमान के युद्ध का मौलिक  
और विस्तृत वर्णन मोल्ल रामायण में है।<sup>२</sup>

१२ मेघनाथ और हनुमान के युद्ध का वर्णन : हनुमान  
के गर्जन की प्रतिक्रिया और हाथी, हय, रथ, शस्त्रास्त, छत्र  
का ध्वंस हीने का विस्तृत वर्णन और उन दोनों से प्रयोग किये  
गये विभिन्न अस्त्रों का वर्णन मोल्ल रामायण में है।<sup>३</sup> उस  
समय आनन्द, प्रदेश युद्धों से मुक्त था और जनता को म परिष्वंग  
में गहरी सांस लेने लगी। उस समय की कवयित्री हीने पर भी  
मोल्ल युद्ध के वर्णनों में बहुत ही सफल हुई हैं।

१३ वानरों का सुग्रीव के मधुवन में प्रवेश : इसमें मोल्ल  
वानरों की चेष्टाओं का स्वाभाविक ढंग से वर्णन करती है।

<sup>१</sup> वही, ५१९९-११०

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ५१९२५-१६४      <sup>३</sup> वही, ५१९६७-२०१

वानरों पर आक्रमण करनेवाले वन के माली को भी वानर सताते हैं। यह प्रसंग केवल हास्य रस उत्पन्न करने के लिए ही हैं।<sup>१</sup> यह प्रसंग मोल्ल के निरीक्षण शक्ति का परिचायक है।

१४ राम और लक्ष्मण का राक्षस परिवार से युद्ध : इन्द्रजीत का वानरों को बाधा पहुँचाना, कुम्मर्ण का वध, जांबवत का हनुमान की ओषधि लाने का आदेश देना, कुभनि-कुभों से राम लक्ष्मण का युद्ध, कंपन का अंगद के साथ युद्ध, प्रजग शोणिताक्ष आदि राक्षसों को अंगद का सहार करना आदि प्रसंगों को लेकर मोल्ल युद्ध का सजीव चित्र पाठकों के सामने प्रस्तुत करती है।<sup>२</sup>

१५ रावण राम का युद्ध : रावण का परिवार, वानरों का राक्षसों पर अत्याचार, अग्नि वरुण आदि बाणों का संधान विरूपाक्ष का वध लक्ष्मण की मूर्छा, हनुमान के पर्वत लाना, कालनेमि संहार आदि प्रसंगों का विस्तारसात वर्णन मोल्ल रामायण में है।<sup>३</sup>

१६ रावण यज्ञ का वानरों से ध्वय किया जाना? इस प्रसंग की मौलिकता इस बात में है कि रावण के यज्ञ को भंग करने के लिए अंगद मंडोदरी को खींच लाता है। मानस्त्र से इस तरह का उल्लेख नहीं है।

१ वही, ५१२३१-२४०

२ वही, ६-११५०-१३०

३ मोल्ल रामायण, ६-२१८-७३

१७ दूसरी बार रावण का युद्ध पैं लिए मन्त्र छ होता : विविध वादों को बजाते हुए सेना वाहिनी के साथ रावण का प्रवेश, समस्त सेना का नाश, प्रसिद्ध वीरों की मृत्यु आदि मोल्ल की विशेष प्रसंग योजना का प्रतिनिधित्व करती हैं।<sup>१</sup>

१८ रावण का चरित्र एक नियम बद्ध योद्धा के रूप में : जब राम पृथ्वी पर और रावण रथ पर युद्ध करते हैं तब यह अनुचित समफकर रावण सारथि के साथ रथ और कवच को भेजते हैं। विभीषण का सुफाव देने पर राम वज्र कवच को ही स्वीकार करते हैं।<sup>२</sup> मोल्ल ने रावण के चरित्र को बहुत ऊपर उठाया है। मानस में रावण का इस प्रकार चरित्र गत उत्कर्ष कहीं भी दिखायी नहीं देता। मोल्ल के राम में मानकीय दुर्बलताएं भी कुछ प्रसंगों में दिखाई पड़ती हैं। पर तुलसी यह कभी सहन करने को तैयार कदाचित नहीं है कि इन के राम में चरित्रगत या अन्य प्रकार की दुर्बलताएं हो। इस प्रकार यहां मोल्ल और तुलसी के चरित्र चित्रण प्रणाली में अंतर दिखाई पड़ता है। संभवतः रंगनाथ रामायण के प्रभाव से मोल्ल ने रावण के चरित्र को ऊचे उठाने की कोशिश की।

१९ रावण मरण के बाद राम के सीता का तिरस्कार : साध्वीमणी सीता जब पहली बार पति के मुह से अपने शील के कलंकित होने की बात सुनती है तो वह मूर्छित हो जाती है।

१ वही, ६-३। २६-४५

२ वही, ६-३। ४८-५१

मोल्ल के समय में स्त्री केवल भोग्या मानी जाती थी। इस प्रवृत्ति के विरद्ध विद्रोह करके मोल्ल सीता को सौशील्यता की घोषण करती है। वैसे वाल्मीकि रामायण में भी इसी रूप में यह प्रसंग दृष्टिगत होता है।

२० राम का राज्याभिषेक और राम राज्य का परिचयः  
मोल्ल परिसंख्या अलंकार में रामराज्य का संक्षिप्त परिचय देती है। उस रचना के अंत में राम को महिमा, राम के नाम संकीर्तन का फल और पूरुषार्थ की सिद्ध देनेवाला कह कर राम की स्तुति मोल्ल करती है।

### १-२२ निष्कर्ष :

वाल्मीकि रामायण से अत्यंत प्रभावित होने पर भी कई प्रसंग ऐसे हैं जिनमें मोल्ल की निजी मौलिकता की छाप है। सुन्दरकाण्ड राम का विरह, शूर्पणखा के द्वारा सीता का नख-गिर्ध वर्णन, रावण के सीता का अंगांस वर्णन और युद्ध काण्ड के विस्तृत वर्णन आदि प्रसंगों में मोल्ल ने अपनी मौलिकता से कमाल कर दिया। मोल्ल की विशेष प्रसंग योजना में तथ्यों का यथार्थ और सजीव चित्रण है और उन प्रसंगों का आकलन तत्कालीन सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार है।

### १-३ तुलसी की विशेष प्रसंग योजना :

वाल्मीकि रामायण आदि ग्रंथों के अतिरिक्त तुलसी

श्रीमद्भागवत से अत्यंत प्रभावित थे।<sup>१</sup> फिर भी तुलसी की मौलिकता भी यत्-तत् विद्यामान थी। तुलसी की विशेष प्रसंग योजना के लिए यह देखा जायेगा कि उनकी रचना पर भागवत का क्या प्रभाव है जिसकी चर्चा यहां की जावही है।

### १-६१ मानस पर भागवत का प्रभाव :

१ भागवत में कल्पवृक्ष के रूपक के आधार पर तुलसी ने मानस के आरंभ में रामचरित मानस के रूपक को प्रस्तुत किया है। अन्य प्रसंग में तुलसी ने राम कथा को कल्पना तरु भी कहा है।

२ मानस में भागवत के समान संवाद हैं। फिर भी इन संवादों में कथानक रूढियों का जिस रूप में निर्वाह हुआ है उस रूप में भागवत में नहीं।

३ एक अखण्ड प्रवाह के समान मानस में रामकथा आगे बढ़ती है। तुलसी ने मानस की कथावस्तु में पौराणिक ढाचे को प्रस्तुत किया।<sup>२</sup> तुलसी ने प्रकृति वर्णन को भी नैतिकता और आध्यात्मिकता में संयुक्त कर दिया।

४ तुलसी के पूर्व संस्कृत रामकाव्यों में रावण जन्म तपस्या, वरदान प्राप्ति, राक्षसों का अत्याचार आदि प्रसंग

<sup>१</sup> रामरत्न भटनागर, तुलसी की मौलिकता, पृ. १६५

<sup>२</sup> इन्द्रनाथ मदान, तुलसीदास, चिंतन और कला, पृ. १६८

रावण वध के उपरांत हैं। परं तुलसी ने उन्हें राम जन्म की भूमिका में ही प्रस्तुत किया है।<sup>१</sup>

५ श्रीमद्भगवत् गीता के जैसे भागवत् में दार्शनिक विषयों का चित्रण है। मानस के उत्तर काण्ड में कुछ पृष्ठों में कथा विवेचन है और शेष पृष्ठों में आध्यात्मिक विवेचन है। मानस के उत्तरकाण्ड में काकमुसुंडि और गरुड के संवाद का वही स्थान है जो भागवत् में एकादश संकंध का है।

६ मानस की कथा महात्म्य वर्णन के साथ समाप्त होती है। किष्किधा काण्ड में वर्णित वर्षा और शरदकृतुओं पर भागवत् का प्रभाव है। ऐसे संदर्भों में भी तुलसी की दृष्टि नैतिक तत्वों पर अधिक है।

७ इसी प्रकार तुलसी ने मौलिक रूप से जानकी के सौंदर्य का वर्णन किया है। मानस के उत्तर काण्ड पर भागवत् के कलियुग का प्रभाव है। लेकिन तुलसी ने उसके माध्यम से व्यक्ति में संतत्व और समष्टि में राम राज्य की प्रतिष्ठा करना ही अपना लक्ष्य मान लिया।<sup>२</sup> भागवत् के नाम संकीर्तन के जैसे मानस के कथारंभ में राम नाम के महात्म्य का वर्णन है।<sup>३</sup> मानस में संत-असंत, ज्ञान-भक्ति, वर्णश्रम धर्म आदि को

१ रामचन्द्र शुक्ल, तुलसी दास, पृ. २२

२ डा. श्रीधर सिंह, तुलसीदास की कारणिती प्रतिमा का अध्ययन, पृ.

३ मानस, ११११-२७

मान्यता मिली है। दार्शनिक भावों की कल्पना में भी भागवत और मानस में समानता है। मानस में तुलसी ने जिस अद्वैत को अपनाया था वह शंकर के अद्वैत और रामानुज के विशिष्ठाद्वैत से भिन्न है। उनका राम निर्गुण परब्रह्म हैं जो भक्तों की प्रसन्नता और धर्म की रक्षा के लिए नर का रूप धारण का लेता है।<sup>१</sup>

तुलसी के चरित्र चित्रण में भी कुछ आलोचक भागवत के प्रभाव को खोजते हैं। उनके अनुसार तुलसी के भरत का चरित्र भागवत के उद्घव के आधार पर ही हुआ है।

### १-३२ तुलसी की मौलिकता :

१ राम के व्यक्तित्व की स्थापन और राम-भक्ति के प्रसार और प्रचार में तुलसी की मौलिकता है, अपने राम में परब्रह्म की प्रतिष्ठा के लिए तुलसी ने राम के नराश्रय, सुराश्रय और अक्षराश्रय रूपों का उद्घाटन किया है।<sup>२</sup>

३ इसी महान उद्देश्य से प्रेरित होने के कारण वस्तु और चरित्र चित्रण दिव्य बन पडे हैं। तुलसी ने जय विजयों के शाप विमोचन के लिए वराह और नरसिंहावतारों की कल्पना की है।

३ जलधर और प्रतापभानु की कथा को लेकर राम-

१ तुलसी की मौलिकता, रामरत्न भट्टनागर, पृ. १६९

२ मानस का कथा लिल्द, डा. श्रीधर सिंह, पृ. ६९

वतार का विवेचन तुलसी ने किया। इस प्रकार चार विभिन्न धाटों की कल्पना मानस में है। शिव-पार्वती संवाद एक भूमिका है जिसकी वजह से तुलसी ने विष्णु के अवतार सगुण-राम को दाशरथी राम से ऊपर उठाकर ब्रह्मात्व प्रदान किया।<sup>१</sup> शिवकथा भागवत से संबन्धित है। फिर भी उसे जान बूझकर तुलसी ने रामकथा की भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया।

६ आरंभ में तुलसी ने राक्षसों के अत्याचार का वर्णन विशिष्ट रूप में किया और शिव के मुह से कहलवाया कि हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम में प्रकट होहि में जाना।<sup>२</sup> बालकाण्ड के प्रारंभ में यह जो कल्पना है। वह तुलसी की भावान्विति का बहु सूक्ष्म प्रसार है। तुलसी ने रचना की इस विधा के कारण भनोभूमि और आध्यात्मिकता पाई है। जहां बालकाण्ड में उन्होंने भावभूमि को मायता दी, वहां सगुण राम निर्गुण राम की सहस्रशः विस्तृति कर लेते हैं। तुलसी इसके माध्यम से पुरुष सूक्त के विराट्त्व को स्पष्ट करते हैं।<sup>३</sup>

५ तुलसी ने कथा, चरित्र, भाव और भाषा की सारी शक्ति सगुण निर्गुण की द्वन्द्वात्मकता के शमन में लगाया है। तुलसी शिव के मुह से भी राम की प्रशंसा कराते हैं। तुलसी का निजी भक्ति भाव राम कथा के पात्रों के चरित्र का एक

१ तुलसीदास : चिंतन और कला इन्द्रनाथ मदान, पृ. ३८४

२ तुलसीदास, स. उदयमान सिंह, पृ. २०६

३ तुलसी की मौलिकता, रामरत्न भट्टनागर, पृ. १८६

अंग बन गया है। तुलसी के चरित्र-चित्रण की विशेषता यह है कि प्रतिपक्षी रावण भी प्रच्छन्न रामभक्त है।

६ तुलसी ने अपनी रचना के माध्यम से राम के लीला-त्मक चिन्मय और विराट स्वरूप पर प्रकाश डाला। तुलसी ने दास्य भक्ति का निरूपण भी मानस में किया है। साथ ही तुलसी ने तत्कालीन समस्याओं का समाधान भी प्रस्तुत किया।<sup>१</sup>

७ मानस में तुलसी ने जिन सांस्कृतिक घटनाओं का उल्लेख किया उनका संबन्ध भारतीय संस्कृति से है। ये घटनाएं तुलसी की वाणी का बल पाकर हरेक के जीवन पर प्रभाव डालने में समर्थ हुई हैं। तुलसी का व्यक्तित्व, साधना एवं उनके संकल्प विकल्प में ही उनका प्रसार है।

८ तुलसो में हृदयवाद और बुद्धिवाद का सामंजस्य है। वे भक्ति अथवा सुकृति के लिए बाह्य साधनों की अनिवार्यता को स्वीकार नहीं करते। अपने अद्वैत सिद्धान्त से उन्होंने नास्तिकों में भी भगवान की सत्ता पर आस्था अत्पन्न किया।<sup>२</sup> तर्क और श्रद्धा तथा विरक्त और आसक्ति का सुन्दर सामंजस्य करके उन्होंने बुद्धिवाद और हृदयवाद का सामंजस्य किया है।<sup>३</sup>

९ तुलसी में सनातन हिन्दू धर्म का विशुद्ध रूप है। उन्होंने

<sup>१</sup> तुलसोदास, उदयमानसिंह, पृ. २०९

<sup>२</sup> तुलसीदास, उदयमानसिंह, पृ. २०७

<sup>३</sup> तुलसीदास की विशेषता, बलदेव प्रसाद मिश्र, पृ. २०९

इस संसार के जड़ चेतन सभी पदार्थों को सियाराममय समझकर इन सब की वंदना करते हैं। तुलसी की वाणी में गीता का अनासक्ति योग, बौद्ध-जैनों की अहिंसा, शैव-वैष्णवों का वैराग्य-अनुराग और शंकर, रामानुज मध्वचार्य के सिद्धान्तों का समन्वित रूप है। हिन्दुओं के विविध सांप्रदायों के प्रभाव के साथ मुसलमानों का मानव बंधुत्व और ईसाइयों का श्रद्धा काहण्य से पूर्ण सदाचार भी तुलसी मत में हैं।

१० तुलसी लोक हित के लिए क्रांतिकारी तत्व या खण्डन मंडन की प्रवृत्ति को नहीं अपनाते हैं। उनकी लोकसेवा में हृदय और बुद्धि दोनों की प्रेरणा है। मानव सेवा को विभु सेवा का प्रधान रूप मानकर व्यवहार और परमार्थ में उन्होंने सामंजस्य उपस्थित किया है।

### १-३३ निष्कर्ष ;

इस प्रकार तुलसी ने भागवत से अत्यंत प्रभावित होने पर भी अपनी मौलिकता का भी प्रदर्शन किया। हृदय और बुद्धि में समन्वय लाकर तुलसी ने आगे के कवियों के समक्ष उपयुक्त द्रष्टा और स्नष्टावाले रूपों को प्रस्तुत किया है।

### १-४ विस्तारणत तुलना : प्रवृत्ति और परिमाण :

वास्तव में मोल्ल रामायण और मानस दोनों भक्ति से प्रेरित रचनाएं हैं। जहां मानस में मर्यादा का पालन अधिक

दीखता है वहां मोल्ल रामायण में उसका अभाव दृष्टि गोचर होता है। परिमाण की दृष्टि से इन दोनों काव्यों की कोई तुलना नहीं है। क्योंकि मानस जहां पौराणिक महाकाव्यों के अंतर्गत आता है वहां मोल्ल रामायण एक संक्षिप्त या लघु काव्य है। मोल्ल की दृष्टि मुन्दर और युद्ध काण्डो में अधिक रभी। उन्की मौलिक प्रतिभा का परिचय उन्हीं स्थानों में प्रायः अधिक दीखता है। ऐसा होते हुए भी दोनों काव्यों में ऐसे अनेक स्थल हैं जहां प्रवृत्तिगत समानताओं को देखा जा सकता है। नीचे इनका विवरण दिया जा रहा है।

### १-४१ बालकाण्ड :

१ रामलक्ष्मण के द्वारा यज्ञ की रक्षा : इस प्रसंग को मोल्ल और तुलसी ने समान रूप से वर्णित किया है। ताड़का मारीच और सुबाहु का वध करके राम और लक्ष्मण विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा करते हैं। इस प्रसंग से संबन्धित छंद मोल्ल रामायण में ८ हैं और मानस में ३ दोहा चौपाई छंद हैं।<sup>१</sup>

२ सीता स्वयंवर : मोल्ल और तुलसी दोनों इस प्रसंग के अंतर्गत आहूत राजकुमार और उनकी सेना वाहिनी का वर्णन प्रस्तुत करते हैं। धनुष का आकार, उसे देखकर राज-कुमारों के मन में होनेवाली प्रतिक्रिया, धनुर्भग का सृष्टि पर

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण : ११५१-५९

मानस : ११२०५-२१०

प्रभाव आदि का वर्णन करके दोनों ने राम की असीम शक्ति की और संकेत किया है।<sup>१</sup>

३ परशुराम का पराजय : परशुराम श्रीरामचन्द्र जी को युद्ध के लिए ललकारता है और ब्राह्मण होने के कारण राम इनकार करते हैं। परशुराम से दिये गये धनुष को राम भंग करते हैं और पराजित परशुराम जंगल में जाते हैं।<sup>२</sup> यह प्रसंग दोनों रामायणों में समान है। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग १२ छंदों में हैं और मानस में २२ दोहा-चौपाईयों में।

१-४२ अयोध्याकाण्ड :

४ गुह को आत्मीयता : इस प्रसंग की रचना में मोल्ल और तुलसी दोनों आध्यात्म रामायण से अत्यंत प्रभावित हैं। मानस महाकाव्य होने के कारण यहाँ लक्ष्मण के द्वारा गुह को उपदेश दियाला गया है। मानस का मोल्ल-माला गुह शिला और काष्ठ में अंतर नहीं पाता। उसकी उक्तियों से भक्ति भाव की सुन्दर व्यंजना हुई है।<sup>३</sup> मोल्ल रामायण का गुह

१ मोल्ल रामायण, ११६५-७०

मानस : ११२२८-२३१

२ मोल्ल रामायण, ११८४-९६

रामचरित मानस, ११२७२-२८३

३ मोल्ल रामायण, २१३१-३३

मानस, २१८८-१४२

केवल भक्ति का ही उल्लेख करता है और उनका उक्ति वैचित्र्य मानस के जैसे विकसित रूप में नहीं है :

सुडिगोनि रामु पादमुलु सोकिन धूलि वहिंचि रायिये  
र्पड नोक कांत यथ्ये नट पन्नुग नीतनि पाद रेणु वि  
य्येड वडि नोड सोक निदि येमगुनो यनि संशयात्मुडै  
कडिगे गुहुंडु राम पद कंज युगंबु भयम्मु पेंपुनन् ॥१

५ भरत का नन्दि गांव और उनका ऋषि धर्म : भरत जब राम से मिलने के लिए आते हैं तब राम भरत को ढाढ़स बांधकर अपनी पादुकाओं को प्रदान करते हैं। उन्हें सिहासन पर रखकर स्वयं राज्य को राम की धरोहर के रूप में मानते हैं। मोल्ल ने इस प्रसंग को तीन छंदों में वर्णित किया और तुलसी ने भी तोन दोहे-चौपाइयों में। दोनों की दृष्टि भक्ति और करुणा की और थी और उसी के अनुरूप प्रसंग की सीमा स्वल्प होने पर भी उसमें रचनागत मौलिकता है।<sup>१</sup>

#### १-४३ अरण्य काण्ड :

६ खर और दूषण आदि राक्षसों का वध : मोल्ल-रामायण के अरण्य काण्ड में राम सीता को गुप्त स्थल में रखकर राक्षसों से युद्ध करते हैं। इस प्रसंग में खर का विकृत रूप, खर और राम का युद्ध और राम का उन्हें संहार करना आदि का

१ मोल्ल रामायण, २।३२

२ मोल्ल रामायण, २।३६-४२, मानस : २।३२३-३२६

वर्णन है। मानस में भी इसी तरह का वर्णन है। मोल्ल रामायण में ८ छंदों में यह प्रसंग वर्णित है और मानस में ३ दोहे चौपाइयों में।<sup>१</sup>

**७ सीता हरण :** रावण ब्राह्मण के रूप में आकर सीता का हरण कर लेता है। सीता प्रकृति से प्रार्थना करती हुई अपनी वेदना सुनाती है। स्वी होने के नाते मोल्ल को सीता की यह दुरवस्था अधिक खटकती है। प्रस्तुत प्रसंग वर्णन में इस बात की छाप देखी जा सकती है। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग ९ छदों में वर्णित है और मानस में ५ दोहा-चौपाइयों में।<sup>२</sup>

#### १ ४४ किञ्चिकधा काण्ड :

**८ वालि का वध :** मोल्ल रामायण के इस प्रसंग में वालि और सुग्रीव का भयंकर युद्ध वर्णित है। तरु के पीछे राम खड़े होकर वालि का वध करते हैं। मोल्ल इस प्रसंग का ६ छंदों में वर्णन करती है और तुलसी ९ दोहा चौपाइयों में।<sup>३</sup>

#### ९ वर्षाकृत वर्णन : मोल्ल और तुलसी दोनों समान

१ मोल्ल रामायण, ३। ११-१२

२ मानस, ३। ११८-१२०

३ मोल्ल रामायण, ३। २७-२९

मानस ३। २१-२६

४ मोल्ल रामायण ४। १-१४

रूप से इस प्रसंग का वर्णन करते हैं। तुलसी के इस प्रसंग में प्रकृति का मानवीकरण है। राम इस प्रसंग में लक्ष्मण को भक्ति और ज्ञान का उपदेश देते हैं। लेकिन मोल्ल के इस प्रसंग में लौकिक काम जनित विप्रलंभ शृंगार का वर्णन है।<sup>१</sup> मोल्ल इस प्रसंग के ६ छंदों में वर्णित करती है। और तुलसी ३ दोहां चौपाइयों में।

#### १-४५ सुन्दरकाण्ड :

१० हनुमान और सीता का मिलन : इस प्रसंग के अंतर्गत मोल्ल रावण का परिचय देती है जो सुसज्जित होकर सीता से प्रेम की याचना करता है और बाद में राक्षस स्त्रियों को सीता को मारने की आज्ञा देता है। मोल्ल रामायण में प्रसंग २९ छंदों में वर्णित है जिसके द्वारा रावण की वासता, उग्रता और सीता की पातिव्रत्य का संकेत मिलता है। तुलसी केवल सीता के विरह का ही वर्णन करते हैं। तुलसी का लक्ष्य सांस्कृतिक पुनरुज्जीवन की प्रतिष्ठा है,<sup>२</sup>

११ लंका दहन : मोल्ल इस प्रसंग में हनुमानि के पराक्रम से रावण को परिचित कराती है। विभिन्न राक्षसों को

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ४।१९-२४

मानस, ५।१३-१६

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ५।४२-७५

मानस, ५।१०-१३

पराजित करके हनुमान कौतुक के साथ उन्हें बाधा पहुंचाते हैं। मोल्ल इस प्रसंग का वर्णन ४० छंदों में करती है और तुलसी ९ दोहे-चौपाइयों में। तुलसी का लक्ष्य है हनुमान के पराक्रम से रावण को परिच्छित करना और तद्वारा रावण को ज्ञात कराना कि उस सेवक का मालिक और कितना पराक्रमी होगा।<sup>१</sup>

१२ मेघनाथ का युद्ध : मोल्ल रामायण<sup>२</sup> के इस प्रसंग में मेघनाथ का वानरों को सताना और हनुमान की वीरता का प्रदर्शन और अंत में हनुमान मेघनाथ के ब्रह्मास्त्र से बंधित होने का विषय आदि वर्णित है। हनुमान से मारे गये अनेक राक्षसों की सूची इस प्रसंग में है। मोल्ल इस प्रसंग को १२ छंदों में वर्णित करती है। लेकिन मानस में यह प्रसंग विस्तृत रूप में वर्णित नहीं होने पर भी मेघनाथ के ब्रह्मास्त्र से हनुमान के बांधत होने का उल्लेख है।<sup>३</sup>

१३ विभीषण की शरणागति : यह प्रसंग मोल्ल रामायण के युद्ध काण्ड में है। विभीषण राम के ईश्वरत्व का संकेत रावण को देता है। अपने भाई से तिरस्कृत होकर विभीषण राम की हरण में जाता है। मोल्ल ने इस प्रसंग को १४ छंदों में वर्णित किया। तुलसी इस प्रसंग का उल्लेख सुन्दर काण्ड में

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ५१९५-२२३

मानस : ५१९८-२७

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ५१७८-१९०

मानस : ५१७९-७५

ही करते हैं। कथा भी वैसी ही है। व जैसे मोल्ल रामायण में हैं और तुलसी २२ दोहे-चौपाइयों में वर्णन करते हैं।<sup>१</sup>

**१४ समुद्र शासन :** मोल्ल कै इस प्रसंग में समुद्र मानव रूप धारण करके राम को सलाह देता है कि अगर पुल नल नामक व्यक्ति से बांधा जाय तो वह सुरक्षित रहेगा। मोल्ल इस प्रसंग को ९ छंदों में वर्णित करती है और तुलसी १० दोहे-चौपाइयों में। मानस के इस प्रसंग में समुद्र विप्र का रूप धारण करके राम ईश्वरत्व को प्रशंसा करते हैं।<sup>२</sup>

#### १-४६ लंका काण्ड :

**१५ लक्ष्मण मूर्छा :** मोल्स रामायण के अनुसार रावण के बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं। लेकिन तुलसी के अनुसार लक्ष्मण मेघनाथ के ब्रह्मास्त्र से मूर्छित होते हैं। बाद वाला प्रसंग दोनों में एक सा है। रावण से भेजे गये कालनेमि का वध करके पर्वत को लाते हैं। मोल्ल इस प्रसंग को ४० छंदों में वर्णित करती है और तुलसी १६ दोहे-चौपाइयों में।<sup>३</sup> विभीषणपर प्रहार किये गये बाण के सामने खड़े होने के कारण लक्ष्मण मूर्छित होते हैं।

१ मोल्ल रामायण : ६-११९०-२४

मानस : ५१२७-४९

२ मोल्ल रामायण ६-१३६-४४

मानस : ५१५०-६०

३ मोल्लरामायण, ६-२१४३-८३

मानस ५१४४-६०

१६ कुंभकर्ण वधः : दोनों राम काव्यों में यह प्रसंग समान रूप से है; मोल्ल के अनुसार विभीषण और कुम्भकर्ण रावण को युद्ध से विमुख करने का प्रयत्न करते हैं। जब यह प्रयत्न असफल होता है तब कुम्भकर्ण जाकर युद्ध करते हैं और लक्ष्मण उन्हें मार डालते हैं। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग लक्ष्मण मूर्छा के पहले ही है। तुलसी इस प्रसंग को लक्ष्मण मूर्छा के उपरांत प्रस्तुत करते हैं। मोल्ल ने इस प्रसंग की ३ छंदों में वर्णित किया है और तुलसी ने ९ दोहा-चौपाइयों में।<sup>१</sup>

१७ लक्ष्मण के द्वारा मेघनाथ का वधः मोल्ल के अनुसार वायु बाण को मेघनाथ लक्ष्मण पर प्रयोग करता है। लेकिन गंधर्व शर से लक्ष्मण मेघनाथ का वध करते हैं। मोल्ल इस प्रसंग को १० छंदों में वर्णित करती है। और तुलसी ४ दोहा-चौपाइयों में।<sup>२</sup> लेकिन तुलसी के अनुसार लक्ष्मण प्रतिज्ञा करने हैं कि यदि मैं मेघनाथ को नहीं मारा तो मैं राम का नाच्चा सेवक होने योग्य नहीं।

१८ रावण यज्ञ ध्वंसः : मोल्ल के अनुसार राम को विभीषण के द्वारा पता चलता है कि युद्ध में विजय पाने के लिए रावण यज्ञ कर रहा है। उस समय वानर वहाँ जाकर यज्ञ को नष्ट करते हैं। जब रावण का यज्ञ भंग नहीं होता तब

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-२१५०-५३

मानस : ६।६२-७१

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ६-२११०३-११३

मानस : ६।७१-७५

अंगद मंडोदरी को रावण के सामने खींच लाता है। मानस में मंडोदरी को खींच लाने का प्रसंग नहीं है। लेकिन रावण के यज्ञ को वानर ध्वंस करते हैं। मोल्ल इस प्रसंग को ९ छंदों में वर्णित करती है और तुलसी चार दोहा-चौपाइयों में।१

१९ रावण का माया युद्ध : मोल्ल ने रावण के माया युद्ध का विस्तृत वर्णन किया है। बाण को छोड़कर रावण घटाओं के पीछे छिप जाता है। जब राम रावण के हाथ-पैर काटते हैं फिर उसके स्थान पर दूसरे हाथ पैर उत्पन्न होते हैं। मोल्ल इस प्रसंग को ३६ छंदों में वर्णित करती है और तुलसी १२ दोहा-चौपाइयों में।२

२० सीता की शुद्धि : तुलसी के अनुसार राम अपने प्रभाव से माया सीता की कल्पना करते हैं, जिसे रावण हरण करता है। रावण वध के बाद राम हनुमान को भेजते हैं और अग्नि से पूर्व स्थापित रूप प्राप्त करने के लिए राम सीता को कठोर वचन सुनाते हैं। तुलसी इस प्रसंग को दो दोहा-चौपाइयों में वर्णित करते हैं। लेकिन मोल्ल के राम की दृष्टि में सीता कलंकित है। इसी लिए राम उनका परित्याग करने के लिए तैयार होते हैं। और विष्णु आकाशवाणी के रूप में कहते हैं कि सीता पवित्र है। मोल्ल इस प्रसंग को चार छंदों में वर्णित करती है।३

- |                             |                  |
|-----------------------------|------------------|
| १ मोल्ल रामायण, ६-३१३-११    | मानस : ६१८५-८९   |
| २ मोल्ल रामायण, ६-३१६३-१८   | मानस : ६१९१-१०३  |
| ३ मोल्ल रामायण, ६-३१९९४-११७ | मानस : ६१९०७-१०९ |

२१ राम का लंका से प्रस्तान और पुष्पक यात्रा : इस प्रसंग में मोल्ल विभीषण के राज्याभिषेक से आरंभ करके राम की पुष्पक यात्रा तक वर्णन करती है। उस समय राम सीता को विभिन्न स्थल दिखाते हैं। मोल्ल इस प्रसंग को १२ छंदों में वर्णित करती है। और तुलसी ३ दोहे-चौपाईयों में।<sup>१</sup> तुलसी के इस प्रसंग में राम के हृदय की व्यग्रता का सहज अनुमान चिह्नित है।

२२ हनुमान की प्रेरणा : मोल्ल के इस प्रसंग में राम अपना आगमन भरत को ज्ञात कराने के लिए हनुमान को भेजते हैं। हनुमान भरत को समय के सदुपयोग का उपदेश देते हैं। मोल्ल इस प्रसंग को ५ छंदों में वर्णित करती है और तुलसी ३ दोहा-चौपाईयों में उत्तर काण्ड में वर्णित करते हैं।<sup>२</sup> तुलसी के इस प्रसंग में राम भरद्वाज मिलन का प्रसंग वर्णित है और समय की सदुपयोगिता की ओर भी संकेत है।

### १-४७ निष्कर्ष :

मोल्ल रामायण में उत्तर काण्ड काला प्रसंग नहीं है। छ : काण्डों में लगभग समान प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। उद्देश्य की समानता होने पर भी दोनों की रचना और शैली में अंतर है।

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-३११३-१२५ मानस : ६१११८-१२१

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ६-३११२६-१३० मानस : ७१५

### १-५ प्रेरणा स्रोतों की दृष्टि से तुलना :

मानस और मोल्ल रामायण दोनों में मौलिकता होने पर भी वे कुछ अन्य ग्रंथों से अवश्य प्रभावित हैं। मुख्य रूप से वे दोनों आध्यात्म रामायण और वाल्मीकि रामायण से अधिक प्रभावित हैं। नीचे मानस और मोल्ल रामायण पर उक्त ग्रंथों का प्रभाव दिखाया जा रहा है।

### १-५१ वाल्मीकि रामायण से प्रेरणा :

१ तुलसी ने वाल्मीकि के राम को ही मानस का प्रधान नायक माना जिसने विष्णु वंश संभूत हो कर शिष्ठ रक्षण के लिए नर का अवतार लिया है। साथ ही तुलसी ने गम को परब्रह्म के रूप में माना जो मानवीक दुर्बलताओं से परे होकर भी गाय, ब्राह्मण और साधुओं की रक्षा के लिए अवतरित हुए हैं।<sup>१</sup> मोल्ल का राम विष्णु वंश संभूत नर है जिसका उद्देश्य दुष्ट राक्षसों का संहार करना है।

२ वाल्मीकि के राम के दुर्बल रूप का तुलसी ने पूर्णतः तिरस्कार किया है। लेकिन मोल्ल वाल्मीकि के राम के जैसे अपने राम को प्रस्तुत करती है जो नर होने के नाते भौतिक राम विरागों से अत्यंत प्रभावित है।<sup>२</sup> एक साधारण मानव के जैसे वे संयोग वियोग आदि का अनुभव करते हैं।

<sup>१</sup> इन्द्रनाथ मदान, तुलसीदास चिंतन और कला, पृ. १७१

<sup>२</sup> रामराम घटनागर, तुलसी की मौलिकता, पृ. १७२

३ वाल्मीकि के सभी पात्र राम भक्त हैं। और उनका व्यवितत्व भक्त और साधारण पात्र दोनों रूपों में दिखाई पड़ता है। वाल्मीकि के पात्र कभी कभी मार्यादा को भी छोड़ते हैं। लेकिन तुलसी के पात्र किसी भी परिस्थिति में मर्यादा का उल्लंघन नहीं कर सकते। दशरथ की दुर्बलता और मानसिक संघर्ष को वाल्मीकि ने जिस रूप में उल्लेख किया है उस रूप में तुलसी और मोल्ल ने नहीं कर पाये हैं। अपनी सीमा का अतिक्रमण करते हैं। मोल्ल के पात्रों में कोई रामभक्त नहीं हैं।

४ वाल्मीकि रामायण में जो राज नैतिक चक्र चलता है उसका चित्रण मोल्ल रामायण और मानस में नहीं है। वाल्मीकि के राम का हरेक काण्ड में एक एक रूप में माक्षात्कार होता है। और उसी तरह की पद्धति को मोल्ल ने अपनायी है। इस का कारण यह है कि दोनों के दृष्टिकोणों के अनुसार राम श्रेष्ठ मानव भी है।

५ तुलसी ने लक्ष्मण के पात्रों में वाल्मीकि के लक्ष्मण के उग्र रूप को स्वीकार करते हुए भी उसमें आध्यात्म रामायण के लक्ष्मण के भक्त रूप को भी संलग्न कर दिया है। मोल्ल रामायण का लक्ष्मण राम के भक्त और सेवक हैं। उसमें उग्र रूप की छाया दिखायो नहीं पड़ती।<sup>१</sup>

६ वाल्मीकि के भरत के जैसे तुलसी का भरत राम के

<sup>१</sup> इन्द्रनाथ मदान, तुलसीदास, चिंतन और कला, पृ १७६

शील पर शंका प्रकट नहीं करते। मोल्ल का भरत राम की अत्यंत प्रिय लगता है और एक दूसरे के प्रति समे भाई के समान प्यार प्रकट करते हैं। वाल्मीकि और तुलसी के भरत अपनी माता के प्रति धृणा व्यक्त करते हैं लेकिन मोल्ल का भरत करुणा और उद्घेग के साथ राम के राज्य का राम की और से प्रतिनिधित्व करते हैं।<sup>१</sup>

७ तुलसी के दशरथ परब्रह्म राम के शोक में पर जाते हैं। लेकिन वाल्मीकि और मोल्ल के दशरथ राम के वनगभन के पश्चात् पश्चात्ताप की आग में जलते हुए मर जाते हैं। मानस के अयोध्याकाण्ड के पूर्वार्थ में मनोवैज्ञानिक चित्रण होने पर भी वह प्रसंग वाल्मीकि रामायण के प्रसंग के समान लोक-प्रिय नहीं हो सका।<sup>२</sup>

८ वाल्मीकि की कौसल्या राम को दिये मये दंड से व्यव्र होकर दशरथ को स्वकं आत्म हत्या कर लेने को धमकी देती है। मोल्ल और तुलसी की कौसल्या उस रूप में हमें दिखाई नहीं पड़ती।

९ वाल्मीकि रामायण में सुमित्रा लक्ष्मण को राम के प्रति कर्तव्य की शिक्षा देती है। इसी के आधार पर तुलसी की सुमित्रा लक्ष्मण को राम के परब्रह्मत्व की शिक्षा देती है।<sup>३</sup>

१ रामरत्न भाटलगढ़, तुलसी की मौलिकता, पृ. १७५

२ हिन्दी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, पृ. १७१

३ तुलसीदास चिंतन और कला : इन्द्रलाल शर्मा, पृ. १७७

१० तुलसी रामभक्ति में पड़कर कैकेई के चरित्र को अच्छी तरह चित्रित नहीं कर पाये। मोल्ल भी कैकेई के चरित्र को उभरने नहीं देती। दशरथ मरण के बाद जब कैकेयी वन में राम से मिलती है तब उसके हमें माता का सहज अनुराग दिखाई पड़ता है।

११ वाल्मीकि का गुह केवलु केवट है। जो गंगा को पार करने में राम को सहायता देता है। लेकिन तुलसी केवट की इस वृत्ति और नाम के आधार पर रूपक बांधते हैं जिसमें ज्ञान और भक्ति का समन्वय है। मोल्ल रामायण का गुह बिल्कुल मानस के कुह के समान है जो राम के चरणों को श्रीने की इच्छा को वकोवित के द्वारा व्यक्त करने अपनी भक्ति प्रकट करता है।<sup>१</sup>

१२ वाल्मीकि रामायण का कुभकर्ण नीति-कुञ्जल और धर्मज्ञ है। लेकिन राम चरित मानस का कुम्भकर्ण राम के परब्रह्मत्व का ज्ञाना है जो अपने भाई को भी उसके बारे में उपदेश देता है। उसी तरह मोल्ल रामायण का कुम्भकर्ण रावण को उपदेश देता है कि वह पुनः सीता को लौटा दें।<sup>२</sup>

१३ तुलसी का विभषण हनुमान से लंका में भेट करता है। इस तरह का प्रसंग अन्य रामायणों में नहीं है। तुलसी

१ तुलसी की मौलिकता : रामरत्न भट्टनागर, पृ. १८१

२ तुलसीदास चिंतन और कला : इन्द्रनाथ मदान, पृ. १७७

विभीषण को इस रूप में प्रस्तुत करते हैं कि उनका मातृ द्रोह भक्ति के आगे दब जाय। मोल्ल रामायण का विभीषण ठीक वाल्मीकि के समान हैं जो राम को शरण में आकर कुलछिद्रा को उत्पन्न करता है।<sup>१</sup>

१८ वाल्मीकि का रावण अदम्य उत्साही, नीति निपुण और कुशल राजनैतिज्ञ हैं और उसे राम के परब्रह्मत्व का ज्ञान भी नहीं है। लेकिन तुलसी का रावण प्रश्चन्न राम भक्त है। मोल्ल रामायण का रावण ठीक वाल्मीकि के रावण के समान है और बिना रथ पर आरूढ़ हुए युद्ध करने वाले राम के पास वह सिरस्त्राण, कवच और रथ को भेजता है।<sup>२</sup>

१५ प्रकृति वर्णनों में भी तुलसी ने वाल्मीकि को आधार बनाया है। वाल्मीकि के पंपासरोवर से मिलतेवाला है मानस सरोवर का वर्णन। वाल्मीकि के पंपा सरोवर के वर्णन को भागवत के वर्षा शरद वर्णन से मिलाकर मानस-सरोवर का रूपक बांधा है। मोल्ल के प्रकृति-वर्णन में वाल्मीकि का अनुसरण करने के कारण सहज सौकुमार्य है। तुलसी अपने को भक्त कवि सिद्ध करने के लिए प्रकृति में लिए प्रकृति में भी भक्ति का आरोप करने लगे। वाल्मीकि के प्रकृति चित्रण में साधारण संशिलष्ट वर्णन का रूप और उद्घोपन का रूप है।<sup>३</sup> इस में तुलसी

१ तुलसी को मौलकता : रामरत्न भटनागर, पृ १६०।

२ मोल्ल रामायण, ६-६। ४८-५१।

३ तुलसीदास चिंतन और कला, इन्द्रनाथ मदान १७९।

ने उद्दीपन के रूप को ही ग्रहण किया लेकिन मोल्ल रामायण में दोनों रूप समान स्थिति में विद्यमान हैं। तुलसी<sup>१</sup> की विशेषता राम-सीता के वियोग में प्रकृति के विभिन्न जीवों से अपनी कहण कथा सुनाने से मैं है। मोल्ल की विशेषता सुन्दर काण्ड की सीता के विग्रह में वर्णन है। वाल्मीकि की कथा में काव्य गुणों का अभाव और युद्ध का विस्तृत नर्णन है। मोल्ल रामायण में भी ये दोनों विशेषताएँ हैं। १ वह युद्ध काण्ड (जिसे तुलसी ने लंका काण्ड के अंतर्गत रखा) को तीन आश्वासों में बांट करके विभिन्न शैलियों में लिखती है। इस तरह का विवेचन मोल्ल रामायण के अन्य काण्डों में नहीं है। लेकिन तुलसी ने भी भृत्य और भयानक रसों को स्थान दिया जो वाल्मीकि और मोल्ला की कृतियों में नहीं है।

### १-५३ आध्यात्म रामायण से प्रेरणा ;

१ शिव पार्वती की प्रसन्नोत्तर शैली में कथा कहना आध्यात्म रामायण में भी है। लेकिन मोल्ल रामायण में यह तरह की कथा योजना नहीं है। आध्यात्म रामायण के जैसे तुलसी के पात्रमें पार्वती राम के परब्रह्मत्व पर शंकित देहर उसके बारे में शिव से पूछती है। यह प्रसंग मोल्ल रामायण में नहीं है। क्योंकि इस काव्य का उद्देश्य भक्ति के सिद्धांतों को प्रतिपादित करना तहों है। तुलसी का आश्रम ब्रह्म राम की सीता

१ समग्र आनंद साहित्य संस्कृत वाचन, पृ. चतुर्विंशति ४, सू. ३९।

की तत्व मीमांसा आध्यात्म रामायण से प्रेरित दृष्टिकोण के फल स्वरूप है।<sup>१</sup>

२ रस, छंद, अलंकार वर्णन आदि दृष्टियों से देखा जाय तो आध्यात्म रामायण का उतना मूल्य नहीं है। मानस एक हृदय के भवित्व और दर्शन का चित्रण करता है। लेकिन उसकी अभिव्यक्ति सुन्दर काव्यालंकारों से युक्त है। मोल्ल रामायण के कुछ प्रसगों में आध्यात्म रामायण की भक्ति है लेकिन उसके साथ काव्यभिव्यक्ति का सुन्दर रूप भी उसमें है।<sup>२</sup>

३ आध्यात्म रामायण की जैसे ब्रह्म मोल्ल रामायण भी अविकसित काव्य है और कथा इस में संक्षिप्त है। इसी-लिए इन काव्यों के पात्रों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए पर्याप्त मौका नहीं मिलता। पात्रों का चरित्र चित्रण आध्यात्म रामायण और वाल्मीकि रामायण के जैसे ही मोल्ल रामायण में हैं। लेकिन मोल्ल रामायण के पात्र हमेशा राम की भक्ति का उपदेश नहीं देते। विरोधी दल के पात्रों में कुम्भकर्ण और विभीषण मोल्ल रामायण के जैसे रामभक्त हैं और हर मौके पर उपदेश देते हैं।<sup>३</sup>

४ अहल्योद्धार, धनुर्भग, परशुराम पराजय, केवट प्रसंग,

१ तुलसी के अपेक्षित मूल्य, मोहन राकेश, पृ. २३५

२ तुलसी चिंतन और कला, इन्द्रनाथ मदान, पृ. १८२

३ तुलसी के अपेक्षित मूल्य, मोहन राकेश, पृ. २७३

भरत का ऋषि धर्म, रावण-सीता संवाद, विभीषण हनुमान आदि की भक्ति आदि अनेक विषयों की रचना में मोल्ल और तुलसी दोनों आध्यात्म रामायण से अत्यंत प्रभावित हैं। केवट वाले प्रसंग को मोल्ल और तुलसी ने आध्यात्म रामायण से ही ग्रहण किया है।

### १-५३ तिष्कर्ष :

इस प्रकार प्रेरणा स्रोतों की दृष्टि से मोल्ल और तुलसी दोनों वाल्मीकि और आध्यात्म रामायण से अत्यंत प्रभावित हैं। मोल्ल के पहले भी रंगनाथ, भास्कर, निर्वचनोत्तर आदि प्रौढ़ राम काव्य रचे गये थे। अतः मोल्ल पर आध्यात्म रामायण का प्रभाव संभवतः प्रधान रूप सेही पड़ा होगा। वैसी तो मोल्ल संस्कृत भाषा से परिचित नहीं थी। तुलसी के पहले प्रौढ़ राम काव्यों की रचना हिन्दी में नहीं हुई थी। साथ ही तुलसी लंस्कृत भाषा के ममज्ज भी थे। अतः संस्कृत ग्रंथों का प्रभाव उन पर प्रत्यक्षरूप से पड़ा है। जहां काव्यकला और साहित्यक सामग्री की आवश्यकता है, वहां वाल्मीकि रामायण को और जहां भक्ति और ज्ञान की आवश्यकथा है वहां आध्यात्म रामायण को उन्होंने अपनाया।

### १-६ विस्तृत वर्णन वाले प्रसंग :

मोल्ल रामायण और रामचरित मौनस ऐसी रचनाएँ हैं जिनमें परंपरा और मौलिकता दोनों हैं। वास्तव में हरेक कवि

कुछ प्रसंगों को चुन लेता है जिन में उन की रुजि होती है और उनका सविस्तार वर्णन करता है। वास्तव में यही कवि की मौलिकता है। मानस और मोल्ल रामायण के ऐसे प्रसंग दिये जा रहे हैं जिन का वर्णन विस्तार के साथ हुआ है।

### १-६१ राम चरित मानस में :

१ भूमिका भाग । मानस की भूमिका का सांस्कृतिक महत्व है। इस लिए तुलसी इसके अंतर्गत अपने अपरिपक्व मति का कथन करते हैं, शिव-पार्वती, काका-गरुड के संवादों के रूप में कहानी प्रस्तुत की गयी है। राम जन्म का सामान्य और विशेष कारण भी इसमें हैं। जय-विजय, जलधर, प्रताप-भानु आदि की कथा से रामावतार का निरूपण किया गया है। रावण के अत्याचार भी अवतार का एक कारण हैं।<sup>१</sup>

२ सीता स्वयंवर : इस प्रसंग के अंतर्गत तुलसी ने जनक पण, अनेक राजाओं का निमंत्रण, जनक क्षोभ, अनुर्भग आदि के साथ राम के विवाह के संदर्भ में मानने गये मांगलिक कार्यों को भी वर्णित किया है।<sup>२</sup>

३ परशुराम पराजय : इस प्रसंग के अंतर्गत तुलसी ने कृष्ण परशुराम का रूप परशुराम लक्ष्मण के संवाद, परशुराम से

<sup>१</sup> रामचरित मानस, ११३२-१८७

<sup>२</sup> मानस : ११२२५-२६१

राम की शक्ति की परीक्षा आदि का सविस्तार वर्णन प्रस्तुत किया है।<sup>१</sup>

४ कैकेयी को हठ धर्मिता। इस प्रसंग के अंतर्गत तुलसी ने राम के निर्वासन में कठिबद्ध कैकेई की निस्सहायता पर प्रकाश डालने के लिए तापस शाप, याज्ञवल्क के भविष्य कथन और दूषके साथ राज महलों के षडयंत्र, स्त्री हठ आदि पर प्रकाश डाला है।<sup>२</sup>

५ राम वनगमन और सीता लक्ष्मण का अनुगमन : इस प्रसंग के अंतर्गत तुलसी ने सुमंत्र की विकलता और राम-वनवास से कृद्ध कौसल्या की प्रतिक्रिया का चित्रण किया है। इसके साथ लक्ष्मण भी अत्यंत कृद्ध होते हैं। फिर राम के वचनानुसार वनवास के लिए तैयार होते हैं। सीता भी वनवास के लिए अपना आग्रह भी प्रकट करती है।<sup>३</sup>

६ गुह की आत्मीयता : इस प्रसंग में तुलसी की मौलिकता के साथ साथ परंपरा का भी निर्वाह है। मौलिकता इस बात में है कि उन्होंने भक्ति और कर्म का समन्वय किया है। गुह के संदेह का निवारण करते हुए लक्ष्मण उपदेश देते हैं जिसमें राम के ईश्वरत्व का संकेत है।<sup>४</sup>

१ १५२६६-२८५ (मानस)

२ मानस, २१९५५-१८५

३ वही, २१३७-७५

४ वही, २१८८-१४२

७ राम-मुनि मिलन : वनवास के प्रसंग में राम आश्रमणों में भरद्वाज आदि श्रेष्ठ मुनियों से मिलते हैं। इस प्रसंग में मानस में राम एक लघुवय तापसी से भी मिलता है जो आलोचकों के अनुसार स्वयं तुलसी ही है।<sup>१</sup>

८ दशरथ संदेश : यह प्रसंग वास्तव में मानस कार का विशेष प्रयास है। इस प्रसंग में राम और सुमंत्र का संवाद है। उसी संवाद का सारांश सुमंत्र दशरथ को सुनाते हैं।<sup>२</sup>

९ चित्रकूट में राम-भरत का मिलन : इस प्रसंग के अंतर्गत राम का पादुका-प्रदान, गुह की रण सज्जा, भरत-भरद्वाज का संवाद, इन्द्र-बृहस्पति संवाद जिसमें राम के ईश्वरत्व का संकेत है लक्ष्मण कोप और आकाशवाणी का कथन, वशिष्ठ आदि का स्वागत और माया सीता के प्रसंग का विस्तृत वर्णन है।<sup>३</sup>

१० वालि की हरिधाम प्राप्ति : किञ्चिकधा काण्ड के अंतर्गत आनेवाले इस प्रसंग में वालि के मरण के बाद सुग्रीव की उदासीनता का वर्णन है। इस के साथ वालि की मुक्ति भावना और हरिधाम प्राप्ति का विषय भी कई छंदों में है।<sup>४</sup>

११ हनुमान का भमुद्र लंघन : सुन्दर काण्ड के इस

१ मानस, २१९०६-१३२

२ मानस, २१८१-१५३

३ मानस २१९००-३१०

४ वही, ४१९८-२७

प्रसंग में समुद्र का हनुमान को सहायता के लिए मैनाक को भेजना, देवताओं की प्रेरणा से उनकी बल वृद्धि आदि प्रसंगों का विस्तारगत वर्णन है। इस के साथ भक्ति की समन्वय साधना भी इस प्रसंग में है।<sup>१</sup>

१२ लंका दहनः तुलसी ने इस प्रसंग हास्य रस को उत्पन्न करने का प्रयत्न किया है। इस प्रसंग के अंतर्गत वाटिका भंग, एवं राक्षस नाश, मेघनाथ युद्ध, हनुमान रावण मवाद आदि प्रसंगों का वर्णन है। लंका दहन के पूर्व और पर प्रसंगों का विस्तार गत वर्णन यहां है।<sup>२</sup>

१३ विभीषण की शरणागति : विभीषण रावण से रामके ईश्वरत्व का उल्लेख करके सीता को छोड़ने का उपदेश देता है। परन्तु रावण से अपमानित होकर विभीषण राम के शरण में आता है। राम अपने शरणागत वत्सलता को दिखाकर उनको राज्य दिलवाने की प्रतिज्ञा करते हैं।<sup>३</sup>

१४ सेतु बंध : लंका काण्ड के अंतर्गत आनेवाले इस प्रसंग में राम का समुद्र तट पर भुशकी स्थापना करना, रावण का पार कर वहां जाना, रावण को मडोदरी का उपदेश और रावण रस भंग आदि का वर्णन है। तुलसी की इस प्रसंग योजना

<sup>१</sup> मानस, ५११-५

<sup>२</sup> वही, ५१९८-७५

<sup>३</sup> वही, ५१२७-४९

में शैव वैष्णव का समन्वय करने का प्रयत्न है।<sup>१</sup>

१५ मंडोदरी का उपदेश : तुलसी के इस प्रसंग में रावण को मंडोदरी राम के ईश्वर का विस्तृत उल्लेख करती है। इस प्रसंग में अलौकिकता के समन्वय के साथ मंडोदरी रावण को राम की शरण में जाने का उपदेश देती है। और वानप्रस्थ को स्वीकार करने का आग्रह करती है।<sup>२</sup>

१६ अंगद दौत्य : जांबवान के वचनानुसार शान्ति की स्थापना के लिए अंगद दूत के रूप में भेजा जाता है। अंगद रावण से संवाद करते समय पृथ्वी को धक्का देता है जिससे रावण गिर पड़ता है।<sup>३</sup>

१७ लक्ष्मण मूर्छा : इस प्रसंग में मेघनाथ लक्ष्मण पर शक्ति का प्रयोगकरने के कारण लक्ष्मण अचेत रह जाता है। हनुमान रावण से भेजा गया कालनेमि का वध करके संजीवि पर्वत को ले जाता है।<sup>४</sup>

१८ राम की नागपाश बद्धता : इस प्रसंग में तुलसी परंपरा<sup>५</sup> का पालन करते हैं। राम के ईश्वरत्व के प्रतिपादन के लिए गरुड़ का प्रयोग करता है। इस प्रसंग में राम के परब्रह्मत्व को सिद्ध करनेवाले काका-गरुड संवाद एक सफल योजना है।<sup>६</sup>

<sup>१</sup> मानस, ६१९-१६

<sup>२</sup> मानस, ६१९३-३५

<sup>३</sup> मानस, ६१३७-४२

<sup>४</sup> मानस, ६१४४-६०

<sup>५</sup> मानस, ६१५८-१२५

१९ रावण का माया युद्ध : इस प्रसंग में रावण छल के साथ राम की सेना पर प्रहार करता है। लेकिन राम युक्ति के साथ उनको सामना करते हुए अपने सर्व शक्तिमान और मायापति का रूप सिद्ध करते हैं।<sup>१</sup>

२० राम का अयोध्या प्रस्थान : हनुमान से राम गमन वार्ता सुनकर भरत नंदिगांव से अयोध्या जाते हैं। राम सभी भाइयों, और माताओं का मानव रूप में आये हुए विभीषण वे सार्थ परिचय करते हैं।<sup>२</sup>

२१ राम का राज्याभिषेक : वशिष्ठ राम के राज्याभिषेक के लिए निश्च करते हैं। इस प्रसंग के अंतर्गत नगर की सजावट, देवताओं का फूल बरासना, गंधर्व किन्नर आदि के राम का गुणगान आदि प्रसंग हैं।<sup>३</sup>

\* २२ उपसंहार : मानस के इस प्रसंग के अंतर्गत शिव पार्वती और काका गरुड आदि का संताव है। नागपाश बद्ध मेघनाथ की घटना, गरुड का राम के ईश्वरत्व में शंकालु होना और ब्रह्मा से समाधान न पाकर काकाभुसुंडि के समीप जाना आदि प्रसंगों का वर्णन है।<sup>४</sup>

१-६२ मोल्ल रामायण में :

१ पीठिका : ग्रंथ की पीठिका में मोल्ल ने विभिन्न

१ मानस, ६१९१-१०३

२ वही, ७१९-१०

३ वही, ७१९०-२५

४ वही, ७१५८, ७९-८५, १७-१०२

देवताओं से और समकालीन कवियों की प्रार्थना, काव्य रचना में अपना उद्देश्य आदि के बारे में विस्तार के साथ लिखा है।<sup>१</sup>

२ अयोध्या पुरी का वर्णन : मोल्ल इस प्रसंग के अंतर्गत दशरथ का भवन, वहाँ की अट्टालिकाएँ, संपन्न वैश्य, जनों की प्रवृत्ति, सामंत राजाओं के विभिन्न गुण, वेश्याओं का वर्णन, पुर के विभिन्न वन तडाक, संपत्ति आदि विषयों का अनेक छंदों में वर्णन करती है।<sup>२</sup>

३ राक्षसों का संहार : वास्तव में मोल्ल रामायण संक्षिप्त काव्य है। इसलिए अनेक प्रसंगों का वर्णन संक्षेप में हुआ है। इस प्रसंग में मोल्ल ने राक्षसों के अत्याचार और राम का उन सब को मार डालना आदि प्रसंगों का वर्णन है।<sup>३</sup>

४ स्वयंवर : इस प्रसंग में विभिन्न देशों ने आये हुए राजकुमार, विभिन्न देशों के नाम, राजकुमारों के वाहन, अश्व गज आदि का वर्णन है। साथ ही इस प्रसंग में धनुष का आकार और उसे देखकर भयभीत राजकुमारों की प्रतिक्रिया, धनुर्भग का विश्व पर प्रभाव आदि का वर्णन है।<sup>४</sup>

५ परशुराम प्रसंग : मिथिला में परशुराम का प्रवेश राम को युद्ध के लिए ललकारना आदि का वर्णन है। परशुराम ब्राह्मण होने के कारण गम उसे युद्ध करने के लिए इनकार

१ मोल्ल रामायण, पीठिका, ३-२४

२ वही, ११५-१६

३ मोल्ल रामायण, ११५१-५७

४ वही, ११६६-६७

करते हैं। बाद में परशुराम के धनुष को राम तोड़ देते हैं। इस तरह छोटे प्रसग का भी वर्णन विस्तार के साथ हुआ है।<sup>१</sup>

६ अयोध्याकाण्ड में प्रकृति चित्रण । सूर्योदय, सूर्यास्त और अंधेरे में कुमुद और चकोरों की दशा आदि का वर्णन इस काव्य में है। रजनी का प्रभाव, सपूर्ण प्राकृतिक वस्तुओं पर किस प्रकार पड़ती है उसका भी वर्णन है। रजनी का आस्वाद करते हुए मेथुन किया में भग्न चकोर युगल का भी वर्णन मोल्ल करती है। उसके माथ परपुरुष में आसक्त रहनेवाली स्त्रियां और वेश्याएं किस प्रकार उपतियों के साथ क्रीड़ा करती है उसका भी वर्णन है।<sup>२</sup>

७ अरण्य काण्ड में खरदूषण और शूर्पणखा के राम पर आक्रमण राम की आज्ञा के अनुसार लक्ष्मण का शूर्पणखा के नाक कान काटना और उससे कृद्ध होकर खरदूषण का आक्रमण आदि का वर्णन मोल्लने किया है। खर का विकृत रूप, खर को राम का मार डालना आदि प्रसंगों को मोल्ल सजीव और मार्मिक रूप में प्रस्तुत करती है।<sup>३</sup>

८ सीता का नख-शिख वर्णन । राम से प्रतिशोध लेने के लिए शूर्पणखा अपने भाई रावण के सामने सीता का नख-शिख वर्णन करके उसका हरण करने की प्रेरणा देती है। यहां सीता

१ मोल्ल रामायण, ११५४-१६

२ वही, २१५-२२

३ वही, ३/७२०

के स्तन, नितंब, कटि, बाहें आदि का अश्लील वर्णन प्रस्तुत करती है।<sup>१</sup>

९ राम का विरह : राम का विरह करुण रस प्रधान है। राम सीता की शृंगारिक चेष्टाओं का स्मरण करके पीड़ा को अनुभव करते हैं। वे कदली वृक्षा से पूछते हैं कि क्या तुम्हारे जैसे नितंबवाली सीता को तुमने कही देखा है। ऐसे वर्णनों में मोल्ल का उद्देश्य राम के मानव रूप को स्पष्ट करना ही है। वे मानव के जैसे शृंगार की अतिशय अवस्था का अनुभव करते हैं।<sup>२</sup>

१० हनुमान का समुद्र लंघन : मुन्द्र कांड के इस प्रसंग में मोल्ल हनुमान की केशिपथ, मैनाक पर्वत पर लांघना और वहां मुरसा नामक नाग जननी से मिलना, सुवेलाचल पर विश्राम करने के बाद लंका में प्रवेश करना आदि विषयों का वर्णन है। हनुमान के गर्जन से गजेन्द्र, मृगेन्द्र और राक्षस अपने भय को व्यक्ति करते हैं। इन सभी प्रसंगों का विवेचन इस काव्य में है।<sup>३</sup>

११ रावण सीता संवाद : इस प्रसंग में मोल्ल सीता की पवित्रता और रावण की कामान्धता को प्रस्तुत करती है। जब सीता रावण की प्रेम याचना ठकराती है तब रावण आत्म

१ मोल्ल रामायण, ३।२१-२५

२ वही, ३।५१-५८

३ वही, ५।७०-२७

स्तुति के सीता के अंगांगों का कामोदीपक वर्णन करके अपने प्रेम को स्वीकार करने की आज्ञा देते हैं।<sup>१</sup> तब सीता शपथ करती है कि उसके हृदय में राम के सिवा किसी को स्थान नहीं है।

१२ हनुमान अपने को राम भक्त सिद्ध करना : बानर के रूप में जब हनुमान भाषण करने लगते हैं तब उसे सीता राक्षस माया समझ लेती है। लेकिन हनुमान सीता को राम का रूप और सारी कहानी सुनाते हैं और राम की मुद्रिका देकर सीता की शिरोमणि मांगते हैं। शंत में सीता को वैर्य देकर हनुमान प्रस्थान करता है।<sup>२</sup>

१३ हनुमान की वीरता : लंका के राक्षसों और उनकी स्वियों को डराकर हनुमान रावण से भेजे गये १० हजार राक्षसों को भी मारते हैं। यहां मोल्ल राक्षसों के नामों की सूची देती है जो युद्ध में मर गये हैं। हनुमान के युद्ध का विस्तार गत वर्णन मोल्ल रामायण में है। मेघनाथ पिता को धैय देकर हनुमान पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके उनको बांध लेते हैं।<sup>३</sup>

१४ लंका दहन : हनुमान और सीता दोनों अग्नि देव से प्रार्थना करते हैं और उसके पश्चात् हनुमान को आगे श्रीतल लगती है। वे वहां के दरबार, गजशाला, अश्वशाला, प्रांकार

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ५१४२-६५

<sup>२</sup> वही, ५१९९-११०

<sup>३</sup> वही, ५१९२५-१६५

और अद्वालिकाओं को जलाने हैं। लंकिणी को देखकर सिंहनाद करके समुद्र को पार करके मुनाभ नामक पर्वत पर विश्रय लेकर वहाँ से चले जाते हैं।<sup>१</sup>

१में वानर के सुग्रीव के मधुवन में : यह मोल्ल की विशेष प्रसंग-योजना है। लंका से लौटकर आते समय हनुमान अपने परिवार के साथ सुग्रीव के मधुवन में प्रदेश करके वहाँ के फलों को खाकर वक्षों का नाश करने हैं। इस प्रसंग में मोल्ल हास्य रम का पोषण करती है। वानर बगीचे के मालिक को भी पीटते हैं। सुग्रीव इस विषय को समझाते हैं।<sup>२</sup>

१६ राम के युद्ध की तैयारी : युद्ध काण्ड के इस प्रसंग में विभीषण की प्रेरणा से राम का सेनु बांधने का प्रयत्न करना समुद्र मानवाकार में आकार नल से सेनु निर्माण कराने की सलाह देना और बांध का निर्माण करके लंका में प्रवेश करना आदि प्रमंगों का वर्णन है।<sup>३</sup>

१७ अंगद का युद्ध : कंपन नामक राक्षस को जब अंगद मारता है तब शोणिताक्ष, व्रजघ यपाक्ष आदि राक्षस अंगद पर चढ़ाई करते हैं जिन्हें वह तुरन्त मार डालता है। कुम्भ और निकुम्भ को भी अंगद मार डालता है। इस प्रकार मोल्ल अंगद के युद्ध का विस्तार के साथ वर्णन करती है।<sup>४</sup>

<sup>४</sup> मोल्ल रामायण, ५१२१२-२२३

<sup>२</sup> वही, ५१२३१-२४३

<sup>३</sup> वही, ६-११३३-४८

<sup>४</sup> वही, ६-११६८-८८

१८ इन्द्रजीत का युद्ध : मेघनाथ पहले माया युद्ध करता है और राम पर वायु बाण का प्रयोग करता है। लक्ष्मण धैर्य के साथ उस बाण का सामना करते हैं और गंधर्व शर से मेघनाथ को मार डालते हैं। इस प्रसंग में मोल्ल अपनी मौलिकता दिखाती है। अन्य रामायणों में इन्द्रजीत की मृत्यु इतनी जलदी नहीं होती है।<sup>१</sup>

१९ रावण का माया युद्ध : रावण तिमिरांबक नामक शर का प्रयोग करके अंदकार की सृष्टि करते हैं। राम उसके विरुद्ध बाण प्रयोग करते हैं। राम अग्नि वाण का प्रयोग करके रावण के रावण के बाण को नाश करते हैं। रावण लक्ष्मण को मूर्छित करते हैं और राम रावण को अपनी शर परंपरा से भगाने हैं।<sup>२</sup>

२० लक्ष्मण का पुनरुज्जीवन : सुषेण के वचनानुसार हनुमान पर्वत लाने के लिए जाते हैं। रावण से भेजे गये कालनेमि का वध करके माल्यवंत को संहार करके द्रोणांद्रि की रक्षा करनेवाले गंधर्वों को मार कर सूर्योदय के पहले ही आ जाते हैं।<sup>३</sup>

२१ राम रावण का युद्ध: युद्ध गमन के समय जितने वाल्य यंत्र बजाये जाते हैं उन सब का वर्णन इसमें है। वानर, वृक्ष, पर्वत

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-११९१-११३

<sup>२</sup> वही, ६-२१२०-४६

<sup>३</sup> वही, ६-२१६०-९२

आदि को राक्षसों पर फेंकते हैं। हनुमान सर्परोम, वृच्छिक रोम अग्निवर्ण आदि राक्षसों को मारते हैं। देवता ओले की वर्षा करते हैं। रावण का देव-नन्दर्द्व शर, नागशर, स्फुरद्विष बाण भी को बीच में ही राम भंग करते हैं। राम अपने बाण से रावण को मूर्छित करते हैं। उग्रास्त्र से रावण के हाथ-पैर को राम काटते हैं। लेकिन उसके स्थान पर नये हाथ पैर उत्पन्न होने लगते हैं। तब विभीषण के वचनानुसार राम रावण के गर्भ में स्थित अमृत कलश को मारते हैं। इस प्रकार रावण मर जाता है।<sup>1</sup>

### १-६३ निष्कर्ष :

वास्तव में हरेक कवि या कवयित्री कुछ मूल ग्रंथों के आधार पर रचना करने पर अपनी रुचि के अनुकूल प्रसंग चुन लेते हैं और उनका विस्तारगत वर्णन करके अपनी मौलिकता सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। मोल्ल ने भी इसी प्रकार अपनी रुति के अनुकूल प्रसंग मिलने पर उन्हें विस्तार प्रदान किया। प्रसंगों के चुनाव और विस्तार में कवयित्री के व्यक्तित्व का प्रतिविवर दिखाई पड़ता है। मोल्ल के शृंगार संबन्धी वर्णनों में जितना कामोदीपन और अश्लीलता है उतना तुलसी में नहीं। और तुलसी के शृंगार वर्णन में जितना संयन है उतना मोल्ल में नहीं।

तृतीय अध्याय

## पात्र परिकल्पना

२-१ नायक और उनके परिकर पात्र :

मानस और माल्ल रामायण दोनों के नायक राम हैं। इन दोनों काव्यों के अधिकांश पात्र इस नायक पर आश्रित है। इस लिए पहले यह जानना आवश्यक है कि नायक राम की परिकल्पना में दोनों का कथा दृष्टिकोण है। इस के उपारांत अन्य पात्रों की चर्चा की गयी है।

२-११ नायक राम :

रामजन्म से लेकर रामराज्य तक सारी कहानी राम को आधार मान कर ही चलती है। मानस के राम निर्गुण ब्रह्म के रूप में दिखाई देते हैं।<sup>१</sup> फिर भी तुलसी के अनुसार यह परब्रह्म स्वयं, ब्राह्मणों और साधुओं की रक्षा के लिए सगुण रूप धारण करते हैं।<sup>२</sup> लेकिन मोल्ल का राम सामान्य मानव हैं को वाल्मीकि के राम से मिलता जुलता है।

तुलसीराम को विष्णु से अभिन्न मानते हैं। इस लिए वे अंत में मानस को हरिचर्सित मानस भी कहते हैं।<sup>३</sup> लेकिन मोल्ल

१ मानस : १११६, आरंभ के ६ श्लोक। २ मानस, १३१८

३ मानस : ७१५३

राम और विष्णु में अंतर देखती है। युद्ध काण्ड के अन्त में भगवान विष्णु राम के सामने सीता की पवित्रता की घोषणा करते हैं।<sup>१</sup> लेकिन तुलसी ने राम के चरित्र-चित्रण में वाल्मीकि के राम की ही आधार मानकर राम के लौकिक रूप को भी प्रकट किया है। इस लिए मानस में राम पुत्र, शिष्य, भंधु, पति, मित्र, शवु और राजा आदि रूपों में हमारे सामने आते हैं। मोल्ल रामायण संक्षिप्त काव्य होने के कारण राम के चरित्र का विस्तृत रूप इसमें दृष्टिगोचर नहीं होता है।

मानस और मोल्ल रामायण दोनों में राम पिता की आज्ञा में विश्वामित्र के साथ वन जाने के लिए तैयार होने हैं और पिन्तु भक्ति का पर्याय देते हैं। विश्वामित्र राम का दोक्षा गुरु है और विष्णु उनके कुल गुरु। दोनों के साथ राम के मर्यादा पूर्ण व्यवहार, श्रद्धा और भक्ति मानस के राम का सच्चशिष्य रूप प्रकट होता है।<sup>२</sup> मोल्ल रामायण में भी इस तरह का प्रभंग है। लेकिन राम का शिष्य रूप मानस के जैसे मोल्ल रामायण में नहीं है।

राम का मातृ रूप लक्षण के साथ उनके अनुराग पूर्ण व्यवहार से स्पष्ट होता है। वे दोनों वचपन में ही युग्म हैं।<sup>३</sup> लेकिन मोल्ल रामायण में लक्षण मूर्छा के प्रबंग में राम के

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-३।११७

<sup>२</sup> मानस, १।३-३।६

<sup>३</sup> मानस, १।१९५

विलाप उनका मातृ वत्सल रूप हमें दिखाई पड़ता है।<sup>१</sup> भरत के प्रति राम के व्यवहार से भी राम का यह रूप स्पष्ट होता है। मोल्ल रामायण में राम भरत को अनुराग से राज्यपालन करने की सलाह देते हैं। राम और शत्रुघ्न का संबन्ध मोल्ल रामायण में नहीं है।

मानस में हमें राम का पति रूप भी दिखाई पड़ता है। इसके अंतर्गत राम के पूर्वरागी, संयोगी और वियोगी ये तीनों रूप आते हैं।<sup>२</sup> लेकिन मोल्ल रामायण में हमें राम का वियोगी रूप ही मिलता है। सीता हरण के बाद और वर्षा ऋतु वर्णन प्रसंग में हमें राम का वियोगी रूप मिलता है।

राम का मित्र रूप सुग्रीव के साथ उनके व्यवहार से स्पष्ट होता है। अंत में सुग्रीव को अयोध्या वासियों से परिचय करते समय उन्हें समर सागर का बेड़ा, भरत से भी अधिक प्रिय कहते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में वालि वध के प्रसंग में सुग्रीव के साथ उनकी मैत्री का परिचय हमें मिलता है।

राम का शत्रू रूप भी हमें ताड़का, सुबाहु, विराध मारीच, खर, दूषण, कबन्ध, कुम्भकर्ण, रावण को वध करते समय स्पष्ट होता है। लेकिन मोल्ल रामायण के राम युद्ध भूमि में रावण से जो वीरोचित बात करते हैं उनसे उन का शत्रु रूप स्पष्ट

<sup>१</sup> मानस, ११२३१, ३१, ५१९५

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, १६-३।७५-७८

होता है। १ अन्य प्रमंगों का वर्णन संक्षिप्त रूप में करने के कारण उन स्थानों में राम के शनृ रूप को उभार देने का अवमर मोल्ल को नहीं मिला।

राम के गजा का रूप मानस में अधिक मिलता है। इस प्रमंग में तुलसी आदर्श राम राज्य की स्थापना भी करते हैं। तुलसी ने इस दिशा में जड़-जंगम जगत के अनुपम ऐश्वर्य का उल्लेख करते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में इस प्रमंग का वर्णन चुने हुए छंदों में है।

मानस में राम की उदारता और उनके निशाल हृदय का परिचय भी हमें मिलता है। उनकी अवहेलना करनेवाले परशुराम, जयंत, समुद्र आदि को भी क्षमा करके शरण देते हैं। विभीषण का उद्धार करके राम अपनी शरणागत वन्यलता का भी परिचय देते हैं। संक्षिप्त काव्यरूप की सीमाओं में जकड़ी हुई मोल्ल को राम के इस रूप पर प्रकाश डालने का अवमर नहीं मिला। यद्यपि उक्त प्रसंगों का उल्लेख उन्होंने कुछ पक्षितयों से अवश्य क्यों न किया हो।

## २-१२ नायक से संबन्धित पुरुष पात्र :

नायक से संबन्धित पुरुषों से संबन्धित पुरुष पात्रों में दशरथ, भरत और लक्ष्मण उल्लेखनीय हैं।

१ दशरथ। मोल्ल रामायण और मानस दोनों में दशरथ

का पति, पिता और राजा के रूप चिह्नित है। कोप भवन में रुठी हुई कैकेयी को मनाने के लिए गये उनके प्रयत्नों और आश्वासनों में उनके पति हृदय का सरस रूप मिलता है।<sup>१</sup> त्रिश्वामिव के द्वारा राम की याचना पर दशरथ जिस पीड़ा का अनुभव करने हैं, उसमें अनेक पिता का रूप हमें स्पष्ट होता है।<sup>२</sup> राजा दशरथ रघुवंश को प्रसिद्ध राजा होने के कारण मत्यगादिता और प्रतिज्ञापूर्ती उनकी विशेषताएँ हैं। वे प्राणों की चिता नहीं करते हैं।<sup>३</sup> मोल्ल रामायण में दशरथ का राजा रूप बालकाण्ड में वर्णित दशरथ का गौर्य, पराक्रम आदि प्रसंगों ने स्पष्ट होता है।<sup>४</sup>

२ भरत : मानस में भरत भवित की प्रतिमा है। उनका चिवण पुत्र और भाई के रूप में किया गया है। लेकिन मोल्ल रामायण के भरत में केवल भ्रातृ रूप है। मानस का भरत शुद्ध मातृ भक्ति का परिचय देते हैं।<sup>५</sup> लेकिन मोल्ल रामायण का भरत भाई का आज्ञानुवर्ती और राम के प्रतिनिधि के रूप में शाखन करने वाले के रूप में चिह्नित है।<sup>६</sup>

३ लक्ष्मण : भरत की भाँति लक्ष्मण भी राम निष्ठ है। राम की भक्ति के लिए वे कोई भी बलिदान कर सकते हैं।

<sup>१</sup> मानस, २१७५

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, २१२४-२६

<sup>३</sup> „, ११२१०

<sup>४</sup> „, „, ११७७-५०

<sup>५</sup> शिवकुमार शुक्ल, मानस का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. १६७

<sup>६</sup> मोल्ल रामायण, २१७६-८८

वे भाई के लिए अपने पिता और माता का निरस्कार करने के लिए भी तैयार हैं। लेकिन मोल्ल रामायण के लक्षण केवल राम के चरणानुगामी हैं। और राम का एक प्रच्छन्न सेवक भी है। मानस में मुग्रीव को उनका पण याद दिलाने समय लक्षण क्रोध व्यक्त करते हैं।<sup>१</sup> लेकिन पूरे मोल्ल रामायण में हमें लक्षण का क्रोध और तिरस्कार करनेवाला रूप दिखाई नहीं पड़ता है।

६ मैवीवाले या दास पाव : मानस के समस्त पाव प्रच्छन्न रूप में राम के दास या मित्र हैं। इम तरह के पाव मोल्ल रामायण में भी हैं। मैवी वाले पावों में मुग्रीव और दाम पावों में हनुमान अंगद आदि उल्लेखनीय हैं।

अ) सुग्रीव मुग्रीव भ्रातृ पीडित हैं। वानर राजा होने के कारण वह दृत प्रेषण, सैन्य संघठन, सेतु निर्माण, तथा लंका युद्ध आदि में राम की सहायता करके अपने सन्मित्रता का परिचय देता है। इसी के कारण राम अयोध्या में उसका स्वागत करके अपनी मर्यादा को व्यक्त करते हैं।<sup>२</sup> लेकिन मोल्ल रामायण का मुग्रीव भी पहले भ्रातृ पीडित था। लेकिन सेतु निर्माण, सीतान्वेषण और युद्ध की तैयारी में उनका मित्रवाला रूप हमें दिखाई पड़ता है।<sup>३</sup>

१ मानस : ४।१५-१९

२ शिवकुमार शुक्ल : मानस का तुलनात्मक अध्ययन, पृ. २०१

३ मोल्ल रामायण, ४।३

मुग्रीव के साहस शौर्य, दास्य "भाव" और विश्वसनीयता का भी सविस्तार वर्णन हुआ है। तुलसी ने उसकी भक्ति और विरक्ति का भी वर्णन करके उसको मित्र भक्त की कोटि में रखने का सफल प्रयत्न किया है।

आ) हनुमान : हनुमान मूलतः मुग्रीव के सेवक होने पर भी राम के अनन्य भक्त हैं। वे स्वयं मानस में कहते हैं कि 'राम ते अधिक राम कर दासा'। वे भक्ति और शक्ति का प्रतीक हैं। सीता शोध एवं लक्ष्मण मूर्छा प्रसंगों में उनकी वीरता के साथ नम्रता, निर्भोक्ता, दृढ़ता, दक्षता तत्परता, कर्मठता निश्चलता, अहंकारशून्य दूरदर्शिता आदि गुणों का समन्वय भी है। दास्य भक्ति के कारण मानस में उनका एक अपूर्व स्थान है। हनुमान के माध्यम से स्वयं तुलसी राम के अति निकट पहुंचने का प्रयत्न करते हैं।<sup>१</sup> राम के प्रथम दर्शन में भी हनुमान उनसे भक्ति की याचना करते हैं और राम को सामीप्य प्राप्ति ही उनका लक्ष्य है।

लेकिन मोल्ल के हनुमान कुछ हद तक तुलसी के हनुमान से मिलते—जुलते हैं। मोल्ल के हनुमान राम के एक सुबन्धु के रूप में हमारे सामने आते हैं। लक्ष्मण मूर्छा के संदर्भ में जब राम लक्ष्मण के पराक्रम को दुहराकर विलाप करते हैं तब हमें लगता कि राम में अधिक प्यार हनुमान का लक्ष्मण के प्रति हैं।<sup>२</sup> बाद में सुन्दर काण्ड में हमें हनुमान ही दिखाई पड़ते हैं

जहाँ रावण को राम का पराक्रम दिखाते हैं। सीता को ढाढ़स देते हैं और राक्षसों को डराते हैं। लक्ष्मण मूर्छा के बाद काल-नेमि का वध करके जब पर्वत लाते हैं तब हनुमान का शौर्य अभिव्यक्त होता है।<sup>१</sup>

### २-१३ नायक ने संबंधित स्त्री पात्र :

नायक से संबंधित स्त्री पात्रों में नायिका जानकी, राजमाताएं, कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी उल्लेखनीय हैं।

१ सीता : मानस और मोल्ल रामायण दोनों में सीता का चरित्र लौकिक और अलौकिक दोनों तत्वों से युक्त है लेकिन मानस की सीता प्रायः परम शक्ति, मायापति राम की माया और विष्णु राम की लक्ष्मी मानीगयी है।<sup>२</sup> लेकिन मोल्ल की सीता प्रायः अपने समय की पददलित स्त्री समाज का प्रतिनिधित्व करती है। फिर भी मानस की सीता पुष्पवाटिका में राम को निज निधि समझ लेती है और पिता के पण को समझकर शिव धनुष को लघुतर बनाने के लिए देवताओं से प्रार्थना करती है। मोल्ल रामायण में विवाह के पूर्व सीता और राम का मिलन नहीं हुआ था। इस तरह पूर्व राम का रूप मोल्ल को सीता में नहीं है। सीता की पत्नी के रूप में मानसकार ने नहीं भी कामुकता का लेश मात्र अभास आने

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ५।१२५-२०७

<sup>२</sup> मानस, १।१८७, १।३०६, ३२७, १।१९२, १।४८०क ५

नहीं दिया। मानस की सीता की वन-महगमन प्रार्थना में उनकी पति सेवा परायणता का वर्णन किया गया है। लेकिन मोल्ल रामायण की सीता पति से बिना प्रार्थना किये उनके साथ चलने के लिए तंकार होती है। सीता के वियोगिनी रूप मानस की अपेक्षा अधिक प्रस्फुटित हुआ है। मोल्ल एक स्त्री होने के कारण सीता के पात्र में स्त्री का हृदयंगम रूप की मृष्टि करने में सफल हो सकी।<sup>१</sup> मानस में गंगा पार करके उत्तराई के रूप में गुह को मणिशुद्रिका के रूप में, ग्रामीण स्त्रियों के समक्ष भारतीय विधि से राम का परिचय देते समय<sup>२</sup>, चित्र कूट प्रवास में सूर्यास्त के पश्चात अपने माता पिता के पास अपने ठहरने का आनन्दचित्य का संकेत करने में सीता की व्यावहारिक कुशलता स्पष्ट होती है। लेकिन मोल्ल रामायण में इन प्रसंगों का उल्लेख नहीं है। तुलसी ने उनकी पत्नी और गृहिणी रूप का जो मनीरम चित्रण मानस में किया है वह मोल्ल रामायण में नहीं है।

२ कौसल्या : मानस में पत्नी, सपत्नी, माता एवं विमाता के रूप में कौसल्या का चरित्र उल्लेखनीय है। इसके साथ उनका त्याग, विवेक, औदार्य, गांभीर्य और सहदयता का भी निरूपण किया है। राम को वन-सह-गमन की अनुमति देते समय उनके हृदय में धर्मस्नेह एवं पुत्र स्नेह का विचित्र संघर्ष

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ५१४१, ४२, ८२, १०४-१११

<sup>२</sup> मानस : २१२८७ २११७

होता है। राम के सामने कौसल्या अपनी दृढ़ता और निर्ममता का जो स्पष्टीकरण करती है, वह उनके मुक्ति विवेक, सप्तनी प्रेम तथा विगाल हृदय का द्योतक है।<sup>१</sup> भरत को सांत्वना देते समय कौसल्या के पथ श्वरण का उल्लेख करके तुलसी ने यम वात्सल्य के उद्रेक का निर्दर्शन कर दिया।<sup>२</sup> लेकिन मोल्ल ने कौसल्या के माडु रूप का दो एक स्थानों में थोड़ा सा संकेत दिया जो उल्लेखनीय नहीं है। मोल्ल काव्य रूपों की सीमाओं में बंधी हुई होने के कारण तुलसी का भाँति कौसल्या आदि पात्रों का चरित्र चित्रण पूर्ण रूप से कर नहीं पायी।

३ सुभित्रा : सुभित्रा का मातृ रूप हमें नव गोचर होता है जब वह लक्ष्मण को राम के परब्रह्मत्व का परिचय देकर उनकी भेवा करने का आदेश देती है। मानस में ऐसे पात्र अनेक हैं जिन्हें राम के ईश्वरत्व का ज्ञान है और कथा के बीच उनका उल्लेख केवल ईश्वरत्व के प्रसार और प्रचार के लिए है। लेकिन मोल्ल रामायण में हमें सुभित्रा दिखाई नहीं देती। लक्ष्मण वनवास के लिए प्रस्तान होते समय माता से आशीर्वाद लेनेवाला प्रसंग भो मोल्ल रामायण में नहीं है।

४ कैकेयी : कौसल्या के समान कैकेयी का भी पत्नी सप्तनी, माता और विमाता का रूप मानस में स्पष्ट दिखायी देता है। मंथरा क्षोभ के पूर्व तक तो कैकेयी को राम पर

अनुराग है। लेकिन उसके बाद उसकी पति, सप्तनीयों एवं सप्तनी पुत्रों के प्रति अपकर्ष उत्पन्न होता है। वर की याजना करते समय अपनी ईर्ष्या इस प्रकार व्यक्त करती है।

कहइ करउ किन कोटि उपायो। इहां न लागहि राउर आया।  
राम साधु तुम साधु सयाने। राम मातु भलि पहिचाने ॥१

इस प्रसंग में कैकेयी लोभ, मोह, अभिमान, अविवेक, दुराग्रह आदि से युक्त कृद्ध नारी के रूप में वर्णन किया है। मोल्ल की कैकेयी अपने पति को अनुनय करके वरों की याद दिलाकर राम को वन भेजने की अपनी इच्छा प्रकट करती है।<sup>१</sup> मोल्ला की कैकेयों में अपने पुत्र की भलाई के अतिरिक्त सप्तनी का द्वेष नहीं है।

१-१४ राम से संबन्ध रखनेवाले गौण पात्र :

१ अगत्स्य : ये श्रीराम के परम भक्त हैं। घटयोनि कुंभज इनके अन्ध नाम हैं। मानस में यह नाम १५ बार आया है। वेतायुग में शिव जी और पार्वती इन से कथा सुनते हैं। चित्रकूट के प्रस्थान करने के बाद स्वयं राम ने इनसे अपने भावि निवास स्थान के बारे में राम मांगी थी।<sup>२</sup> लोक कल्याण को दृष्टि में रखकर उन्होंने विध्यंचल का व गर्व दूर किया। इनके बचनानुसार राम दण्डकारण्य की निखाचरों से मुक्त करके

१ मानस, २१३३

२ मानस, ३१७२-३०

३ „ २१२९६-१

पवित्र किया है।<sup>१</sup> अगत्स मानस की ससूचि मूलकथा को रोककर एक निश्चित दिशा म प्रत्यावर्तित करनेवलों में एक है।<sup>२</sup> लेकिन मोल्ल रामायण का अगत्स्य एक रूप है जिनसे ग्राम बनवास के प्रारंभ और अंत में पात्र मिलते हैं।<sup>३</sup> इसके अतिरिक्त उनका कोई उल्लेख नहीं हुआ।

<sup>२</sup> अग्निदेव, मानस में अग्नि का प्रकाश पवित्रता और सूक्ष्म वस्तु के रूप में अनेक बार प्रयोग हुआ है। दशरथ जी जब पुत्र कामेप्ठि करते हैं तक एक बार प्रकट करते हैं। और सीता धर्मचरण के लिए जब अग्नि में प्रवेश करती है तब अग्नि देव प्रकट होकर एक गौण पात्र के रूप में अपना परिचय देते हैं।<sup>४</sup> मोल्ल रामायण में भी अग्नि देव का माध्यात्कार इन दो प्रमगाँ में ही हुआ है।<sup>५</sup>

<sup>३</sup> अनसूया : सीता को पातिव्रत्य का उपदेश देनेवाली ऋषि पत्नी के रूप में अनसूया मानस में आती है। मानस में उनकी तपस्मिनी रूप का भी उल्लेख है।<sup>६</sup> लेकिन माल्ल रामायण में केवल अनसूया के नाम का उल्लेख पात्र है।<sup>७</sup>

<sup>८</sup> अहल्या : पति के शाप के कारण अहल्या पत्थर का

<sup>१</sup> मानस का कथा गिल्प, पृ. २१९

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, २।३५

<sup>३</sup> मानस, १।१८८-३, ६।१०८-छ. ९

<sup>४</sup> मोल्ल रामायण, १।२७,३८, ६-३।७८१

<sup>५</sup> मोल्ल रामायण, १।३७, ३८ ६-३।१२१

<sup>६</sup> मानस, ३।४-१

<sup>७</sup> मोल्ल रामायण, ६-३।१२५

रूप धारण करके राम के चरणों की स्पर्श के लिए निरीक्षण करती है। राम चरण का स्पर्श मात्र ही तपोमूर्ति के रूप में प्रकट होती है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में भी यह प्रसंग मानस के जैसा ही है।<sup>२</sup>

५ गुहराज़ : राजा गुह निषाद पति है। मानस में वे केवट, गुह और निषाद के नाम से पुकारा जाता है। लेकिन मोल्ल रामायण में उनका उल्लेख एक ही बार हुआ है। वह राम पदों का प्रक्षालन करने की अपनी इच्छा प्रकट करते समय में ही मोल्ल रामायण में आता है।<sup>३</sup> लेकिन मानस में अधिक बार उल्ख किये जाने के कारण एक भक्त, भावुक और सहज प्रेमी के रूप में हमारे सामने आता है।<sup>४</sup> सुमंत के रथ के घोड़ों की दशा देखकर उसकी विह्वलता और भी बढ़ती है। राम के सुख दुःख में अपना सुख दुःख देखकर राम के लिए अपना प्राण तक न्योछावर करने के लिए तैयार होता है। राम के निरीक्षण करते हुए चौदह वर्ष बिताता है।

६ गौतम : अहल्या के पति है। मानस में इन्द्र के साथ अपनी पत्नी का अनुचित संबन्ध देखकर उसे शाप देते हैं।<sup>५</sup> लेकिन मानस के जैसे अहल्या का शाप वृत्तांत मोल्ल

१ मानस, ११२१०

२ मोल्ल रामायण, ११६२-६३

३ मोल्ल रामायण, २१३१-३२

४ वही, २११०३-४

५ मानस, १११२०

रामायण में नहीं हैं। लेकिन अहल्या राज-लक्षण वो अपना उदंत मुत्प्रते समय गौतम का नामोल्लेख करती है।<sup>१</sup>

**७ जटायुः** : यह परोपकारी है। सीताजी की आर्तवाणी सुनकर उनकी सहायता करने के लिए रावण से युद्ध करता है और स्वयं धायल हो जाता है। यह राम के द्वारा मोक्ष प्राप्त करता है।<sup>२</sup> मोल्ल रामायण में भी जटायु का वृत्तांत इसी रूप में है।<sup>३</sup> मानस में जटायु रावण को नीति का उपदेश देता है और राम को अपना पिता समझता है।

**८ जनकः** : येह निभि वंश राज और मिथिलाधि पति है। मानस के अनुसार वे भोग को योग में गुप्त रखनेवाले श्रेष्ठ राजर्षि हैं। जब धनुष भंग नहीं होता तब वे साधारण पिता के समान व व्यथा का अनुभव करते हैं।<sup>४</sup> लेकिन मोल्ल रामायण के में जनक सिर्फ एक बार दिखाई पड़ने हैं। सीता स्वयंवर के प्रसंग में जनक सभी योद्धाओं को शर के बारे में परिचय देते हैं।<sup>५</sup> जब राम का शर का भंग करते हैं तब जनक उनकी प्रशंसा करते हैं।<sup>६</sup>

**९ तारा :** यह वाली की पत्नी और अंगद की माता हैं। मानस में इसका नाम चार बार उल्लिखित है। यह पतिपरायण

१ मोल्ल रामायण, ११६५

२ मानस, ३१२५

३ " " १४०-४५

३ " ११५१-३

४ " " ११७०

६ वही, ११८२

स्त्री और राम की कृगा से जीव की नित्यता और शरीर की अशाश्वतता का उपदेश तथा जा' प्राप्ति करती है। वह भगवान से भक्ति को याचना करती है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में वालि के मरण के बाद तारा देवी आती है और राम उसके दुःख का उपशमन करने का प्रयत्न करते हैं।<sup>२</sup> इस के अतिरिक्त तारा मोल्ल रामायण में कही नहीं आती।

<sup>१०</sup> नल और नील : ये दोनों वानर सेना के श्रेष्ठ योद्धा हैं। वे वीर ही नहीं, लेकिन शिल्प कर्मी भी हैं। इस लिए जब बांध आसानी से नहीं बनती तो समुद्र मानस रूप धारण करके राम से कहते हैं कि अगर सेतु उनके बांधा जाय तो कार्य आसानी से हुँ सकता है।<sup>३</sup> मानस में वे सीता न्वेष में भी भाग लेते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में नल का ही उल्लेख है नील का नहीं। वह भी समुद्र के मुह से सेतु निर्माण का विषय सुनने पर है।<sup>४</sup>

<sup>११</sup> नारद : मानस में नारद का विशिष्ट स्थान है। वे हिमवान और मेना को समझाकर शिव जी से पार्वती का विवाह कराने के लिए पूर्व जन्म की कथा सुनाते हैं। वे समय संयमी और काम विजेता देवर्षी हैं। लेकिन एक बार वे विष्णु

<sup>१</sup> मानस, ४११०-३

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ४११४

<sup>३</sup> राम चरित मानस, ६१२-४

<sup>४</sup> मोल्ल रामायण, ६-११४१-४४

माया के बांधूत हो और अवनानित होते हैं। इसके परिणाम स्वरूप में उन्हें अत्यधिक पश्चात्तप्त होना पड़ा। वे अहं को छोड़ देते हैं।<sup>१</sup> वे बार बार अयोध्या जाते हैं और राम के चरित्र को गाते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण के वक्ता श्रोता नारद और वाल्मीकि हैं। इस लिए नारद एक पाव रूप में नहीं आते।

**१२ परशुराम :** राम के धनुर्भग के बाद जो भयंकर उठती है उससे कृद्ध होकर परशुराम राम को मारने आते हैं। लेकिन परशुराम ब्रह्मण होने के कारण राम उनसे युद्ध नहीं करते। जब परशु राम के धनुष को भी राम भंग करते हैं तब राम के ईश्वरत्व के ज्ञान से अवगत होकर परशुराम चले जाते हैं।<sup>२</sup> मोल्ल रामायण में भी परशुराम धनुर्भग के बाद आते हैं और राम की शक्ति की परीक्षा करके चले जाते हैं।<sup>३</sup> मानस के जैसे इस काव्य में लक्ष्मण परशुराम का संवाद नहीं है।

**१३ वाली :** मानस में वाली के शैर्य को व्यक्त करने वाले अमेक प्रसंग हैं। उनका भाई सुश्रीव जब राम के शरण में जाते हैं तब भी वे धैर्य के साथ युद्ध करते हैं। और मोक्ष को प्राप्त करते हैं।<sup>४</sup> मोल्ल रामायण में भी वाली को राम फेड के पीछे खड़े होकर मारते हैं। इस काव्य में भी राम का वाली को मोक्ष देने का उल्लेख है।<sup>५</sup>

<sup>१</sup> मानस, ११३६-६

<sup>२</sup> राम चरित मानस, १२८४

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, १८५-१६

<sup>४</sup> मानस, ८१९-२

<sup>५</sup> मोल्ल रामायण, ४१९४

१४ मंथरा : कैकेयी की एक मंद बुद्धि दासी है जो गणी को वरों की याद दिलाकर भरत को राज्याभिषेक करनेकी सलाह देती है। मानस के अनुसार सरस्वती स्वयं मंथरा में प्रदेश करके राम को वन गमन के लिए बाध्य करती हैं।<sup>१</sup> लेकिन मोल्ल रामायण में मंथरा स्वयं कैकेयी को भरत के राज्याभिषेक की तैयारी की सलाह देती है। इस में सरस्वती की प्रेरणा की सूचना नहीं हैं।<sup>२</sup>

१५ वशिष्ठ : यह भानुवंश के कुल गुरु हैं। संतान प्राप्ति के लिए पुत्र कामेष्ठि यज्ञ करने की सलाह दशरथ को वशिष्ठ देते हैं।<sup>३</sup> मोल्ल रामायण में भी इस प्रसंग का उल्लेख है। इस के बाद जब जनक राम के राज्याभिषेक के लिए तैयारी करते हैं, तब वशिष्ठ से उसकी चर्चा करते हैं।<sup>४</sup> अन्त में रावण संहार के बाद जब निहासन पर उपविष्ट होते हैं तब अभिषेक का उत्सव स्वयं वशिष्ठ मानते हैं।<sup>५</sup>

१६ वाल्मीकि : ये एक महर्षि और ब्रितिकाल ज्ञानी हैं। मानस में राम उनका दर्शन करते हैं और उनकी भक्ति पूर्वक स्तुति करते हैं। वे राम के सच्चे हितैषी और महापुरुष हैं। जब राम उससे निवास स्थान के बारे में पूछते हैं तब वे बताते हैं।

<sup>१</sup> मानस, २।१२

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ३।२३

<sup>३</sup> „ १।३०२-१

<sup>४</sup> „ „ २।४

<sup>५</sup> „ „ ६-३।१३१

निदरहि सरित सिंधु सर भारी। रूप बिंधु जल होहि मुकारी॥  
तित्व के हृदय सदन सुखदायक। बसहु बंधु सिय सह रघुनायक॥<sup>१</sup>  
लेकिन मोल्ल रामायण में वाल्मीकि एक पाव के रूप में नहीं  
आते हैं। वे इस काव्य के श्रेता के रूप में आते हैं।

१७ विश्वामित्र : मानस में इनका उल्लेख कई बार किया है। अपनी यज्ञ की रक्षा के लिए राम लक्ष्मण को दशरथ की आज्ञा से ले जाते हैं। सीता स्वयंवर में जनक को राम-लक्ष्मण का परिचय देते हैं। राम को मंत्रोपदेश देते हैं और उनको अपना शिष्य मानने में गर्व का अनुभव करते हैं। मोल्ल रामायण में भी ये सभी विशेषताएँ हैं। लेकिन अहल्या शाप के उपर्यांत विश्वामित्र राम के ईश्वरत्व की प्रशংসा करते हैं। यह मोल्ल की मौलिकता है।<sup>२</sup>

१८ शबरी : शबरी भील जाति की स्त्री है। कबन्ध उदार के बाद लक्ष्मण साहित राम शबरी के आश्रम में पधारते हैं और शबरी मातंग मुनि के वचनों का स्मरण करते प्रसन्न होती है। राम के दर्शन के बाद शबरी की स्थिति का मुन्द्र वर्णन तुलसी करते हैं।<sup>३</sup> वह भक्ति पूर्वक उनका आदर सत्कार करती है। वह अपने को नीचातिनीच समझकर राम ने भक्ति की याचना करती है।<sup>४</sup> लेकिन मोल्ल रामायण में शबरी की भक्ति भावना का उल्लेख नहीं है। यह राम का आदर

१ मानस, २१९२८-४

२ मोल्ल रामायण, ११९६४

३ मानस, ३१३४-२

४ वही, ६१३३-५

मत्कार करती है और सुग्रीव का वृत्तांत मुनाकर सीतान्वेषण के लिए उनसे मित्रता रखने की सलाह देती है।<sup>१</sup>

१९ संपाति : संपाति जटायु का भाई है और समुद्र के किनारे गुफा में रहते हैं। वह वानरों को जटायु का वृत्तांत मुनाकर रघुनाथ की महिमा को वर्णन करते हैं।

मुनि संपाति बंधु के करनी। रघुपति महिमा बहुविधि करनी। मोल्ल रामायण में भी इसी रूप में यह प्रसंग है।<sup>२</sup>

२० सूमंत : दशरथ के मित्र और आजाकार मंत्री हैं। कैकेयी के यहां दशरथ की स्थिति देखकर उनका हृदय पिगल जाता है। वन में सीता राम और लक्ष्मण को छोड़कर अपने कर्तव्य निभाते हैं। वन प्रस्तान के समय जब राम जाटाएं बनाते हैं तब सुमंत्र बालक के जैसे बिलखकर रोते हैं।<sup>३</sup> मोल्ल रामायण में सुमंत्र का एक बार उल्लेख हुआ। कैकेयी की इच्छा को स्वीकार करके दशरथ सुमंत्र से अपनी असहाय स्थिति को स्पष्ट करते हैं।<sup>४</sup>

२-१५ मानस के नायक के परिकर पात्र जो मोल्ल रामायण में नहीं हैं।

मानस में जत्री, अदिथि, अरिमर्दन, अरुंधती, इन्द्र, उत्तान-

१ मोल्ल रामायण, ३।७१-७३

२ मोल्ल रामायण, ५।६

३ मानस, २।८३-३

४ मोल्ल रामायण, २।२९

पाद, ऊर्मिला, कश्यप, कामदेव, कुबेर, जयंत, जयविजय, जलधर, दक्षप्रजापति, देवहुति, धर्मरुति, प्रतापभानु, वृहस्पति, स्वयंभु, मांडवी, रत्ती, विश्वमोहिनी, शतरूपा, शतानंद, शतृघ्न, शरभंग, शीलनिधि, श्रुतिकीर्ति, सत्यकेनु, मुतीक्षण, मुनयन मुरसा आदि अनेक पात्र हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में इन सब का उल्लेख नहीं है। इन में अधिकांश पात्र आधिकारिक कथा के नायक राम के परिकर पात्र हैं। कुछ पात्र प्रामाणिक कथा से भी गद्धित पात्र हैं और उनकी संख्या गोण हैं। कुछ अनामक गौण पात्र भी हैं—लघुवय तापसी, प्रभावनी, नृसिंहाराण में प्रमा आदि।

## २-१६ निष्कर्ष :

नायक के परिकर पात्रों की संख्या मोल्ल रामायण की अपेक्षा मानस में अधिक है। तुलसी ने हर पात्र को कुशलता के साथ चिह्नित किया है। मोल्ल रामायण में मुख्य पात्रों के चरित्र का निर्वहण ही संतोष जनक नहीं हो तो गौण पात्रों के संबन्ध में अधिक आशा नहीं की जा सकती। फिर भी मोल्ल रामायण में नायक के साथ साथ उनके परिकर पात्रों का भी मुन्दर निर्वाह किया गया है।

## २-२ प्रतिनायक और उनसे संबन्धित परिकर पात्र :

मोल्ल और रामचरित मानस दोनों में रावण प्रतिनायक है। मानस में रावण के पूर्वजन्म वृत्तांत का विवरण है जो

मोल्ल रामायण में नहीं है। जय-विजयों की कहानी से मानस-कार शुरू करते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में कवि भगवान विष्णु को रावण के अत्याचारों के संबन्ध में घरिचम देते हैं। उनके कल्याण के लिए भगवान नर रूप धारण करने का आश्वासन मुनियों को देते हैं।

## २-२१ रावण :

काव्य शास्त्रों में प्रतिनायक को लुध, धीरोद्धत, पापी और व्यमनी कहा गया है। तुलसी राम और रावण में काव्य-जास्त्रीय लक्षणों का पूर्ण निर्वाह करते हैं। रावण और तपस्या से महात शक्ति प्राप्त करता है। इसकी वजह से उनमें काम, क्रोध, लोभ और मोह का समावेश हो जाता है। लेकिन मानस में गवण का अत्याचार जिस रूप में प्रस्तुत है उस रूप में मोल्ल रामायण में नहीं है। कुबेर से पुष्पक विमान छीन लेना, देव, यक्ष आदि की कुमारियों को बल पूर्वक वरण करते के साथ यज, गो, ब्राह्मण आदि का नाश भी करते हैं।<sup>१</sup>

मानस का रावण बड़ा शक्तिशाली है। कैलास का उत्थोलन, रवि, शशि, पवन, वरुण, कुबेर आदि देवताओं के वशीकरण की कट्टमाण उसकी शक्ति की परिचायक हैं।<sup>२</sup> इस प्रसंग को रावण, राम, मंडोदरी, अंगद आदि के समक्ष चार बार कहता है।

मोल्ल रामायण में भी रावण की इस विजय परंपरा का उल्लेख है। रावण सीता के समक्ष अपनी अद्वितीय शक्ति, इन्द्र कुबेर, वासुकि, समुद्र, वागु, गुरु, आदि पर उनकी शक्ति की धाक गंधर्व, मुर, यक्ष, गरुड़, किन्नर, भुजग, सिद्ध, किंपुरुष आदि सुन्दरियों का उनका वश वर्ता होना, शंकराचल को गेन्द के समान उठाना, सर्व दिक्षालों और शत्रु राजाओं को पराजित करना आदि बातों की चर्चा करता है। अन्त में जब राम रावण से युद्ध करता है। अन्त में जब राम रावण से युद्ध करता है तब हमें रावण की शक्ति का सच्चा परिचय मिलता है। इस प्रसंग को मोल्ल मौलिक रूप से प्रस्तुत करती है।

अपनी अप्रतिभ शक्ति है कारण रावण अहंकार ग्रस्त हो जाता है। मानस में शूर्पणखा से उसका निरूपण और रामका शौर्य सुनकर उनका अहम् सर्व प्रथम क्षुब्ध होता है और वह प्रतीकार के लिए सीता हरण की योजना करता है। मारीच को माया मृग बनने को बाध्य करता है। लंका दहन सुनकर रावण भयभीत नहीं होते और सेतु बंधन के बाह मंडोदरी की सुफाव को ग्रहण नहीं करते।<sup>1</sup> लेकिन मोल्ल रामायण में विभीषण, कुम्भकर्ण, मंडोदरी सभी सुफाव देते हैं जिसे रावण तिरस्कार कर देते हैं। लेकिन रावण का अहम् सुन्दरकाण्ड में सीता के सामने राम का अपमान करके अपना बड़प्यन व्यक्त

करने में<sup>१</sup> और युद्ध काण्ड में राम के सामने अपने जौर्य का उद्घाटन करने में स्पष्ट होता है।<sup>२</sup>

राम के कारण का सच्चा परिचय हमें नहीं मिलता। इस का कारण सीता के प्रति तुलसी का पूज्य भाव है। मानस में रावण सीता के हरण करते समय उनके चरणों की मन ही मन बंदना करते हैं।<sup>३</sup> अशोक वाटिका में भी उनसे केवण एक कृपा दृष्टि की याचना का ही उल्लेख है। मोल्ल की शूर्पणका हिन्दी के गीति कालीन कवियों की भाँति सीता का नखशिख वर्णन करके लिए मत्तेभ कुम्भस्तनी, संबोधन का प्रयोग करती हैं।<sup>४</sup> इस प्रकार मानस और मोल्ल रामायण और मानस में सीता के प्रति रावण की दृष्टि में काफी अंतर दिखायो पड़ता है। मोल्ल रामायण में सीता रावण की कामुकता को आलंबन के रूप में दृष्टिगोचर होती है। इसका कारण यह है कि सीता राम के प्रति तुलसी की भक्ति भावना पराकाष्ठा तक है। मोल्ल रामायण में सीता राम का वर्णन प्रायः मानवीय धरातल मर किया गया है। भक्ति के रूप में चाहे असीम भक्ति राम के प्रति क्यों न नहीं हो, पर कवि के रूप में इस का प्रायः अभाव ही अनेक प्रसंगों में देखने को मिलता है।

क्रोध मानस के रावण का अभिन्न स्वभाव बन गया है।

१ मोल्ल रामायण, ५/६८-७९

२ मोल्ल रामायण, ५-३/७८-८५

३ मानस, ३/२८

४ मोल्ल रामायण, ३/२१-२५

‘इसी क्रोध के कारण वह देवताओं पर आक्रमण करके उन्हें अपने वश में कर लेता है। शूर्पणखा का विरूपण देखकर उसका शरीर क्रोध से मानो जल जाता है।<sup>१</sup> उसके क्रोध से मारीच, माल्यवत, शुक, प्रहस्त और कालनेमि आदि का साहस समाप्त होता है। मोल्ल रामायण का रावण दी बार अपना क्रोध प्रकट करता है—जब सीता अपना प्रेम स्वीकार नहीं करती तब रावण क्रोध व्यक्त करते हैं।<sup>२</sup> दूसरी बार जब देवगण युद्ध काण्ड में रावण पर ओलों की वर्षा करते हैं तब रावण अपना क्रोध प्रकट करता है।<sup>३</sup>

खारे सागर में रत्नों की भाँति रावण में कुछ विशिष्ट गुण भी हैं। तुलसी ने रावण के चरित्र चित्रण में वैर भवित के ममन्वय से एक अद्वितीय चमत्कार उत्पन्न कर दिया है। लेकिन मोल्ल का रावण एक कुशल योद्धा के रूप में दृष्टिगोचर होता है। राम जब पृथ्वी पर खड़े होकर युद्ध करते हैं, तब रावण अपने सारथी के साथ शिरस्वाण और रथ को भेजते हैं। राम विभीषण के वचनानुसार शिरस्वाण को स्वीकार करके बाकी बीजें लौटाते हैं।<sup>४</sup> इस प्रसंग में मोल्ल रावण के चरित्र को एक उदात्त धरातल पर ले जाती है। रावण के योद्धा का शुर रूप के सामने राम का चरित्र भी म्लान पड़ जाता है। धोड़ी देर

<sup>१</sup> वही, ५।४३-५६

<sup>२</sup> मानस, ३।२२

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ५।६८-७६

<sup>४</sup> मोल्ल रामायण, ६-३।६३-६९

के लिए रावण के चारित्रिक दुर्बलता औं पर परदासा पड़ जाता है। राम के विपक्षियों के चरित्र का ऐसा उदात्तीकरण तुलसी को कभी स्वीकार्य नहीं, क्योंकि ऐसा करने से उनके उद्देश्य में बाधा पड़ जाती है।

## २-२२ प्रतिनायक के परिकर गौण पात्र :

१ अकंपन : अकंपन रावण का सच्चा अनुगामी, उसकी सेना का प्रधान नायक और रिस्ते में उनका मामा हैं। मानस के लंका काण्ड में इस के संबन्ध में उल्लेख है।<sup>१</sup> यह भयंकर योद्धा हैं। और मायाकी तथा चक्रुर सेनापति हैं। यह हनुमान के हाथों में मारा जाता है। लेकिन मोल्ल रामायण में अकंपन का उल्लेख नहीं है।

२ अक्षय कुमार : यह रावण तथा मंडोदरी का कनिष्ठ पुत्र है मानस में इसका एक हो बार उल्लेख है। मानस में वे केवल पितृ वाक्य परिपालक के रूप में ही दिखायी पड़ते हैं। पिता की आज्ञा पर हनुमान से युद्ध करता है और हनुमान द्वारा इस की मृत्यु होती है।<sup>२</sup> मोल्ल रामायण में भी रावण की आज्ञा से अक्षय कुमार हनुमान से युद्ध करता और उनसे मारा जाता है। हनुमान और अक्षय कुमार के युद्ध का विस्तारणत वर्णन मोल्ल रामायण में है।<sup>३</sup>

<sup>१</sup> मानस, ६।४५-१०, ६।६२-११

<sup>२</sup> मानस, ५।१७-४                   <sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ५।१५०-१५७

३ अतिकाय : दैत्यराज रावण का पुत्र है। स्थूल काय होने के नाते अतिकाय नाम से प्रसिद्ध है। वह रणधीर और अकेले ही सारी जगत को जीतनेवाला योद्धा है।<sup>१</sup> यह मायावी और चतुर सेनानायक भी है। रावण सेना का वह मुख्य नायक है। जब रावण कुम्भकर्ण को अपनी सेना के प्रमुख सेनानायकों की मृत्यु का समाचार सुनाता है तब उनमें इसका भी नाम लेता है। मोल्ल रामायण के अनुसार कुम्भकर्ण और अतिकाय दोनों लक्ष्मण के हाथों मारे जाते हैं।<sup>२</sup>

४ अरिमर्द्धन : यह राजा सत्यकेनु का दूसरा लड़का तथा प्रतापभानु का भाई है, यह अपार बलशाली तथा वीर योद्धा है। नाम तथा गुण के अनुसार यह मच्छुव अरियों के मान का मर्द्धन करनेवाला है।<sup>३</sup> यह अत्यत भ्रातृ प्रेमी है। भाई के साथ रण में अपने प्राणों की बाजी लगा लेता है। यही अगले जन्म में शाप वश परम बलशाली कुम्भकर्ण के रूप में जन्म लेता है।<sup>४</sup> मोल्ल रामायण में इस गौण पात्र का उल्लेख नहीं है।

५ कबन्ध : यह राक्षस है। तुलसी राम के द्वारा उसका वध करवाकर राम की महता पर प्रकाश डालते हैं।<sup>५</sup> राम के हाथों मारे जाने के बाद वह अपना वृत्तांत सुनाता है। राम के प्रति भक्ति होने के कारण वह सद्गति पाकर आकाश में चले

<sup>१</sup> मानस, ११९८०

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-१५०-५१

<sup>२</sup> मानस, ६१९०-४

<sup>४</sup> मानस, ११९७५-२

<sup>५</sup> वही, ११९७१

जाता है। मोल्ल रामायण में इस पात्र का उल्लेख नहीं है।

६ कालकेतु : के कालकेतु एक राक्षस है। यह कपट मुनि का मित्र है। यह मायावी और राजा प्रताप भानु को अपनी माया में घर पहुंचाता है। राजा के पुरोहित को लाकर उसकी बृद्धि को फेर लेता है।<sup>१</sup> आकाशवाणी के रूप में दूसरों की बातों को वर्षा करता है। यह सूकर बन कर राजा प्रतापभानु को भटकाता है। अपने पुराने वैर के कारण कपट मूनि से मिलकर षडयंत्र रचता है और छल से राजा को जाल में फँसाता है। वह राज परिवार को नाश करता है। मोल्ल रामायण में यह पात्र नहीं है।

७ कालनीमि : यह रावण का अनुचर तथा मामा है। यह मायावी और स्वामिभक्त है। रावण का आदेश पाकर मुनिवेश धारण करता है और औषधि लाने के लिए जाते हुए हनुमान के मार्ग में विघ्न उपस्थित करने के लिए माया रचता है और इसी प्रयत्न में पर जाता है। यह राम का भक्त और रावण को भी नीति का उपदेश देता है।<sup>२</sup> जब रावण नहीं मानता तब उनकी आज्ञा का पालन करता है। मोल्ल रामायण में भी वह हनुमान को देखा देने का प्रयत्न करता है और अन्त में उन्होंने के हाथों पर जाता है। यह प्रशंग मानस के जैसे मोल्ल रामायण में है।<sup>३</sup> पहले कालनीमि मुनि का रूप धारण

<sup>१</sup> मानस, ६।५५-३

<sup>२</sup> मानस, ६।५५-३

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ६-२।६६-७५

करता है और हनुमान को धोखा देने के लिए सुग्रीव का रूप भी धारण करना है।<sup>१</sup>

८ कुम्भकर्ण : यह पुलतस्य ऋषि के षौत्र तथा लंका पति का भाई है। मानस के अनुसार यह विजय और अरिमद्धन का अवतार है। यह विशाल और भारी शरीर वाला है। इसके चलने से धरती कांपती है। यह घोर तपस्वी भी है। यह पाम पश्चकमी, बलवान् तथा रण बांकुरा है।<sup>२</sup> यह संपूर्ण वानर सेना को व्याकुल करता है। अपने भाई की व्याकुलता को दूर करने के लिए प्राण तक छोड़ देता है। वह राम का भक्त और सीता को जगज्जननी मानता है।<sup>३</sup> अन्त में वैर भाव की भल्ति होने के नाते इसका तेज रामचन्द्र जी के मुह में समा जाता है। लेकिन मोल्ल रामायण में वह राक्षस है और राम का प्रच्छन्न भक्त नहीं है। यौका आने पर विभीषण के साथ रावण को राम के ईश्वरन्व का उपदेश देता है।<sup>४</sup> यह एक वीर भी है। युद्ध में वानरों को खा लेता है। उस समय राम उत्तरा संहार करते हैं।<sup>५</sup> यह मानस के जैसे मोल्ल रामायण में आकार प्रकार, आहार-व्यवहार, निद्रा-प्रिय और प्रचण्ड योद्धा के रूप में दिखाई पड़ता है।

९ खर-दूषण : वे दोनों रावण और शूर्पणखा के भाई हैं।

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-२१७५

<sup>२</sup> मानस, १११७६-३

<sup>३</sup> मानस, ६१६२

<sup>४</sup> मोल्ल रामायण, ६-१११४-१८

<sup>५</sup> वही, ३-१५०-५१

दोनों युग्म के रूप में मानस में प्रकट होते हैं। मानस में खर-दूषण और त्रिशरा तीनों को भाई कहा गया है। पंचवटी में जब लक्ष्मण शूर्पणखा का नाक कान काट देता है तब खर-दूषण अपनी बहन का बदल लेने के लिए राम से युद्ध करते हैं।<sup>१</sup> और उन्हीं के हाथों में मारे जाते हैं। वे अत्यंत बलवान् राक्षस हैं। स्वयं रावण उनको अपने समान बलवान् मानता है। ये युद्ध नीति का आचारण करनेवाले हैं। इस लिए राम से युद्ध करने से पूर्व अपने मंत्री को दूत बनाकर राम के पास भेजते हैं।<sup>२</sup> मोल्ल रामायण में भी खर-दूषण अपनी बहिन का बदला लेने के लिए राम से युद्ध करते हैं। खर-दूषण का विकृत रूप राम से उनका युद्ध आदि का वर्णन विस्ता से मोल्ल रामायण है है।<sup>३</sup>

१० जलधर : मानस के अनुसार यह दैत्यों का राजा और वीर योद्धा है। यह देवताओं से युद्ध करता है और विजय प्राप्त करता है। यह शिवजी से भी माया युद्ध करता है।<sup>४</sup> यह अपना स्त्री की महिमा के कारण मृत्यु से बाहर बचता है। अन्त में भगवान् से मारा जाता है और अगले जन्म में रावण होता है।

११ तांडका · राक्षसी तथा सुकेतु नामकी एक वीर यक्ष

१ मानस, ३।१७-१

२ मानस ३।१८-१

३ मोल्ल रामायण, ३।११-१७

४ मानस १।१२२-३

की कन्या है। यह स्वभावतः अत्यंत क्रोधी और कृषियों का विरोध करनेवाली प्रचण्ड नारी है। यज्ञ का ध्वंस ही इसके जीवन का मुख्य कार्य है। वाल्मीकि रामायण के जैसे मोल्ल रामायण और मानस में ताढ़का के शाप वृत्तांत का वर्णन विस्तार से नहीं है। यह राम के बाणों का मार खाकर पृथ्वी पर यिर पड़ती है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में यह मुनियों के यज्ञ में बाधा डालने का प्रयत्न करती है। अपने गंभीर गर्जन से राम को डराने का प्रयत्न करती है। लेकिन राम के शर का मार लाकर पर जाती है।<sup>२</sup>

**१२ तारक :** एक देव विरोधी राक्षस और वज्रांग का पुत्र है। पार्वती के विवाह के प्रसंग के समय उसका उल्लेख हुआ है। यह लोकपाल और देवताओं को भी पराजित करनेवाला राक्षस है।<sup>३</sup> अन्त में वह स्वामी कार्तिकेय के हाथों में मर जाता है।

**१६ त्रिजटा :** त्रिजटा रावण द्वारा सीता की देख रेख के लिए अशोक वाटिका में नियुक्त की गयी राक्षसियों में एक है। यह समझदार, विवेकशील और ज्ञानी स्त्री है। यह सदैव सीता को सांत्वना देती है। यह सीता को युद्ध की घटनाओं से अवगत कराती है।<sup>४</sup> यह दूरदर्शी और भविष्य में होनेवाली

<sup>१</sup> मानस, ११२०८-३

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ११५१-५५

<sup>३</sup> मानस, ११८१-३

<sup>४</sup> मानस, ६१८७-१

घटनाओं को माप लेसेवाली नारी है। रावण की मृत्यु कैसो होगी? यह क्यों नहीं मरता? इन सब बातों का यह अनुमान कर लेती है।<sup>१</sup> यह राम की भक्तिन और सीता की सेवा इसका लक्ष्य है। मोल्ल रामायण में भी सीता की रक्षा करती है और अन्य राक्षसियां सीता के प्रति जब बुरी व्यवहार करती हैं, तब उन्हें समझाते हैं कि सीता कौन है? स्वप्न में आनेवाली घटनाओं को देखकर सीता को आश्वासन देती है कि राम जल्दी आयेगे और रावण को मारेंगे।<sup>२</sup>

१४ विसिरा : खर-दूषण का भाई तथा रावण का अनुचर है। यह योद्धा तथा अतुलनीय बलकान है। यह मूर्पणखा से सारा वृत्तांत सुनकर भाइयों के साथ राम लक्ष्मण से युद्ध करने के लिए आता है और राम के हाथों से मारा जाता है।<sup>३</sup> यह रावण का प्रिय व्यक्ति है। उनका वध सुनकर रावण जल उठता है। मोल्ल रामायण में इस राक्षस का प्रसग नहीं है।

१५ प्रताप भानु : यह सत्यकेतु का ज्येष्ठ पुत्र तथा केक्य देश का राजा है। यह आदर्श राजा, वीर योद्धा तथा प्रतापी है। यह दिग्विजय करके सातों द्वीपों को व्रश में करता है और सम्राट बनता है।<sup>४</sup> यह धर्म परायण राजा है। और वेदों की विधि के अनुसार राज्य पालन करता है। यह मन, वाणी और कर्म से अपने धर्म का निर्वाह करता है और सब

१ मार्नस, ६-११

२ मोल्ल रामायणा, ५१८५-८९

३ मानस, ३१३९

४ मानस, ११५२-३

भगवान वासुदेव को अर्पित करता है। यह आसानी से कपट मुनि के जाल में फस जाता है। यह बही के प्रति पूज्य भाव रखता है। कपटी मुनि के प्रति अपनाया गया व्यवहार इस का प्रमाण है।<sup>१</sup> यह लोकप्रिय व्यक्ति है। इसके दुःखद अंत को देखकर प्रजामण जिस रूप में प्रोक्त विह्वल हीला है, उससे इसकी लोकप्रियता का सच्चा रूप व्यक्त होता है। मोल्ल रामायण में इस राजा का वृत्तांत नहीं है।

१६ प्रहस्त : प्रहस्त रावण का पुत्र और नीतिपरायण है। मन्त्रिगों की बात सुनकर पिता से नीति के विरुद्ध कुछ भी न करने के लिए कठता है।<sup>२</sup> यह रावण को नीति का उप देश देता है।<sup>३</sup> यह दूरदर्शों तथा विशाल व्यवित है। रावण को राम की शक्ति का सही अंदाज कराता है और जब रावण इन बातों को नहीं मानता तो जगत की अडिग नियमों की बात कहता हुआ धर चला जाता है। मोल्ल रामायण में इस गक्षस का प्रसंग नहीं है।

१७ मय : यह दानव है। यह महान माछावी और निपुण कारीगर है। यह अपनी कन्या मंडोदरी का रावण से विवाह कराता है। यह रावण को राक्षसों का राजा जानकर अपनी कन्या देता है।<sup>४</sup> यह दहेज के रूप में रावण को त्रिकूट पर्वत सजाकर देता है। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग भी नहीं है।

<sup>१</sup> मानस, ११७४-१

<sup>२</sup> वही, ६।८

: वही ६।८-५

<sup>४</sup> मानस, ११४४-३

१६ मायावी : यह मय दानव का पुत्र है। इसे अपने बल बड़ा अभिमान है। इसलिए यह आधी रात के समय किञ्चिक्धा नगर जाता है और बाली को युद्ध के लिए ललका रता है। जब बाली दौड़कर जाता है तब वह एक पर्वत की गुफा में घुस जाता है। अन्त में बाली के हाथों मारा जाता है। मोल्ल रामायण में यह प्रसग नहीं है।

१७ मारीच : यह राक्षसी ताड़का का पुत्र मुबाहु का भाई तथा रावण का अनुचर है। यह मुनिकयों का शत्रु है। विश्वामित्र के यज्ञ का इवंस करने के लिए सहचरों के साथ आता है और श्रीराम के बाण से मार आकर सौ घोजनों के विस्तारवाले समुद्र के पार जाकर गिरता है।<sup>१</sup> यह शायावी होने के कारण रावण उसकी सहायता मानता है। यह वन में कांचन मृग बनकर सीता हरण को साधन बनता है। यह राम के बल में जात है। फिर भी रावण की सहायता के लिए अपना प्राण छोड़ता है। मोल्ल रामायण में मारीच एक ही बार आता है। वह रावण की आज्ञा के अनुसर कांचन मृग बनकर सीता को ललचाता है।<sup>२</sup>

२० माल्यवंत : यह एक वृद्ध राक्षस है। यह रावण की माता के पिता तथा श्रेष्ठ मंत्री है। यह बहुत ही बुद्धिवान और विभीषण के वचनानुसार रावण को ममक्षाने का असफल

प्रयत्न करता है। पर विफल होकर घर लौटना है।<sup>१</sup> यह नीति परायण और रावण के युद्ध के बारे में मंत्रियों से सलाह पूछता है। वह रावण को नीति का भी उपदेश देता है। यह राम के ब्रह्मत्व से ज्ञात है और रावण को समझाने का अनफल प्रयत्न करता है। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

२१ लंकिणी राक्षसी तथा लंका की द्वार पालिका है। वह स्वाभाविक स्त्री है। जब हनुमान मच्छर रूप में लंका में प्रवेश करते हैं तब यह उन्हें रोक कर जाने नहीं देती।<sup>२</sup> हनुमान से डरकर विनति करके उन से सारा बातें कहती है। राम के प्रति उसे विशेष भक्ति है। इसी लिए राम का स्मरण करती हुई हनुमान को लंका में क्रजती है। मोल्ल रामायण में लंकिणी का प्रसंग हनुमान के लंका में प्रवेश करते समय तही है। लंका दहन के बाद जब हनुमान लंका में लौठ जाने हैं, तब लंकिणी के सामने सिहनाद करके चले जाते हैं।<sup>३</sup>

२२ विराधः यह बाह्याचार में भी राक्षस तुल्य है किन्तु मृलत् हरि भक्त है, इस लिए राम के हाथों प्राण छोड़ते ही यह सुन्दर रूप प्राप्त करता है और प्रभु की कृपा से परमधाम को चला जाता है।

२३ सुबाहुः ताड़का का पूत्र। मारीच का भाई तथा रावण का अनुचर है। इससे सुनि लोग बहुत डरते हैं। विश्वा-

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ३।२३-३१

<sup>२</sup> मानस, ५।३-१

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ५।२२३-२२७

<sup>४</sup> मानस, ३।६-४

मित्र के यज्ञ का विध्वंस करने के सिए यह मारीच के साथ आता है और राम के अग्नि बाण से मर जाता है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में यह विश्वामित्र के यज्ञ में रक्त मांस आदि को डालता है। अन्त में वह राम के हाथों में मारा जाता है।<sup>२</sup>

२४ सुषेण : यह लंका का वैध है और धन्वंतरी के समान वैध के धर्म से परिचित है। रावण के पक्ष में होने पर भी वह राम के प्रच्छन्न भक्त है। लक्ष्मण जब मूर्छित होता है तब उनकी चिकित्सा करता है और बदले में कुछ भी स्वीकार नहीं करता। लक्ष्मण को मृत्यु के मुख से बचाता है।<sup>३</sup> मोल्ल रामायण में इस वैद्य का प्रसंग नहीं है।

२५ शूर्पणखा, रावण को बहन है। यह नागिन के समान भयानक और दुष्ट हृदयवाली है। वह धर्म, ज्ञान सून्य कामान्ध है। पंचवटी में राम और लक्ष्मण के मोहनाकारों को देखकर काम पीड़ा से विकल होती है। यह मायाविनी भी है।<sup>४</sup> वह सुन्दर रूप धारण करके रामके सामने जाकर प्रेम की भिक्षा मांगती है। वह अत्यंत काम पीडित स्वेच्छाविहारिणी है। यह राम और लक्ष्मण में किसी एक से विवाह करना चाहती है। लक्ष्मण से अपमानित होकर चली जाती है।<sup>५</sup> वह खर-दूषण का सर्वनाश करती है। रावण को भटकाती है और सीता का

१ मोल्ल रामायण, २।३९-४२

२ मानस, १।२०९

३ मोल्ल रामायण, १।५७-५८

४ मानस, ६।१६-२

५ वही, ३।१७

हरण करती है। शूर्पणखा असद् वृत्ति की स्वेच्छाचारिणी स्त्रियों का प्रतीक है। मोल्ल रामायण में भी पूर्पणखा लक्ष्मण से अपमनित होती है।<sup>१</sup> वह खर और दूषण को प्रेरित करके उनका नाश करती है। रावण के सामने "सीता" का नखशिख वर्णन करके सीता हरण के लिए उसे प्रेरणा देती है।<sup>२</sup>

**अन्ध गौणपात्र :** मानस में प्रतिनायक परिकर अत्यंत गौण पात्र भी है जिन का नाम भी नहीं है। दैत्य राज जलधर की पत्नी जिसका नाम तुलसी है वह अपने पति की रक्षा के लिए व्रत करती है। भगवान् विष्णु उसका व्रत भंग कर देता है।<sup>३</sup> इस का भी उल्लेख मानस में है। रावण का एक पुत्र जिसका नाम भी नहीं है अंगद पर पाद प्रहार करना जाहता है लेकिन अंगद से मारा जाता है।<sup>४</sup> समुद्र की एक राक्षसी जिस का नाम निशाचरी है छल से हनुमान को खाना चाहती है। हनुमान ने इस की लीला समाप्त कर दी।<sup>५</sup> इन सब का उल्लेख मोल्ल रामायण में नहीं है।

२-२३ मोल्ल रामायण के प्रतिनायक के परिकर पात्र जो मानस में नहीं हैं :

• सुन्दर काष्ठ वें जब हनुमान राक्षसों को डराते हैं तब उनको मारने के लिए जो ऋक्षस आते हैं उनकी एक सूची मोल्ल

१ मोल्ल रामायण, ३।७, ८

२ मोल्ल रामायण, ३।९-१७

३ वही, ३।२१-२५

४ मानस, १।१२३-१

५ मानस, ६।१७-८

६ मानस, ५।२-२

देता हैं। दशग्रीव पिंगलाक्ष, दीर्घ जिह्वा नाम के राक्षस पहले आते हैं जिन्हें हनुमान मार देते हैं।<sup>१</sup> रावण दूसरी बार और कुछ राक्षसों को भेजता है उनका नाम हृधिराक्ष, शतजिह्वा, रंकन रोम, सूलदंष्ट्र, व्याघ्र कबल और स्तनित हस्त है। इन जब का भी हनुमान नाश करता है। बाद में रावण जम्बु माली राक्षस को भी भेजता है जिसे हनुमान मार देते हैं।<sup>२</sup> रावण लक्ष्मण को मरने के लिए कुम्भ और निकुम्भ नामक राक्षसों को भेजता है जो लक्ष्मण में मार्ये जाने हैं।<sup>३</sup> कंपन नामक और एक राक्षस को रावण अंगद पर भेजता है। वह भी अंगद से मारा जाता है। गंविष्ठ व्रंजवे, युपाक्ष, घटकर्णि, मंकराक्ष नामक वोरों को भी भेजता है जिन्हें राम और लक्ष्मण भारते हैं।<sup>४</sup> खकराक्ष भरते नमय मेघनाथ को राम ईश्वरत्व के बारे में बताता है। अन्त में जब रावण आता है तब उनके साथ खड़ग रोम, सर्परोम, वृच्छिकारोम नामक राक्षस आते हैं। हनुमान उन सब की मारदेते हैं।<sup>५</sup>

## २-२४ प्रतिनायक के संबन्धी पात्र :

\*  
प्रतिनायक रावण से संबन्धित पात्रों में उनकी पत्नी मंडोदरी और पुत्र मेघनाथ उल्लेखनीय है।

१ मंडोदरी : मंडोदरी मूल दानव की कन्या तथा रावण

१ मोल्ल रामायण, ५११३०-१३३      २ वही ५११३४-१४०

३ वही, ५११४४-१४१      ४ „, ६-११७६-८२

५ वही, ६-११८६-१०२

की पत्नी है। सीता हरण की बात सुनकर वह असंतुष्ट हो जाती है तथा पति की निंदा करती है। जब रावण सीता को मारने के लिए दौड़ता है तब वह उसे नीतिवचन कहकर समझाती है।<sup>१</sup> यह रावण के अनियंत्रित अहं के नियंत्रण का अत्तफल प्रयास करती है। यह राम से युद्ध न करने के लिए रावण को बार बार समझाती है। यह अपने पति के बारे में हृदय चित्ता करती है।<sup>२</sup> जब रावण उनकी बात नहीं मानता। है तो वह समझाती है कि अपने पति को मति भ्रम हो गया है। जब रावण के कर्ण फूल राम के बाण से पृथ्वी पर गिर पड़ते हैं तब वह भयंकर कपशकुन समझकर रावण को राम ईश्वरत्व के संवन्ध में वर्णन करती है।<sup>३</sup> इसका पुत्र प्रेम मेघनाथ के सरण के समय व्यक्त होता है। पति के मर जाने पर वह जो विलाप करती है उसमें भी राम को हरि और निरामय व्रत स्वीकार करती है। वह पति को तिलांजली देकर मन में राघुनाथ का गुणगान करती है हुई महल जाती है। तुलसी से चित्रित मंडोदरी पर कई विद्वान विभिन्न मत प्रकट करते हैं।

डा. जगदीश प्रसाद शर्मा मंडोदरी के बारे में कहते हैं रावण जैसे दुर्दम अहंकारी तथा क्रोधी चरित्र को उभारने के लिए उसकी पत्नी के रूप में मंडोदरी जैसी भीरु पात्र की सृष्टि शिल्प के कौशल की परिचायक है।<sup>४</sup> माता प्रसाद गुप्त

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-३।३५-४२      <sup>२</sup> मानस, ५।२०-४

<sup>३</sup> मानस ६।१४-३

<sup>४</sup> मानस का मनोवैज्ञानिक अध्ययन जगदीश प्रसाद शर्मा, पृ. २।४५

का कथन इस प्रकार है—आधार ग्रंथों में यह चरित्र तगण्य है परन्तु अपनी राम भक्ति के उत्साह में हमारा कवि इसका भी विकास एक राम भक्त माल के रूप में करता है। वह कवितावली में पति को मंदमति और नीच कहती है। पुत्र को दाढ़ीजर कहती है। अच्छा होता यदि हमारा कवि इस निम्न या उच्च धरातल पर चिन्तित करने से अपने को बचाया होता।<sup>१</sup>

डा. श्रीधर सिंह का मतव्य है कि—‘पति परायण हिन्दू कुलवधू की भाँति सदैव सन्मार्ग पर चलने के लिए पति से आग्रह करनेवाली मानस की यह महिषी अपने में पूर्ण है। पति से विनती करना प्रत्येक वधू की भाँति इसका भी धर्म है। यह दूसरी बात है कि उसे मनोनुकूल दिशा में उन्मुख करने की शक्ति नहीं। यह भक्तिनी अधिक है और पत्नी कम।’<sup>२</sup> मोल्ल रामावण की मंडोदरी पति को सन्मार्ग पर चलानीवाली आदर्श गृहिणी है। जब रावण यज्ञ करता है तब अंगद आदि वानर वीर उस यज्ञ का ध्वंस करते हैं। इसका व्रत भंग करने के लिए अंगद मंडोदरी को खींच लाता है। मंडोदरी रावण को संभोदन करके कहती है कि वानरों के बंधन से मेरी रक्षा करो। रावण का यज्ञ भंग होने के बाद मंडोदरी राम के ईश्वरत्व का ज्ञान रावण को देती है।<sup>३</sup>

<sup>१</sup> तुलसीदास, डा. माता प्रसाद गुप्त, पृ. ३१२

<sup>२</sup> मानस का कथा शिल्प, डा. श्रीधर सिंह, पृ. २०७

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ६-३।१२-१७

२ मेघनादः अमुर राजा रावण का ज्येष्ठ पुत्र मैघनाथ बड़ा ही वीर तथा यौद्ध है। मानस में यह मेघनाद और इन्द्रजीत नामों से पुकारा जाता है। माल्ल रामायण हैं भी यह ये दो ही नामों से प्रसिद्ध हैं। यह एक आदर्श राजा तथा पिता के वचन को जिगेधार्य करनेवाला उन्हम पुत्र है। पिता के आज्ञा पालन में यह तनिक भी देर नहीं करता। पिता के आज्ञानुसार वह देवताओं पर विजय प्राप्त करता है।<sup>१</sup> तथा पिता के वचनानुसार ही हनुमान को बंदी कर लेता है। बड़ा योद्धा होने पर भी अगद के सामने वह परास्त हो जाती है।<sup>२</sup> मोल्ल रामायण में मेघनाथ अंगद के हाथों में परास्त नहीं होता। जब हनुमान लंका का नाश करके वहाँ के राक्षसों को मार डालते हैं तब रावण अत्यंत भयभीति होता है। इस समय मेघनाथ रावण को धर्य वचन सुनाकर उसे ढाढ़स बांधने का प्रयत्न करता है।-

यह एक अनुलनीय बलवान तथा मायावी है। देवराज इन्द्र को जीतने के कारण वह इन्द्रजीत नाम से प्रसिद्ध है। रामचन्द्र को नामपाश से तथा लक्ष्मण को वीरस्वातिन शक्ति से मूर्छित करता है। आयामय रथ पर चढ़कर वह युद्ध करता है तथा वानर सेना को विफल कर देता है।<sup>३</sup> वह हनुमान और जांश्वत से मार खा कर मूर्छित होता है और पिता के सामने लज्जा व्यक्त करता है। यह यज्ञ भी करता है जिसे लक्ष्मण

<sup>१</sup> मानस, ११५१-१.

<sup>२</sup> मानस, ६।३३-६

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ५।१६३-१६९

<sup>४</sup> मानस, ६।७२

करता है। मोल्ल रामायण में मेघनाथ हनुमान को ब्रह्मास्व से बंधी बनाता है। वहाँ हनुमान से उनके युद्ध का वर्णन विस्तार है।<sup>१</sup> वह यम को बन्दी नहीं बना पाता। वह लक्ष्मण के हाथों गंधर्वशर और भुजगास्त्र से मारा जाता है और हरि-धाम प्राप्त करता है।<sup>२</sup>

प्रतिनायक से छूटनेवाले पात्र :

विभीषण : यह राम के भक्ति है। मानस में उसके भक्त भवन, राम नाम स्मरण और सीता प्रवृत्ति निवेदन<sup>३</sup> आदि का उल्लेख करके उसकी भक्ति का परिचय दिया गया है। वह नीतिज्ञ, नम्र, शिष्ट, उदार, भ्रातृ हितैषी, कुलहितैषी और दूर-दर्शी भी है। वह रावण से सीता प्रत्यर्पण की प्रार्थना करता है।<sup>४</sup> वह राम को लंका-युद्ध में मेघनाथ यज्ञ, रावण यज्ञ और रावण नामि सृधा आदि की सूचना देकर अपनी विश्वसनीयता और कर्तव्य निष्ठा का प्रमाण भी देता है। तुलसी ने उसके चरित्र में रामभक्ति का समर्थ पुट देकर और उसकी विरक्ति एवं निरीहता का संकेत करके उसकी उदारता की प्रतिष्ठा की है।

मोल्ल रामायण में वह भाई को सीता प्रत्यर्पण, युद्ध से होनेवाला नुकसान आदि का उल्लेख करके रावण को युद्ध से

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ५।१६७-१९५

<sup>२</sup> वही, ६-१।१०३-११३

<sup>३</sup> वही, ५।३८-४१

<sup>४</sup> मानस, ५।५-

विमुख करने का प्रयत्न करता है।<sup>१</sup> अपने भाई से अपमानित होकर राम को गवण का यज्ञ और रावण नाभि सुधा का समाचार पहुँचाता है।<sup>२</sup> रावण वध के बाद जब वह लंकाधि-पति बनता है तब सीता को राम को विजय परंपरा का समाचार मुनाता है। मखियों के द्वारा सीता को अलंकृत कराकर उसे राम के हाथों मौपता है।<sup>३</sup> विभीषण के इन कार्यों से उनकी भक्ति और महदयता का परिचय मिलता है।

#### २-२५ निष्कर्ष :

इस प्रकार प्रतिनायक के चरित्र चित्रण में मोल्ल और तुलसी पर्याप्त निप्ठा दिखाते हैं। फिर भी मोल्ल रावण की उदारता को और विशेष ध्यान देती दिखायी देती है। रावण से संबन्धित गौण पात्रों की संख्या मोल्ल रामायण में अधिक है। केवल नामों की एक सूची मात्र न देकर पात्र की युद्ध कुशलता की अरो संकेत करती है। तुलसी ने जहां रावण के चरित्र का अपेक्षा से कम महत्वपूर्ण दिखाने का प्रयत्न किया है, वहां मोल्ल ने रावण को कामुक, मानवी गुणों से युक्त और राम की शक्ति से डरनेवाले भीरु रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।

#### २-३ पात्रों की रूप कल्पना :

##### २-३१ पारिवारिक भाव

राम परिवार में सिद्धन्त रूप में तुलसी ने यह सिद्ध करना

१ मोल्ल रामायण, ६-११९-१८

२ वही, ६-३१९६-९८

चाहा कि भारतीय समाज और उसका अंग परिवार किस रूप में होना चाहिए। सम्मिलित परिवार पर विशेष ध्यान दिया है। वे भाई-भाई, पति-पत्नी, पिता-पुत्री, माता-पुत्र, स्वामी-सेवक आदि, यहाँ तक कि लालित-पालित पशु पक्षियों के संबन्धों और उनके निर्वाह करने में सम्मिलित परिवार का समर्थन करते हैं।

पिता-पुत्र के संबन्ध का प्रतीक दशरथ और राम, रावण और मेघनाथ ठहरते हैं। दशरथ अपने मुख से पुत्र को वन जाने के लिए आजा नहीं दे सकता। कैकेयी के मुख से सारा समाचार सुनकर प्रसन्नता से वन जाने के लिए तैयार हो जाते हैं राम।<sup>१</sup> जब विश्वामित्र दशरथ से राम-लक्ष्मण की याचना करते हैं तब उनके बदले में दशरथ स्वयं अपने को ले जाने के लिए कहते हैं। इस प्रसंग का सुन्दर निर्वाह मोल्ल रामायण में है।<sup>२</sup> इसी प्रकार लंका पर हनुमान का अत्याचार सुनकर रावण भयभीत हो जाता है। तब पिता की आज्ञा को पालन करके मेघनाथ हनुमान से युद्ध करके उसे बंदी बनाता है। मोल्ल रामायण के इस प्रसंग में पिता पुत्र का संबन्ध पारिवारिक अनुराग की ढांचे पर किया गया है।<sup>३</sup> जब मेघनाथ लक्ष्मण के हाथों मारा जाता है तब वह समाचार सुनकर रावण पुत्र शोक का अनुभव करता है। इस संदर्भ को करुणा के साथ मोल्ल रामायण में वर्णन किसा है।

१ मानस, २।३७-४१

२ मोल्ल रामायण, १।४७-५२

३ मोल्ल रामायण, ५।१६५-१६७

आदर्श पति—पत्नी का प्रतीक राम और सीता हैं। एक आदर्श पति के समान राव वन के भीषण कष्ठों को दुःसह बतलाकर सीता को वहीं रहने का परामर्श देते हैं। लेकिन सीता पति के वियोग को असहनीय कहकर वन में पति संयोग के आकर्षक आनन्द का अविशेष वर्णन करती है और अनुगमन के लिए आग्रह करती है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में इस प्रसंग का उल्लेख नहीं है। जब रावण सीता से प्रेम की याचना करके राम की निदा करता है तब सीता रावण के मामने अपने मनोत्त्व की रक्षा करती हुई राम की प्रशंसा करती है।<sup>२</sup>

पिता-पुत्री संबन्ध का प्रतीक राजा जनक और सीता है। जिस प्रकार एक सामान्य पिता अपनी पुत्री के विवाह के लिए वेदना व्यक्त करता है उसी प्रकार स्वयंवर में जनक अनुभव करता है। तुलसो इस भाव को सुन्दर ढंग में चित्रण करते हैं। मोल्ल रामायण में भी जब धनुष किसी से नहीं टूटता तब वे भय व्यक्त करते हैं कि कहीं अपनी पुत्री अविवाहित न रह जाय।<sup>३</sup>

माता-पुत्र के संबन्ध का प्रतीक कौसल्या और राम हैं। मानस में वन गमन के पहले जब राम आशीर्वाद के लिए कौसल्या के पास जाते हैं तब कौसल्या संतोष के साथ राम की भेजता है। उसे राम और भरत दोनों समान हैं। उसी प्रकार

<sup>१</sup> मानस, २।६४-६८

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ५।५८-६६

<sup>३</sup> वही, २।७१

मुमिना भी लक्ष्मण को राम के ईश्वरत्व का परिचय दे कर उसकी सेवा करने का उपदेश देती हैं। उस स्थिति में मुमिना पुत्र की भलाई के लिए इसके अतिरिक्त और क्या कर सकती है? मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है।

कुछ लोग भरत के द्वारा माता के प्रति कहे गये वचनों और किये गये व्यवहार के कारण भरत को बुरा कहते हैं। लोकोन्मुख प्रवृत्ति के अनुसार व्यक्ति साधना और जागरिक व्यवहार में अंतर करके तुलसी भरत के भ्रातृ प्रेम का चित्रण करते हैं। माता के आचरण पर घृणा प्रकट करते हुए भरत यह दिखाना चाहते हैं कि उसके मन में राम के प्रति कितना अनुराग और श्रद्धा है। यह आदर्श भाई का संबन्ध है जिसे तुलसी ने अपनी कारणिती प्रतिभा के साथ निर्वाहि किया है। मोल्ल रामायण में चित्रकूट में राम-भरत मिलाप का सुन्दर निर्वाहि हुआ है। इस प्रसंग में राम अपना भ्रातृ प्रेम व्यक्त करते हैं। और भरत राम के प्रतिनिधि के रूप में राज्य का पालन करते हैं।<sup>19</sup>

भारतीय व्यवहार परंपरा में जातिगत, स्थितिगत भेदीं को मानते हुए दासों के प्रति पारिवारिक संबन्ध जोड़ने की और उसका निर्वाहि करने की प्रथा है। मथरा से कैकेयी का संबन्ध इसी प्रकार है। कैकेयी जब मथरा पर बिगड़ती है और

उम मंबन्ध का अतिरेक करके उमके माथ नीच शब्द व्यवहार करने लगती है तब मंथग परेशान होकर अपनी व्यथा व्यक्त करती है। दामी को चेतन प्राणी मानकर उनके माथ आत्मीयता व्यक्त करने का आदेश तुलसी अपनाते हैं।<sup>१</sup>

वे भाई भाई के मंबन्धों को त्याग की आधार भूमि पर खड़ा करना चाहते हैं। मानस में वैयाकितक और सामाजिक आदर्शों का भंडार है। नव-विवाहिता पत्नी को अकेली छोड़कर-तन-मन में भाई-भानी को सेवा में प्रवृत्त होना साधारण काम नहीं है। जहां तक पारिवारिक मान्यता है उसका पूर्णतः निर्वाह मानस में हुआ है। इस दृष्टि से मोल्ल रामायण में पारिवारिक मान्यता का निर्वाह प्रायः नहीं है।

तुलसी लौकिक शृंगार के निर्वाह में ही सामाजिक मान्यताओं की रक्षा करते हैं। तुलसी के राम आदर्श पति, पूर्वरागी संयोगी वियोगो आदि अनेक रूपों में दिखाई पते पड़ते हैं। काव्यत्व के औचित्य के विचार से शृंगार के सभी पक्षों का आदर्श और मर्यादित निरूपण तूलसी ने प्रस्तुत किया है। जनक बाटिका प्रसंग में सीता के सौंदर्य का निरूपण करके राम अपनी मधुर क्षोभा को लक्षण से व्यक्त करते हैं।<sup>२</sup> जयंत प्रसंग में राम के संयोगी जीवन का साक्षात्कार होता है।<sup>३</sup> सीता हरण के शोक से मानस में मर्यादा पुरुषोत्तर राम अत्यंत

<sup>१</sup> तुलसीदास, उदयभान सिंह, १४६

<sup>२</sup> मानस, ११२३१

<sup>३</sup> वही, ३१९

क्षुब्ध होते हैं। इसी लिए हनुमान के सामने अपने विरही हृदय का परिचय देते हैं।<sup>१</sup> इस सभी प्रसंगों में लौकिक अस्ली-लता की फलक नहीं है।

मर्यादित शृंगार जिस रूप में मानस है उस रूप में मोल्ल रामायण में नहीं है। राम का संयोगी और पूर्व रागी रूप मोल्ल रामायण में नहीं हैं। इस काव्य में केवल राम के वियोगी रूप का वर्णन है। राम के विरह में अश्लील कामवासना का पुट है। वियोग में संयोग समय के मधुर क्षणों की कल्पना करके अतिशय शृंगार व्यक्त करनेवाले राम साधारण मानव के रूप में दर्शन देते हैं।<sup>२</sup> वही वालि वध के बाद वर्षा कृतु का आरंभ होता है। इस समय पर भी राम विरह पीड़ित होते हैं। उन्हें शहद भी कड़वी लगती है। इस तरह पारिवारिक मान्यताओं का भंग मोल्ल रामायण में हुआ है। शूर्पणखा भाई रावण के सामने सीता के अंगांगों का वर्णन करती है।<sup>३</sup> इस तरह पारिवारिक मान्यताओं को परिरक्षा मानस के जैसे मोल्ल रामायण में नहीं हुई।

## २-३२ दास्य भाव का निर्वाह :

भक्ति और शक्ति का अद्वितीय प्रतीक हनुमान से दास्य भाव का निर्वाह किया गया है। ‘राम ते अधिक राम कर दासा

<sup>१</sup> मानस, ५१९५

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ३१५१-५७

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ३१२१-२५

के प्रत्यक्ष उदाहरण हनुमान है। इनका रूप गुण आदि दास्य भक्ति के निर्वाह के लिए अधिक उपयुक्त है। मुग्रीव की विदा के पश्चात उसकी अनुमति से हनुमान राम के यहां रहने लगते हैं। इस उल्लेख से तुलसी ने उनके चरित्र और राम भक्ति पर प्रकाश डाला है।<sup>१</sup> तुलसी के हनुमान दास्य भक्त है जो प्रथम दर्जन में ही राम से भक्ति की याचना करते हैं।

मोल्ल रामायण में हनुमान सीता जी को अपना परिचय देते समय अपने को राम भक्त कहते हैं। वे अपने को राम के दास कहने में आनन्द का अनुभव करते हैं। जब लक्ष्मण मूर्छित होते हैं तब हनुमान स्वामी के दुःख में भाग लेनेवाले एक दास के जैसे राम को सांत्वना देने का प्रयत्न करते हैं।<sup>२</sup> विभीषण भी दास्य भक्ति का प्रतीक है। रावण से निर्वसित होकर वह राम के शरण में आता है और अपने को राम का दास कहकर मुक्ति की कामना प्रकट करता है।<sup>३</sup> इस तरह हनुमान और विभीषण दास्य भक्ति के प्रतीक हैं। हनुमान के चरित्र के द्वारा तुलसी सम्ब्य समाज को यह सलाह देना चाहते हैं कि दास दासियों के प्रति परिवार के सदस्य के जैसा व्यवहार करना है। यह उल्लेख मोल्ल रामायण में नहीं है।

## २-३३ अन्य भाव :

१ विभिन्न वर्गों के लोगों के संबन्ध भाव : मानस के

१ मानस, ७।१९

२ मोल्ल रामायण, ६-२।५६-५९

३ मोल्ल रामायण, ६-१।३१-३३

राम राज्य वर्णन में वर्णाक्रिय धर्म का वर्णन और तज्जनित प्राप्त मुख-सुविधाओं का पूर्ण उल्लेख हुआ है। चब सभी वर्ग अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं तब अशांति नहीं दीखती।<sup>१</sup> संघर्ष का अभाव और स्वकर्तव्य पालन की सदिच्छा से लोक का हित होता है। प्रेम सेवा परमार्थ के मार्ग पर बढ़ता हुआ मानव जगत के कल्याण का कारण बनता है। सभी वर्ण प्रेम और एक्य भावना से अपना कर्तव्य करते हैं। यदि राजा खील, गुण संपन्न हो तो प्रजा अवश्य ही गुणी होगी। ब्राह्मण को गोस्वामी से गुरु के समकक्ष स्थान दिया और रावण विजय के बाद राम अवध-पुरी में विप्र चरणों की मानसिक वंदना करना नहीं भुलते।<sup>२</sup> इस लिए अयोध्या काण्ड में सोचनीय वस्तुओं की पंक्ति में ब्राह्मणों के अपमान का भी उल्लेख किया। लक्ष्मण परशुराम संवाद में विप्र के पूजनीय होने का संकेत मिलता है। मध्य युग से चली आने वाली इस धारणा को कि ब्राह्मण साक्षात् देवता है गोस्वामी ने अपना अनुमोदन दिया। लेकिन अर्वाचीन वर्णाश्रिम धर्मों का निवहि मोल्ल रामायण में नहीं हुआ है।

२ गुरु और शिष्य का संबन्ध : गुरु की पूज्य एवं सम्मान्य स्थिति को बतलाने के लिए राज्याभिषेक के प्रस्ताव के साथ तुलसी ने दशरथ को वशिष्ट का विनयी के रूप में चित्रित किया है। स्वयं वशिष्ट राम को युवराज पद की सूचना

देकर संयम करने की शिक्षा देते हैं।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में भी इशरथ स्वयं वशिष्ट राम के राज्याभिषेक की चर्चा करते हैं।<sup>२</sup> राम और वशिष्ट के माध्यम से कवि नेगुरु पद पदम परगां की परिकल्पना की पूर्णतः चरितार्थ कर दिया। वशिष्ट को गाम के परब्रह्मत्व का ज्ञान है। फिर भी गुरु भक्ति के लौकिक आदर्श का सूत्र यहां विच्छिन्न नहीं हुआ। लेकिन मोल्ल रामायण में विश्वामित्र राम के गुरु होकर भी अहत्यो-द्वार के समय राम की स्तुत अवतार पुरुष के रूप में करते हैं। इस तरह विश्वामित्र और राम में गुरु शिष्य संबन्ध का निर्वाह नहीं हुआ।<sup>३</sup> इस के विस्त्र मानस में बालकाण्ड के अंतर्गत धनुर्भग एवं वाटिका वर्णन के संदर्भ में विश्वामित्र के प्रति राम एवं लक्ष्मण भक्ति भाव प्रदर्शित करते हैं। दोनों के शील संकोचपूर्ण अज्ञा कारिता, सेवा परायणता तथा भक्ति भावना का चित्र कवि की आदर्शप्रियता का प्रमाण है। गुरु पितु माता की वयी में उन्होंने प्रायः सर्वत्र गुरु को ही प्रथमिकता दी है। चित्रकूट के विराट सभा पर्व में विशिष्ट को लक्ष्य करते हुए राम का जो कथन है वह कवि के तत्संबन्धी लोकादर्श का व्यावहारिक रूप है।<sup>४</sup> मानस में यह गुरु संबन्धी आदर्श अपनी ऊँचाई में इतना महास है कि धनुर्भग के अवसर पर जब राम को अपने शिक्षा गुरु विश्वामित्र के चरणों में प्रत्यक्षतः प्रमाण करते का अवसर नहीं मिलता है तो हमें हम देखते हैं कि गुरु-

<sup>१</sup> माऊस, २१९-२

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, २१३, ४

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण, ११६४

<sup>४</sup> मानस, १२५-५

के चरणों पर नत मखतक होकर ही धनुर्भग के लिए वे आगे बढ़ते हैं।

३ राजा प्रजा के संबन्ध : मानस में वात्सल्य की भावना जो राम अपनी प्रजा के प्रति रखते हैं, इसमें स्वाभाविकता है। प्रजा प्रेम प्राप्त करने के लिए राजा को ही प्रयत्न करना चाहिए। राजा को पितृत्व भाव से प्रजा के प्रति आदर प्रदर्शित करना चाहिए। राजा कर का ग्रहण ऐसे उपाय से करे कि प्रजा को उसका पता तक न चले। जिस प्रकार सूर्य अपने किरणों से जल सींचता है पर वही जब जल वृक्षिट बनकर फिर लौटता है दह प्रत्यक्ष सभी को दिशायी देता है।<sup>१</sup> राजा के कर्तव्य मोल्ल रामायण में नहीं हैं। लेकिन आदर्श राजा के अभाव में जो पीड़ा उत्पन्न होती है उसे अयोध्यावासी सह नहीं सकते। इसी लिए वे कैकेयी और दशरथ की निंदा करके राम के प्रति अनुराग व्यवत करते हैं। अयोध्या वासियों के लिए राम एक आदर्श राजा है।<sup>२</sup>

४ आदर्श समाज का भाव : जिस आदर्श समाज की कल्पना गांधी ने की थी उसकी धारणा मानस की जैसी है। तुलसी ने राजा को ईश्वर का अंश कहा और राजा के लिए कुछ अन्य विशेषणों का प्रयोग भी उन्होंने किया है। राम के आदर्श गुण प्रजा के लिए अनुकरणीय हैं। राम वेरद्वेष, अभिमान

<sup>१</sup> तुलसी, उदयभान सिंह, पृ. २३९-२४०

<sup>२</sup> तुलसी, सं. उदयभान सिंह, पृ. २५०

आदि गुणों से रहित है। राम राज्य की प्रजा में भी इसी प्रकार के आदर्श दिखाई देते हैं। वहाँ के सभी पुरुष गुणी, चतुर ज्ञानवान्, निष्कर्षटी, उदार तथा परोपकारी हैं। स्वार्थ रहित स्नेह भाव के साथ उनमें गुण ग्राहकता और द्वेष विकारों को दूर करने की शक्ति है। राम राज्य के यह आदर्श मर्यादा की रक्षा करने में राम सफल हुए हैं और यह भावना विद्वंसकारी नहीं है। आदर्श वादिता कठोर संयम, साधना एवं तपस्या के उपरांत ही उपलब्ध है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में आदर्श समाज की यह कल्पना नहीं मिलती। मानस के जैसे संस्कृति का पुनरुत्थान और आदर्श समाज की स्थापना मोल्ल रामायण का लक्ष्य नहीं है। इसी लिए इन मूल्यों पर इस काव्य में प्रकाश नहीं डाला गया है।

५ सांस्कृतिक पुनरुत्थान : संस्कृति में प्रचलिन दुर्गुणों का नाथ करके स्वस्थ जीवन यापन के सहज धर्म की प्रसिष्ठा करना मानस कार का लक्ष्य है। संस्कृति लोकगत व्यक्ति जीवन की उत्कृष्टतम् साथना है।<sup>२</sup> भारतीय संस्कृति अरंभ से ही चिन्मय की साधना में रत रही। भारतीय संस्कृति में स्थित सत्य की खोज और ग्रहण की प्रवृत्ति के कारण ही जहाँ एक और नाना संस्कृतियों का सम्मेलन है वहाँ दूसरों और किसी भी दूसरी

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, २।३०

<sup>२</sup> तुलसी रामायण, डा भगीरथ मित्र, पृ. २४९

संस्कृति को निर्मुक्त करने का प्रयास भी नहीं है। १ अतः किसी भी महान् पुरुष का कार्य उसमें समुचित समन्वय स्थापित करना ही रहा है : तुलसी भी इसी तरह के महा पुरुष हैं और उसी रूप में उन्हें गौतम, बुद्ध, महात्मा गांधी जैसे लोगों की पंक्ति में से एक माना जाता है। सांस्कृतिक उत्थान के अंतर्गत आने-वाली उनकी कुछ प्रयासों का अध्ययन औपचारिक और अपेक्षित भी है। मोल्ल रामायण में भारतीय आर्य संस्कृति का वाल्मीकि रामायण के आधार पर चित्रण हुआ है। मोल्ल का समय सांस्कृतिक रूप से संपन्न था। इसी लिए मोल्ल से सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए कठिबद्ध नहीं हुई।

अ) पारिवारिक क्षेत्र में समन्वय भाव : मानस में पारिवारिक क्षेत्र में पिता-पुत्र, पति-पत्नी, सास-पुत्र-वधु, पत्नी-सप्तनी में भी समन्वय स्थापित हुआ है। तुलसी के राम पिता के जितने भक्त हैं उतना ही वे माताओं के भी। इसी अनुराग का आदान प्रदान पारिवारिक जीवन के सभी संबंधों के बीच चलता है। इस प्रकार एक आदर्श परिवार की प्रतिष्ठा मानस के जैसे मोल्ल रामायण में नहीं है।

आ) द्विज और शुद्ध में समन्वय भाव : तुलसी ने सामाजिक विषमता को दूर करने के लिए मानस में द्विज वशिष्ठ को शूद्र कुल में उत्पन्न निषाध राज ने भेंट कराया। क्षत्रिय कुलोद्धव

१ तुलसी के समन्वय साधना, डा. क्षितिमोहन सेन, पृ. ६

राम को तुच्छ वानर भीलु, रीछ, विभीषण, राथस आदि से संबन्ध स्थापित कराया गया है। मानसकार अनुराग बन्धन से सभी को वांधने का सफल प्रयत्न करते हैं। मोल्ल रामायण के उपयुक्त प्रसंगों का लक्ष्य भी सभी कुलों के बीच समन्वय की साधना है।

इ) राजा प्रजा का संबन्ध भाव : तुलसी ने राजा और प्रजा दोनों के कतव्यों का संकेत दिया। राजा को मुख तुल्य बताकर अपनी प्रजा के पालन पोषण के लिए उन्हें तत्पर रहने का आदेश दिया। मोल्ल भी राम राज्याभिषेक के बाद राजा राम के रूप वर्णन करती है। राजा राम के शासन में जनता की स्थिति का विवरण हमें उस वर्णन में मिलता है।<sup>१०</sup>

ई) नर और नारायण का समन्वय , तुलसी के पहले जनता राम के नारायणस्य पर विश्वास नहीं करते थे। लेकिन तुलसी ने विष्णु को कौसल्या तथा दशरथ पुत्र के रूप में दिखाकर उन्हें नर से ऊपर उठाते हुए देवत्व प्रदान किया है। इसी लिए तुलसी का राम अवतार पुरुष होकर भी अज, अनवध, अरूप हैं। संगुण होकर भी निर्गुण एवं निर्विकार हैं। मोल्ल रामायण में भी भक्ति की परवशता में विश्वामित्र राम के रूप में अवतरित नारायण की स्तुति किये बिना रह नहीं सके।<sup>११</sup> मोल्ल रामायण में भी देवताओं की प्रार्थना सुनकर नारायण

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-३१३५-१३८

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, १६४

राम के रूप में अवतार लेने का आश्वासन देने हैं।<sup>१</sup> इस प्रकार नर नारायण का समन्वय प्रायः दोनों में समान हैं।

उ) सगुण और निर्गुण का समन्वय : तुलसी ने अपने राम के द्वारा सगुण और निर्गुण के समन्वय लाने का प्रयत्न किया है। इस भाव के अनुरूप विशेषाँ को मिटाते हुए दोनों में समन्वय लाने हुए यह सिद्ध किया कि राम निर्गुण निराकार, अजेय, अद्वेत, अव्यक्त, अविकार, अबल अनिकेत, अविरण, अनामय, आरंभ और अमल हैं, तदपि वह दीन बन्धु, दयालु, शरणागत वत्सल और भक्त परायण। गो, द्विज, सुर आदि के कष्टों के निवारण के लिए सगुण रूप धारण करता है। मोल्ल रामायण के आरंभ में भी रावण धोर तप करके ब्रह्मा से वर मांगता है कि नर और वानर को छोड़कर अन्य किसी के हाथ में उनकी मृत्यु नहीं होनी चाहिए।<sup>२</sup> रावण, द्विज, सूर और कवियों पर अत्याचार करता है। उनका गर्व दूर करने के लिए भगवान् विष्णु नर रूप धारण करके अपने वृन्द में से कुछ को वानरों में और कुछ लोगों को भीलों में जन्म लेने की आज्ञा देते हैं।<sup>३</sup> मोल्ल ने राम को विष्णु या नारायण के अवतार के रूप में ही विचित्र किया है। राम के परब्रह्म या निर्गुण होने का उल्लेख प्रायः उन्होंने नहीं किया। जहाँ तुलसी राम को नारायण के अवतार के रूप में वर्णन करते हैं, वहाँ उनके परब्रह्मत्व पर

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, १/३३-३६

<sup>२</sup> वही, १/२७-३१

<sup>३</sup> वही, १/३४-३५

भी प्रकाण डालते हैं। साथ ही सगुण निर्गुण का समन्वय भी उन्होंने किया। मोल्ल का राम निर्गुण हो ही नहीं सकते। इसी लिए उक्त समन्वय करने की आवश्यकता मोल्ल को नहीं हुई। मानस में सगुण निर्गुण के समन्वय करने के मूल में तत्कालीन परिस्थितियों की प्रेरणा थी। मोल्ल को न ऐसी प्रेरणा ही हुई न उनका व्यक्तित्व ऐसी प्रेरणा भूत ही हो सका।

ऊ) ज्ञान और भक्ति में समन्वय भाव : 'कहुहि संत मुनि वेप पुराना नहीं दुर्लभ ग्यान समाना।' कहकर तुलसी ने भक्ति के लिए ज्ञान की महता घोषित खी। 'ग्यान अगम प्रत्यूह अनेका' अधिवा 'ज्ञान छ पंथ कृपान के धारा' आदि कहकर ज्ञान मार्ग की कठिनायियों को और तुलसी ने संकेत किया है और भक्ति सुमन्त्र सकल सुख खानि कहकर भक्ति को ज्ञान की अपेक्षा कहीं श्रेष्ठ सिद्ध किया है। फिर भी तुलसी ने भगवत् सान्निध्य के लिए दोनों की समानता को स्वीकार किया। 'भगति ग्यानहि नहिं कुछ भेदा उभक हरहि भव संभव खेदा।' कहकर तुलसी ने समन्वय करने की चेष्टा की। साथ ही जोग अग्नि करि प्रगट तव कर्म सुभासुभ लाइ बुद्धि सिवा वे ज्ञान धृत ममता मन जरि जाय।' कहकर ज्ञान को धृत बताया है जिसके द्वारा चितु रूपी दीपक प्रज्वलित होता है और मोह तमादि शलभ नष्ट हो जाते हैं। उन्होंने भक्ति को ज्ञान एवं वैराग्य से युक्त बताया है जिस प्रकार तुलसी के समय में भक्ति और ज्ञान का संघर्ष था। ऐसी परिस्थिति मोल्ल के युग में नहीं

थी। उस समय जनता में यह आन्धोलन था कि भक्ति मार्ग का द्वार सभी वर्गों के लोगों के लिए खुल जाय। इस के अनुरूप तुलसी ने शवरी, निषाध राज, गुह राक्षस जैसे विराध, अत्याचारी जैसे वाली, जटायु जैसे गीध्व सभी को हाम के प्रति भक्ति प्रदर्शित करते हुए दिखाया है। इस तरह मोल्ल रामायण में भक्ति ज्ञान का समन्वय नहीं हुआ। लेकिन यत्व तब भक्ति का प्रसार इस काव्य में है।

(कृ) सांस्कृतिक पुनरुत्थान का भाव : तुलसी और मोल्ल ने अपने मात्रों में सांस्कृतिक पुनरुत्थान की प्रतिष्ठा करने का प्रयास किया है। जनक, वशिष्ट आदि में 'भर्गो देवस्य धीमहि धी यो यानः प्रचोदयात्' की ध्वनि पूर्णतः व्याप्त हैं। इसी लिए उनमें सुख दुख और अपने पराये से परे का भाव दिखाई देता है। सुमित्रा, अनसूया आदि में सांस्कृतिक दुष्प्रवृत्तियों के बचकर आगे बढ़ने की साधना दिखलाई देती है।

५ संत जीवन : तुलसी ने अपने पत्रों में संत भाव का विकास लाने का प्रयास किया है। संतो के लिए अभय होना अंतःकरण की स्वच्छता, ज्ञान योग में दृढ़ स्थिति, दान दम तप सरलता, अङ्गिसा, पियभाषिता, अक्रोध, अभिमान का त्याग जित की चंबलता का अभाव, दया। अनासक्ति, कोमलता, शास्त्र के विरु आचारण में लज्ज, व्यंथ चेष्टाओं का अभाव आदि गुणों का होना परमावश्यक है। संत सुख और दुख दाताओं में समान ब्रह्मि रखते हैं। लोक मंगल की कमना

उनका लक्ष्य है।<sup>१</sup> संत उपवंदन वृद्ध के समान होते हैं जो अपना समूल नाश करनेवाले को भी अपनी स्वाभाविक शीतलाता और मुग्ध प्रदान करता है। इस लिए तुलसी राम भक्त को संत होना आवश्यक मानते हैं।—

मुद मंगल मय संत समाज। जो जग जंगम तीरथ राजू॥  
राम भक्ति जहां सुर सरिधारा।

॥२

वे सदा रामा लौलाओं का गान किया करते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में संतत्व के प्रचारनेमें उपदेशात्मक रूप धारण वहीं किया। लेकिन जनक, वशिष्ठ विश्वामित्र आदि की जीवनी द्वारा मोल्ल यह सिद्ध करना चाहती है कि संतत्व भारतीय संस्कृति को पुंजीभूत संपत्ति है जिसे प्रहरेक व्यक्ति को अपनाना चाहिए मानना के संत समाज को भी दृष्टि में रखकर लिखा गया सा प्रतीत होता है। राम के गुण संतों के लिए पूर्ण रूप से अनुकरणीय हैं।<sup>३</sup> तुलसी शिव-निंदा प्रकरण में संत निदा को उतना ही गहित कहते हैं जितना शिव या विष्णु की निदा को। शबरि से नवधा भक्ति का निरूपण कराते हुए सत्संग को वे अपनी भक्ति का प्रथम वरण बतलाते हैं।

६ समूह के लिए राम राज्य : सामूहिक प्रजा की एकता वैषम्य रहित कोमल तत्व की प्रतिष्ठा के लिए तुलसी राम

१ मानस, १। ३-५

३ मानस, १। ३१-३२

५ मानस, १। १-२

राज्य की कल्पना करते हैं। तुलसी के अनुसार प्रनामी राजा को उपद्रवियों को यथौचित दण्ड देना चाहिए। शिष्ट रक्षा और दुष्ट शिक्षा तभी संभव हो सकती है। तुलसी से कल्पित रामराज्य में विप्रमता नहीं। और शांति के कारण प्रजा निर्भय, अधोक और निरोगी है। प्रजा तीन तापों से अछूती थी। अल्प मृत्यु, रोग, दारिद्र्य आदि का दुख उनको छ नहीं सकता था। राजा और प्रजा के लिए धर्म और कर्तव्य निष्ठ होना सर्वोपरि थी। राम राज्य के सभी लोक निर्देश सदाचारी धर्म-प्राण गुणश, ज्ञानवान और पंडित थे।<sup>1</sup> राजा के अनुसार, प्रजा भी थी। इस तरह राजा योग्य पालक हैं और समाज की मुख समृद्धि का विकास प्रदान कर सकता है। गमराज्य की समस्त जनता सुखी और समृद्ध है। यह सुख समृद्धि तब प्राप्त हो सकती है जब राजा और प्रजा दोनी सद् व्यवहार कर सकते हैं। राम राज्य में राम ने अपने जीवन से सभी को उसी सद्व्यवहार की शिक्षा दी। और सभी ने उसे अपनाया। सुख और समृद्धि की उपलब्धि प्रकृति से भी संभव हो सकती है।

फूलहि फूलहि सदा तरु कानन। रहहि एक संग गज पंचानन।  
 कूजहि खग मृग नाना वृन्द। उभय चरहि वन करहि अमंद॥  
 लता विटप भागे मधु चंपही। मन भावतो धेनु मय स्व ही॥  
 विधु महि पूर मयूरहि रवितप जेतनाइ काज।  
 आते वारिद देहि जल रामचंद्र के राज॥<sup>2</sup>

1 तुलसी, उदयभान सिंह, पृ. २३७ 2 मानस, उत्तर काण्ड,

मोल्ल रामायण में वर्णित राम राज मानस से भिन्न है। उनमें शील संबन्धी कुटिलता नहीं है। प्रजा खान पानादि विषयों में अभाव का अनुभव नहीं करती है। वहां की जनता क्रोध, भव वाधाओं आदि विकारों से दूर है। वहां के कवि ज्ञानी, संतत्व का अनुसरण करते हुए आमुष्मिक चिंता में रत है।

### २-३४ निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन से सिद्ध होता है कि तुलसी और मोल्ल ने अपने पात्री में विभिन्न भाषणों का विकास लाने का प्रयत्न किया है। तुलसी का दृष्टिकोण पारिवारिक मान्यतां, सांस्कृतिक पुनरुत्थान, व्यक्ति में संतत्व ओर समष्ठि में राम राज्य की स्थापना है। इस लिए अपने आदर्शों के अनुरूप तत्कालीन मान्यताओं में समन्वय लाते हुए पात्रों का भाव विकास किया है। मोल्ल रामायण में भी प्रायः उपर्युक्त सभी भावों पर प्रकाश डाला गया है। तुलसी ने एक निश्चित ढांचे के अनुसार अपना दृष्टि कोण प्रस्तुत किया है। मोल्ल निम्न जाति से संबन्धित कवयित्रों हैं। वह उस युग का प्रतिनिधित्व करती थी जब कि मंदिर प्रवेश, कविता रजना आदि का अधिकार अग्र कुलों तक सीमित था। मोल्ल भक्ति मार्ग के द्वारा समस्त जनता के लिए भक्ति का द्वार खोल देना चाहती है। भक्ति भाव के उच्च नीच का प्रश्न ही नहीं उठता। कुम्हार जाति की नारी होकर अनेक प्रथाओं के बावजूद भी राम काव्य की रचना करना उनकी विद्रोह-भावना का ही परिचयक है। तुलसी एक कवि होने के

साथ लोक नायक, सामाज सुधारक, दार्शनिक, धार्मिक नेता, संस्कृति का पुनरुत्थान करनेवाले के रूप में ही हमारे सामने आते हैं। मोल्ल में कवि रूप ही प्रबल है। उनके अन्य रूपों को गौण ही कहना चाहिए। प्रबन्ध काव्य की आवश्यकताओं के उन्होंने अन्य विषय के संबन्ध में भी धोड़ु बहुत प्रकाश डाला है। ऐसा होते हुए भी तुलसी में पाये जानेवाले अन्य अंश भी कम मात्रा में क्यों न हो मोल्ल रामायण में प्रायः देखे जा सकते हैं।

## २-४ पात्रों की रूप कल्पना :

मानस और मोल्ल रामायण में पात्रों की रूप कल्पना काव्यगत उद्देश्य को दृष्टि में रखकर की गयी है। चरित के किसी निश्चित परिज्ञान के लिए स्वभाव का स्थायी वैविध्य अत्यंत आवश्यक है। तुलसी के पात्रों की रूप कल्पना में मनो-विकारों के हतने भिन्न प्रकृतिस्थ स्वरूप नहीं दिखाई पड़ते जिन्हें हम किसी व्यक्ति या समुदाय विशेष का लक्षण कह सको।<sup>१</sup> मानस में राम, सीता, भरत, लक्ष्मण, कौसल्या, रावण आदि अनेक ऐसे पात्र हैं जिनकी रूपकल्पना में पात्रों के व्यक्तित्व का स्वाभाविक उद्भास तुलसी ने प्रस्तुत किया है। लगभग इसी प्रकार की रूपकल्पना हमें मोल्ल की कृति में उल्लब्ध है।

१ गोस्वामी तुलसीदास, रामचन्द्र शुक्ल, पृ. ११३

२-४१ काव्यों में रूपों के अनुसार पात्रों का वर्गीकरण :

मानस में रूपों के अनुसार स्वभाव की कल्पना है। मानस के पात्रों का स्वभाव तीन प्रकार है— १) आदर्श स्वभाव २) असामान्य स्वभाव और ३) सामान्य स्वभाव। आदर्श पात्रों में व्यष्टि और समष्टि समन्वय है। संत और लोक स्वभाव के सामंजस्य के कारण सामान्य व्यक्ति उन पात्रों से प्रभावित अवस्था होता है। तुलसी ने आदर्श पात्रों में शीलगत ग्रंथि अथवा खंडता नहीं आने दिया है। इस दृष्टि से देखा जाय तो मोल्ल रामायण से राम का चरित्र खंडित व्यक्तित्व से युक्त है।

तुलसी की आदर्शमय रूपकल्पना की तीन विशेषताएं हैं :

१) सदगुण से युक्त आदर्शों का प्रस्तुतीकरण, आदर्श पात्रों के अंतःकरण में किया गया है। २) इन आदर्शों के पोषण और विकास के लिए उपयोगी मनोवेगों जैसे उत्साह, उमंग, आशा, आत्मविश्वास आदि मी जागृति की गयी है। ३) पात्र अपनी संघर्ष मय स्थिति में जीवन की आदर्श कल्पना की प्राप्ति के लिए सतत प्रयत्न करते हैं। इन आदर्श पात्रों के अंतर्गत राम, सीता, भरत और कौसल्या आते हैं।

दूसरे स्वभाव के पात्र असामान्य पात्र हैं। इन पात्रों में एक प्रवृत्ति की प्रथानगा है और उस प्रवृत्ति की केन्द्र बनाकर अन्य प्रवृत्तियों अपने आप आश्रय प्राप्त करती है। इन पात्रों में स्वतंत्र व्यक्तित्व का अभाव है। वे लोगों प्रति सर्वैव सहिष्णु

भी नहीं रह पाते। अपनी प्रवृत्ति के अनुसार किसी भी ढंग का अनुसरण करना उनका उद्देश्य है। उनकी प्रवृत्ति भी दो प्रकार की हैः १ सहितार्थ प्रवृत्ति २ परहितार्थ प्रवृत्ति। पहली प्रवृत्ति वाले लोक के लिए भयानक हैं और दूसरी प्रवृत्ति वाले अपने कार्यों की सिद्धि में भयानक होने पर भी परोपकारी ही होते हैं। रावण पहली प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करता है और लक्ष्मल दूसरी प्रवृत्ति का। १ लक्ष्मण में भी आदर्श है लेकिन लोक जीवन की दृष्टि से वे प्रशंसनीय नहीं हैं। इन पात्रों में एकतत्व की प्रधानता के कारण उनमें व्यक्ति और लोक जीवन का सामंजस्य नहीं हींता है। भरत में भी एकतत्व की प्रथानता है। लेकिन उम्में व्यष्टि और समष्टि का समन्वय है जबकि लक्ष्मण में यह पूर्णतः नहीं है।

मानस के तीसरे प्रकार के प्रात्र सामन्य स्वभाव वाले हैं। इस तरह के पात्रों में नैतिक आधार पर सामंजस्य नहीं है। इन में भावों विचारों और कार्यों में एक रूपता नहीं है। दशरथ, विभीषण, सुग्रीव, केकेयी मंथरा आदि इस वर्ग के अंतर्गत आते हैं। वे भी तीन प्रकार के हैं— १ उन्नत स्वभाव के पात्र २ सम स्वभाव वे पात्र ३ पतित स्वभाव के पात्र। दशरथ, विभीषण, सुग्रीव आदि प्रथम प्रकार के, अंगद मंडोदरी आदि द्वितीय प्रकार के और कैकेयी, मंथरा आदि तृतीय प्रकार के

१ तुलसी का कार्यित्री प्रतिभा का अध्ययन, डा. श्रीधर सिंह,

पृ. ३९४

पात्र हैं। उपर्युक्त ढाँचे के आधार पर मोल्ल और तुलसी की रूपकल्पना का तुलनात्मक अध्ययन और अनुशीलन नीचे किये जा रहा है।

## २-४२ आदर्श पात्र ,

अ) राम : वास्तव में राम तुलसी और मोल्ल दोनों का आराध्य देव और सांस्कृतिक चेतना के प्रतिनिधि हैं। आरंभ से अंत तक राम दोनों काव्यों में जटिल परिस्थितियों का मामना करने हैं। सभी परिस्थितियों में उनका व्यक्तित्व एक सा रहा।

राम लोक धर्म का पालन और रक्षण करते हैं। इसों लिए उनके चरित्र में सरल आचरण, भिकट भाषण, परदुःख निवारण आदि का निर्वाह है। परशुराम के अपमान जनक वचनों को सुनकर भी अपना धीर गंभीर सुशील प्रकृति का परिचय देते हैं। इसी जान प्रकृति का परिचय हमें बनवास के आदेश के पालन, चिवकूट में उत्पन्न समस्या का समाधान, विभीषण को दिया गया शरण और समुद्र से की गयी प्रार्थना में दिखाइ पड़ता है। युद्ध के लिए रत न होने पर भी धर्मरत पर विश्वास करके अपनी धीरता को प्रकट करते हैं। राम धर्म रत है। इसीलिए दान, दया, करुणा, ममता, कोमलता, सहनशीलता आदि का परिचय उन्होंने समय के अनुसार दिया है।<sup>१</sup>

आदर्श राम में मानवीय कोमलता और सुशीलता है। राम ताड़क का वध भी करते हैं और द्रवित होकर उसे निज पद भी देते हैं। लेकिन मोल्ल के राम में वह औदार्य नहीं है। इसी द्या से मानस में रावण कुम्भकर्ण जैसे शत्रुओं को राम अपने में विलीन कर लेते हैं। मोल्ल के राम तुलसी के राम के जैसे बालि की हरिधाम प्रदान करते हैं। तुलसी के राम जनक पुर में प्रवेश करते समय छोटे बालकों के मन की भी प्रसन्न करके अपने औदार्य प्रकट करते हैं। वनमार्ग में ग्राम वधुओं के प्रेम की विवशता में फंसकर उन्हें मुक्ति प्रदान करते हैं। मोल्ल के राम इस तरह प्रेम की विवशता में फंस नहीं सकते क्योंकि वे शरणागतों की ही रक्षा करते हैं। राम की सुशीलता केवट के अटपटे बयन, कोल किरातों के आधिन्य सत्कार, शबरि आदि के आधित्य ग्रहण, युद्ध भूमि से विरत वानर बालुओं को प्रबोधन करके उनको धैर्य देने आदि अवसरों पर प्रकाशित हुआ है। मोल्ल रामायण में भी इन प्रसंगों का सुन्दर चित्रण है। राम के चरित्र को आदर्श की पराकाष्ठा तक ले जाने के लिए तुलसी ने उनसे वैरी की प्रशंसा भी करवायी है।<sup>१</sup> लेकिन मोल्ल के राम केवल मानस हैं। उन्होंने रावण की प्रशंसा करना तो दूर रहा, लेकिन आत्म स्तुति तक कर ली। तुलसी ने अपने राम को सरल, पवित्रता और शिष्टाचार से युक्त योग्य पुरुष के रूप में मान लिया है। वे रात में विश्वामित्र के पैर भी दबाते और

माथ आज्ञा पाकर ही सोने के लिए जाते हैं। मोल्ल रामायण में राम को उत्तम शिष्य के रूप में नहीं दिखाया गया है। मानस में परशुराम के कठिन वचनों का उत्तर भी राम सरलता से देता है। तुलसी लक्ष्य राम को आदर्शवान दिखाना है। लेकिन मोल्ल के राम परशुराम से कठोर वचन इसलिए नहीं कहते कि परशुराम विप्र हैं जिनका अपमान क्षप्रियों को नहीं करना चाहिए।

तुलसी ने राम को आदर्श प्रेम का प्रतीक माना है। राम का प्रेम मानस में भाई, पिता, पति और सखा तक ही नहीं सीमित रहा। बल्कि वे पुरजन और परिजन को भी समान रूप से आदर करते हैं। मोल्ल रामायण में भी राम का यही रूप दृष्टिगोचर होता है। मोल्ल रामायण सें भी राम के वियोग में वहाँ की जनता दशरथ और कैकेयी को गालियो देतो है। तुलसी ने अनेक प्रसंगी की कल्पना की जिससे राम की धीरता और गंभीरता, कोमलता, आचरण की पवित्रता आदि का स्पष्ट परिचय हो सके। राज्य त्याग करके माता पिता भाई-भरत आदि सब के प्रेम को राम ने प्राप्त किया। भरत के प्रेम मरे वचनों को सुनकर राम आत्म विभोर हो जाते हैं और अपने प्रेम की समवयस्कों के प्रति अनुराग के रूप में, छटोके प्रति अनुराग के रूप में, पतितों के प्रति दया के रूप में, अनाथों के प्रति करुणा के रूप में, मोल्ल रामायण में भी प्रायः राम के प्रेम ने विभिन्न रूपों में अवश्य अभिव्यक्ति पायी है। तुलसी के राम

का चरित्र चिवण सम रूप में है। अर्थात् आद्यंत राम के चरित्र में व्यक्तित्व की रेखाएँ एक ही रूप में दिखाई देती हैं। उनके चरित्र में उतार चढाव नहीं हैं। आरंभ से लेकर अंत तक राम के आदर्श चरित्र का पाठक पर प्रभाव लगभग एक ही प्रकार पड़ता है। इस प्रकार मानस-कार राम के चरित्र-चिवण में पूर्ण रूप से सफल हुए हैं। पर मोल्ल के राम का चरित्र समरूप में नहीं है। मोल्ल के राम जो उज्ज्वल व्यक्तित्व से के साथ दिखाई पड़ते हैं वे कुछ प्रसंगों में दुर्बल चरित्रवाले के समान प्रतीत होते हैं। विरही राम में उन्सुक्त कामुकता और वासना का प्रबल्य अधिक दिखाई पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके प्रेम में गहराई नहीं हैं। युद्ध काण्ड में भी जैसे पहले बताथा जा चुका है शुर रावण के सामने वे म्लान पड़ गये हैं क्योंकि वे रावण से दिये गये शिरस्त्राण को ग्रहण करते हैं। रावण वध के पश्चात् राम सीता से कहते हैं कि अपयश से बचने के लिए उसने रावण को मार डाला और सीता को वे कदाचित् स्वीकार नहीं कर सकते और अपनो इच्छा के अनुसार वह कहीं भी जा सकती हैं।

कुलसति जेर गोनि पोयिन

यल शात्रवु गेलुव नोप डनु पलुकुलकुन्

गेलिचिति बग वंपिति निक

नेलता नीयिच्च जनुमू ने निनोल्लन्<sup>१</sup>

इस प्रसंग में राम का चरित्र बहुत ही आस्थास्पद हो गया है। तुलसी के नाम के चरित्र में इस प्रकार का लांछन कहीं भी देखने के लिए नहीं मिलता। तुलसी की आदर्शवादिता ने राम को मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में चिह्नित किया है जो शील, जक्षित और सौंदर्य के केन्द्र हैं। मोल्ल के राम में ये विशेषताएं कथानक के आग्रह से यत्र तत्र क्यों न आगयी हो, फिर भी उन्हें तुलसी के राम के समकक्ष स्थान नहीं दिया जा सकता। संक्षेप में यह कह सकते हैं कि तुलसी के राम परब्रह्म से प्रतीक होने के कारण उनका चरित्र उक्त प्रकार उज्ज्वल हो गया है, पर मोल्ल के राम कथा की दृष्टि से अवतार पुरुष होने पर भी चरित्र-चित्रण की दृष्टि से साधारण मानव है जिनमें सद्वृत्तियों के साथ कुछ दुर्वृत्तियां भी मौजूद हैं।

तुलसी के राम में बाहर और भीतर का सामंजस्य है। परशुराम के अपमान जनक वचनों को शांति से सुनना, पिता के आज्ञानुसार वनवास के लिए तैयार होना और चित्रकूट में पिता के आदर्श और भरत के कातर स्नेह का सम्यक संवाहन करना आदि से यह प्रगट होता है कि राम में भीतर और बाहर का सामंजस्य है। मोल्ल के राम में भी उक्त प्रसंगों में इस तरह का सामंजस्य है। तुलसी के राम राज्याभिषेक के पूर्व दिन में भरत की चिता में व्यस्त है। राम अपना त्याग कष्ट सहिणुता, कर्तव्यपरायणता, प्रेम तथा त्याग गर्भ हर्ष आदि कों परिचय देते हैं। यह तो तुलसी को मौलिक योजना है। उनका

लक्ष्य केवल राम के चरित्र का उत्थान है। मोल्ल के राम अपने ईश्वरत्व से अनभिज मानव है जो खेद और मौद में दुःख और हर्ष को प्रकट करते हैं। इसी लिए तुलसी के जैसे मुल्ल राम को ऊंचे धरातल पर प्रतिष्ठित नहीं करना चाही। इसी लिए उनके चरित्र में आदर्श की कमी और यथार्थ की अधिकता है।

आ) भरत : भरत का चरित्र मानस में अपने आप पूर्ण है। भरत के जीवन का आरंभ परीक्षा से होता है। घर ओने पर माता के मुह से भरत को सारा समाचार प्राप्त हुआ और उससे वे दुःखी हो गये हैं। पिता की मृत्यु की अपेक्षा उसे राम लक्ष्मण और सीता का मुनि वेष में राज्य से निर्वलित होना अधिक खटकती है। भरत अपनी माता की कूट नीति का आधार स्वयं अपने को समझ लेता है और इस तरह दूसरे को दोप न देकर अपने को ही देष देना और उसके लिए पचताना उत्के निष्कलुष हृदय का प्रमाण है। भरत में आत्म चलानी नहीं। भरत की स्पष्ट धारणा थी कि कोदव के पौधे से फल उत्तन ही नहीं होता। भरत का पावन हृदय किसी के विषय में कुछ न सोचने पर भी उससे संबन्ध जोड़े जाने पर अंतःकरण में अपने को अपराधी समझ लेता है। वे स्वयं दोषों नहीं हैं। इसे सिद्ध करने के लिए कविने जिस प्रकार की परिस्थिति की योजना की है वह भावपूर्ण और मनोवैज्ञानिक है। पुत्र के प्रति समतामयी कौसल्या का आर्तनाद सुनकर भरत अधिक व्याकुल होते हैं।

एक और अपनी भी देते हैं और दूसरी और अपने को पापी या अपराधी समझ पाते हैं। गुरु के सामने भी वे अपने मानसिक उद्देशों को टीक ठीक कह देते हैं<sup>११</sup> भरत की आत्म ग्लानि के मूल में राम के प्रति उनका अनुराग ही है। राम और सीता ने जिन जिन स्थानों पर विश्राम किया है उन्हें देखकर उनका हृदय फल उठता है। उनका अनुराग राम तक ही सीमित न रहा। वे आगंभ में सब के प्रति अपनी चिता को प्रकट करते हैं। भरत की इस धोड़ी परिधि में आनेवाले सभी पातों को उनका अनुराग मिला था। भरत में प्रेम के आरंभिक रूप ने अंत तक आने आने पूर्ण विकास पाया है। भरत और लक्ष्मण के प्रेम में आदर्श प्रेम के साथ लोकदर्श की रक्षा का भी प्रयास है। अगर भरत का पात्र इस लोकदर्श के आलंब ने पुष्ट नहों होता तो वह भी एक असामान्य स्वभाववाला पात्र ही रह पादा। मोल्ल रामायण के भरत का चरित्र दो बार विकास पाया है। चिक्क कूट प्रसंग में उनका कठ दुःख से मर जाता है, औंचें अश्रु पूरित हो जाती हैं तथा शरीर में रोमांच हो जाता है। चौदह वर्ष नंदिगांव में रहकर अपने शरीर को तप से तपाते हैं। मोल्ल रामायण का यह प्रसंग मनीश रूप ने वर्णित है। इस प्रसंग में भरत कैकेयी की कूटनीति, रामके वनवास की दुरवस्था और दशरथ का पुत्र शोक आदि के बारे में राम के कहकर अपने दयानुकूल भाव का सच्चा परिचय देता है।<sup>१२</sup> इस तरह भरत

के चरित्र चित्रण में तुलसी और मोल्ल ने आदर्शों की समानता जोड़कर उसे एक आदर्श पात्र बनाया है।

इ) सीता : मानस की पुष्पवाटिका प्रसंग में राम के प्रति सीता में पूर्व राग जाग उठा। सीता राम के जीवन की मुख्य और दुःख अनुभूतियों में उसकी अनुगामिनी रही। पलंग पीठ से उठकर कठोर भूमि पर ही पैर न रखनेवाली सीता पति की दुःख संगिनी बनकर भारतीय आदर्श पत्नी का परिचय देती है। ये पति के लक्ष्य का साधक है, बाधक नहीं। तुलसी ने अन्य राम कृतियों में सीता को इतना कोमल सिद्ध किया कि दो चार कदम रखते ही वे राम से ठहरने को कहती है। लेकिन आदर्श भारत नारी के रूप में सीता को सिद्ध करने के लिए बाधक समझकर तुलसी ने इस प्रसंग को हटाया। इतने कष्टों को मन्नने के बाद भी सीताने कहीं विश्राम लेने की इच्छा मानस में व्यवत नहीं करती। आदर्श पत्नी की भाँति स्त्री के मन को बात जाननेवाली और तदनुकूल कार्य करनेवाली है। केवट का नाव से गंगाके पार उतारने पर प्रिय की इच्छा के अनुकूल सीता ने मुदित मन से मुदरी उतारकर उसे देना जाहा। मोल्ल रामायण की सीता में आदर्श पत्नीत्व का रूप तो मिलता है लेकिन अन्य पात्र सीता के चरित्र को कलंकित सिद्ध करने का प्रयत्न करते हैं। सीता एक आदर्श पत्नी के समान पति की निंदा दूसरों के मुह से सुनकर सह नहीं सकती। इसीलिए रावण को राम के पराक्रम का परिचय देकर आदर्श भारतीय

नारी सिद्ध हीती है।<sup>१</sup> लेकिन शूर्पणखा रावण के मुख से मोल्ल सीता का कामोदीपक अंगांग वर्णन कराती है।<sup>२</sup> तुलसी की सीता के द्वारे से सुनकर हर एक नारी सीता का अनुकरण और अनुसरण करने का प्रयत्न करती है। अंत में सीता को जब मुक्त करके राम इसे उनसे कठोर वचन कहते हैं तो सीता मूँछित हो जाती है। भगवान विष्णु राम को सीता की पवित्रता का उल्लेख करते हैं। इस प्रकार मोल्ल की सीता परंपरानुगत दास्य की गृंखलाओं में बद्ध भोग्य व्यक्तित्ववादी स्त्री का प्रति-निधिन्व करती है। तुलसी की अपेक्षा मोल्ल की सीता में आदर्श नारी रूप कम और सामाजिक अत्याचारों में ग्रसित सामान्य भारतीय स्त्री का रूप अधिक दिखाई पड़ता है।

ई) कौसल्या : मानस में कौसल्या का चरित सीमित क्षेव में पूर्ण है। उनके लिए लक्ष्मण और भरत राम से कम प्रिय नहीं हैं। राम के अनुराग से वंछित कौसल्या को भरत को आगमन जीवित रखती है। भरत का आना उनके लिए राम के आने के जैसा था।<sup>३</sup> कौसल्या अपनी अहेतुकी ममता से सारे संसार को प्रेश, ममता और करुणा का प्रसाद प्रदान करती है। चिव्वकूट में भरत के लिए कौसल्या ने जिम प्रकार की चिन्ता व्यक्त की, वह संसार की समस्त माताओं के लिए स्मृह्य है। वह राम के आदर्श मार्ग में बाधक नहीं बनती और

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ५।५८-६६

<sup>२</sup> दही, ३।२।-२५, ३।८०-५६

<sup>३</sup> मानस, २।१६५-१

अपनी ममता में समान रूप में सब में बांट देती है। सीता का राप के साथ वन जाने का निर्णय करना लोक धर्म का पालन करना है। राम के वनवास प्रसंग सुनकर कौसल्या पहले दुःखी होती है। लेकिन तुरन्त ही राम को वन जाने के लिए उत्साहित करती है। कविने अपनी अनन्यतम प्रखरता से कौसल्या को आदर्श मातों के रूप में दिखाने का प्रयत्न किया है। मोल्ल रामायण संक्षिप्त काव्य होने के कारण कौसल्या के चरित्र पर इतना प्रकाश नहीं डाला गया। राम के जन्म तक ही कौसल्या का उल्लेख है और अन्यत्र कहीं उनका उल्लेख नहीं।

#### २-४३ असामान्य पात्र :

इम असामान्य चरित्रों के अंतर्गत रावण और लक्ष्मण आते हैं।

अ) लक्ष्मण : मानस में लक्ष्मण में एक तत्व की प्रधानता है। वह है राम के प्रति विशिष्ट अनुराग। इस लक्ष्य पर कहीं आंच आती है तो वह उस के लिए असह्य बन जाती है। राम के यश पर कहीं आधात् हुआ तो लक्ष्मण उसे सह नहीं सकता। लक्ष्मण वहे शांति और अशांति पूर्णतः राम के मुख दुःख पर निर्भर है। जनक पुर में भ्रमण करते समय बालकों के सान्निध्य में लक्ष्मण सुख पाते हैं। ग्राम वधुओं के अनुराग में आत्मीयता का अनुभव करते हैं और रुषियों के अनुराग आत्म विभोर हो जाते हैं। लक्ष्मण की इस प्रतिक्रिया का कारण यह

है कि जहाँ जहाँ गम को रुचि होती है लक्ष्मण भी उन्होंने विपयों में रुचि को ढूढ़ने का प्रयत्न करते हैं। कुछ प्रसंगों में गम भीतर तो आनंद का अनुभव करते हैं और बाहर से परेशान होते हैं। लक्ष्मण उसे समझ नहीं पाता। इसी लिए वह राम से भी अधिक व्याकुल होते हैं। यह जान कर राम तुरंत शांत होते हैं और हर्ष का अभिनय करते हैं। लक्ष्मण राम के यश रूपी पताके के दण्ड है।? जनकपुरी की सभा परशुराम के कोप, मुग्रीव के विपरीताचरण और लंका का युद्ध लक्ष्मण के व्यक्तित्व को स्पष्ट करनेवाले सुन्दर प्रसंग हैं। लक्ष्मण राम के राज्य निर्वासन पर क्रोध व्यक्त करते हैं। इस का कारण यह है कि लक्ष्मण म्बवं राम को अप्रसन्न नहीं दरख्ख सकते। इसीलिए वह दशरथ से कुछ नहीं कह सकते। लेकिन मार्ग में मुमंत्र से अपना विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त करते हैं। लक्ष्मण राम के लिए हो आनुर, उग्र, कष्ट सहिष्णु, साहिमी, त्यागी और परिकर वद्ध भी हैं। मोल्ल रामायण के लक्ष्मण अपने भाई की साथ वन वास के लिए तैयार होते हैं। मानस के जैसे मोल्ल रामायण में लक्ष्मण वनवास का समाचार मुनकर क्रोध प्रकट नहीं करते। परशुराम प्रसंग में भी मानस के जैसे मोल्ल रामायण में लक्ष्मण तिरस्कार पूर्वक समाधान नहीं देते। केवट को राम के ईश्वरत्व का उपदेश नहीं देते। मुग्रीव की प्रतिज्ञा भूल जाने पर क्रोध व्यक्त नहीं करते हैं। भाई की मलाइ ही उनकी

लक्ष्य है। इसी लिए विभीषण पर प्रहार किये गये बाण के सामने खड़े होकर राम की प्रतिक्षा की रक्षा के लिए स्वयं मूर्छित होने के लिए भी तैयार होते हैं।<sup>१</sup> मोल्ल के लक्ष्मण में तुलसी के लक्ष्मण की भाँति क्रोध और रोष दिखाई नहीं पड़ते। जहां तुलसी का लक्ष्मण अधिक वाचाल दिखाई पड़ते हैं, वहां मोल्ल का लक्ष्मण मौन व्रतीके खमान दिखाई पड़ते हैं। मोल्ल के लक्ष्मण राम के परब्रह्मत्व या विष्णु के अवनारत्व से पूर्वतः अनभिज्ञ हैं। मानस में राम के साथ लक्ष्मण का संबन्ध भाई के रूप में ही नहीं परब्रह्म या विष्णु के भक्त के रूप में भी है।

आ) रावण : रावण अपने हित को चाहनेवाला एक असामान्य पात्र है। वह जो कुछ करता है उसे अपने तक सीमित रखना चाहता है। उनके लिए परिवार, परिजन सब हित साधन के माध्यम है। अगर उनके अपने स्वार्थ की सिद्धि नहीं होती तो वह असहिष्णु होकर अपना भयानक रूप का प्रदर्शन करता है। वह भाई विभीषण को अपपमानित करता है और भाल्यवंत की बात को ठुकराता है और मंडीदरी की प्रार्थनाओं की हँसी उड़ाता है। वह संसार के हर एक व्यक्ति और उसके व्यापार को अपने लिए मान लेता है।

तुलसी वास्तव में रावण मोह को का प्रतीक मानते हैं। उनकी रूप कल्पना में काम क्रोध, लोभ प्रमुख अंगों के रूप में

तथा कपट, दंभ पाख्वण्ड आदि को सहायकय अंगों के रूप में लेकर राम के सामने रावण को नगण्य सिद्ध करना चाहते हैं। रावण मोह से आच्छादित हैं। इसीलिए वह प्रत्येक तत्व का मूल्यांकन इन्द्रित ज्ञान के आधार पर करने का प्रयत्न करता है। रावण सन्य को इस लिए ग्रहण नहीं कर सकता कि वह उसका मूल्यांकन बुद्धि के बल पर करना चाहता है। खर-दूषण के वध के पश्चात् रावण राम की शक्ति पर शंका प्रकब करता है। उस शंका आधार भी तर्क ही है। मोल्ल रामायण में यति के वेश में राम की शक्ति का अंदाज लागाने का प्रयत्न रावण करता है। रावण के दृष्टिकोण में राम केवल नर अथवा तापसी हैं। इसलिए सीता के सामने रावण राम की हँसी उडाते हुए कहता है कि कंदमूल को आहार के रूप में ग्रहण करनेवाला राम कैसे तुम्हारी रक्षा करेगा? १ मानस में खर-दूषण के वध के बाद रावण राम को भगवान भान लेता है। लेकिन मोल्ल रामायण में हनुमान के द्वारा लंका का दहन किये जाने के बाद रावण राम की शक्ति का सहस अंदाज लगाता है और मेघनाथ से अपना भय व्यक्त करता है। फिर भी तुलसी का रावण मोह से पूर्णतः भक्त नहीं है।

तुलसी ने रावण को राम के सामने नगण्य सिद्ध करके उसे कामुक रूप में ही सिद्ध करने का प्रयत्न किया है। इस दृष्टि-

कोण की पूर्ति के लिए तुलसी ने रावण की अच्छाई को पूर्णतः अस्वीकार किया है। मोल्ल का रावण भी पाखण्डी, अत्याचारी, मूर्ख और कामुक है। फिर भी मोल्ल रावण के कुछ अच्छे गुणों की और संकेत करती है। रथ विहान होकर पृथ्वी पर से युद्ध करनेवाले राम को देखकर रावण इस पद्धति को युद्ध नीति के विरुद्ध समझ लेता है और रथ कवच आदि छो भेंट के रूप में राम को समर्पित करता है।<sup>१</sup> मोल्ल वास्तव में वाल्मीकि रामायण से प्रभावित है जिसमें रावण की भलमानसी पर भी प्रकाश डाला गया है। इस तरह रावण की रूप कल्पना में मोल्ल तुलसी से एक कदम आगे बढ़ गयी है। मोल्ल रावण को तुलसी से भी अधिक कामुक रूप में चित्रित करती है।<sup>२</sup> मर्यादा की रक्षा के लिए तुलसी ने ऐसा नहीं किया।

## २-४४ सामान्य पात्र :

अ) सामान्य स्वभाव के उन्नत पात्र : सामान्य पात्रों के उन्नत कर्ग में मुख्यतः दशरथ, विभीषण और सुग्रीव आते हैं। दशरथ वृद्ध राजा हैं जो आदर्शवादी होने पर भी पत्नी के हाथों की कट्टपुरली है। उनकी दुर्बलता का परिक्य उस समय मिलता है जब कि वे कैकेयी को दुःख देनेवाले के सिर को चाहे वह नरेश की क्यों न हो उतार लेने को प्रतिज्ञा करते हैं। राम को वज्रास का दण्ड देकर अपने वाकदान की रक्षा करते हैं और राम के लिए प्राण त्यागकर पुत्र व्रतस्त्रय की रक्षा करते हैं। आदर्श का

निर्वाह उनके चरित्र को ऊंचे धरातल तक अवश्य ले गया है। परन्तु सत्य का पालन वे अन्तः प्रेषण से नहीं करते, लेकिन मर्यादा के भय से ही करते हैं। वे शिव से प्रार्थना करते हैं कि वे राम की मति का परिवर्तन करे ताकि वे वन को नहीं जायें। मोल्ल रामायण में दशरथ सुमंत्र से अपनी दुरवस्था का उल्लेख करते हैं और विश्वास्त से भी अपनी व्याकुलता प्रकट करते हैं। जो दशरथ पुत्र के बदले राक्षस के संहार के लिए विश्वामित्र के साथ स्वयं चलने के लिए तैयार होते हैं वे ही दशरथ मोल्ल रामायण में वचन के पालन के लिए दुःख को फोलकर राम को वन भेजने के लिए तैयार होते हैं।

विभीषण धर्म के समर्धक और अवश्य राम के भक्त हैं। तुलसी के अनुसार विभीषण में आज्य प्राप्ति की आकांक्षा है राम के सामने प्रकट करता है।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण विभीषण भ्रातृ द्वोही है। क्योंकि रावण की नामि में स्थित अमृत का रहस्य विभीषण राम को सुनाते हैं। तुलसी का सुग्रीव लक्ष्मण के भय से राम की सहायता करता है। लेकिन मोल्ल रामायण में सुग्रीव राम के अवतार के प्रति रूप में और उनकी सहायता की बदला लेने के लिए वानर सेना की सहायता से सीतान्वेषण करता है। मानस में पहले सुग्रीव भोग विलास में व्यस्त होता है। लेकिन सक्षमण उसे जगाकर ले जाता है। मोल्ल रामायण

में यह प्रसंग नहीं है और सुग्रीव अपने आप राम की सहायता के लिए आगे बढ़ते हैं।

आ) सामान्य स्वभाव के साधारण पात्र : इस वर्ग के अंतर्गत अंगद, विजटा और मंडोदरी आते हैं। अंगद क्रोध में आकर शील का अतिक्रमण और शक्ति के प्रदर्शन के साथ प्रतिपक्षा का अप्रत्यक्ष विरोध थी करता है। मोल्ल रामायण में वह कंपन शोणिताक्ष, व्रजंग आदि राक्षसों के साथ भयंकर युद्ध करके उन्हें मार देता है। वह कुम्भ और निकुम्भ का भी संहार करता है।<sup>१</sup> मोल्ल अंगद का चरित्र एक पराक्रमी वानर के रूप में प्रस्तुत करती है। सीतान्वेषण के बाद अंगद बन्दरों को सुग्रीव के उपवन में प्रवेश कराकर वन को ही नहीं नष्ट कराता लेकिन मालि पर भी आक्रमण करता है। यह प्रसंग मोल्ल रामायण में सुन्दर ढंग से वर्णित है।<sup>२</sup> यह अंगद की दुर्बलता है।

विजटा और मंडोदरी राक्षस स्त्रियों होने पर भी भक्ति का उपदेश तेती है। विजटा मोल्ल रामायण में स्वप्न देखती है और सीता को प्रसन्न रखने का प्रयत्न करती है। वह उनको स्वप्न समाचार सुनाती है और कहती है कि राम कुछ दिनों में लंकार धर आक्रमण करेंगे।<sup>३</sup> मोल्ल की मंडोदरी मानस के जैसे

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण, ६-१/६८/८८

<sup>२</sup> वही ५।२३१-२४०

<sup>३</sup> वही, ५।८२-८९

अपने पति को राम की शक्ति का परिचय देकर राम से विरोध का त्याग करने का उपदेश देती है। रावण यज्ञ भंग करने के लिए अंगद जब मंडोदरी की कबरी को खींचकर लाता है नव भी वह रावण को यही उपदेश देती है।<sup>१</sup>

इ) सामान्य स्वभाव के पतित पात्र : इस वर्ग के अंतर्गत मंथरा और कैकेयी आती है। मंथरा का स्वभाव दूसरों की बुराई करना है। कैकेयी जो भूमि रूप में बुरी नहीं थीं संथरा की बहातों में आकर नारी स्वभाव की सहज दुर्क्षलता का परिचय देती है। मोल्ल रामायण में मंथरा का प्रसंग नहीं है। कैकेयी मानस के जैसे दशरथ के प्रति अनुराग पूर्ण व्यवहार करके अपनी कामना व्यक्त करती है। और राम को वनवास को सजा दिलचाती है।

ई) वर्ग गत विशेषताएँ : १—स्त्री वर्ग : स्त्रियों के तीन प्रकार हैं। जनकपुरी की नागरियों, राणिवास की मंथरा और वनवासिनी ग्राम वधुएं। फहले वर्ग की स्त्रियाँ में मोह और उससे उत्पन्न आह्लाद है। दूसरे में ईर्ष्या का नमन नृत्य है। और तीसरे में दुर्भाग्य पर आत्म दृति और करुणा। पुरुष के स्वभाव से प्रभावित होनेवाली स्त्रियों के सहज गुण जगन्नपुर की नागरियों के माध्यम से व्यक्त हैं। दयनीय स्थिति पर करुणा व्यक्त करने का स्वभाव वन की ग्राम वधुओं में है। चुगली करनेवाली

नारी का चिकित्सण मंथरा के माध्यम से मानस में व्यक्त हुआ है। इस ढंग की स्त्रियां संकट से बचने का उपाय भी बताती है। लेकिन यह प्रसंग मोल्ल रामायण में नहीं है।

२ वानरवर्ग : मानस में वानर और भालू अपने नटखट मन को कुछ विशिष्ट रीति से प्रदर्शित करते हैं।<sup>१</sup> मोल्ल रामायण में भी सुग्रीव के मधुवन में वानरों की चेष्टाओं का मार्मिक वर्णन है। यह मोल्ल के काव्य कौशल का परिचायक है। और वानरों का स्वभाव इस मानस में वर्णित नहीं है।<sup>२</sup> वानरों को रात में दिखाई नहीं पड़ता है। रात में भालू ही अपना प्रराक्रम दिखाते हैं। मानस में इस प्रवृत्ति का उल्लेक्ष नहीं है।

५ प्रतीकात्मक पात्र : हनुमान : जीव अपने हृदय में जब भगवान का आभास पाता है तब पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ जीवन पर्यंत अनन्य भक्ति के रूप में रहना चाहता है। हनुमान में भक्ति की चरमावस्था है। वे अपने को निर्गृण और भगवान को सगुण मानते हैं। राम सकते चन्द्रमा के बीच में स्थिति काली धब्बे का कारण प्रछते हैं। जवाब के कारण हनुमान कहते हैं कि उसे सर्वत्र राम ही दिखाई पड़ते हैं। हनुमान को राम के प्रति चावक जैसे अनन्यता और एक निष्ठता है। मोल्ल के हनुमान भक्ति की अपेक्षा एक आदर्श सेवक है जो अपने स्वामी के सुख दुःखों में भाग लेते हुए संपूर्ण

जीवन उनके चरणों के सामने न्योछावर कर देते हैं। स्वामी के वचन का ठीक पालन करनेवाले एक भक्त हैं जो अपने स्वामी की शक्ति का परिचय वैरी का देते हैं। इस तरह हनुमान की रूप कल्पना में मोल्ल और तुलसी में अंतर अधिक है।

## २-४५ निष्कर्ष :

तुलसी ने राम को पूर्ण आधर्शवादी के रूप में रूपकल्पना की और रावण को उनके सामने नगण्य सिद्ध किया। शेष पात्र उन दोनों को धुरी बनाकर उनके चारों और परिक्रमा लगाते हैं। लेकिन मोल्ल आदर्शीकरण के स्थान में यथार्थ कथन को स्थान देती है। उनके राम आदर्श मानव हैं और रावण कामुकता का प्रतीक होने पर भी सचाई भी उनमें विद्यमान है। तुलसी के जैसे मोल्ल में राम के विद्रोही पात्र प्रच्छन्त राम भक्त नहीं हैं। इस तरह पात्रों की रूप कल्पना में दोनों की मान्यताएं और अभिरुचियाँ अलग हैं।

## चतुर्थ अध्याय

### भावपक्ष

३-१ प्रस्तावना :

हरेक काव्य में भावपक्ष कलापक्ष के समान एक अपेक्षित तत्व है। काव्य के भाव पक्ष के अंतर्गत विभिन्न रस और उसकी योजना स्वीकार किया जाता है। रस निष्पत्ति के मूल मंत्र विभाव, अनुभाव और संचारी भाव के संबोग को समझकर कोई कवि रस विशेष की योजना को सफलता के साथ कर सकता है।<sup>१</sup> महाकाव्यों में रस की योजना कवि की मौलिक प्रतिभा, उसका आद्योपांत कुशल निर्वाह आदि पर निर्भर रहती है। अगर इन सभी नियमों का पालन नहीं किया जाय तो रस भाव पाव ही रह जाता है अथवा रसाभास में परिणत हो जाने की शंका बनी रहती है। रस के प्रचार और प्रसार के लिए अनुकल वस्तु संग्रह के साथ साथ समर्थ नायक का चुनाव भी आवश्यक है। काव्यं यशसे<sup>२</sup> बहकर मम्मट ने काव्य निर्माण के हेतुओं में यह को सर्व प्रथम स्थान दिया है। तुलसी भी साधु समाज में भण्ति के सम्मान की अपेक्षा रखते हैं।<sup>३</sup> इसी लिए तुलसी प्राकृत जनों के गुणगान को हेय समझकर मंगल भवन अमंगल

१ साहित्य दर्पण, ३।१

२ काव्य प्रकाश, १।२

३ मानस १।१४

हारी राम की कथा की अपना प्रतिपाथ बताते हैं। मोल्ल भी काव्य की पीठिका में कहती है कि राम की कथा भक्ति और मुक्ति का मूलाधार है। इसीलिए इसके पहले अन्य कवियों के द्वारा वर्णन किये जाने पर भी वह राम कथा को इतिवृत्त के रूप में स्वीकार करती है।<sup>१</sup>

### ३-१२ काव्य में लोक मंगल की आवश्यकता :

प्रायः हरेक कवि के कर्तृत्व की भूमिका में लोक मंगल का आदर्श अंतर्निहित रहता है। इस भावना को व्यक्त करने के लिए अपने आलंबन का आदर्श रूप प्रस्तुत करता है और उसके गुण ग्राही बनने के लिए लोक को प्रेरित करता है। तुलसी भी इसी आंतरिक उत्साह से प्रेरित होकर राम काव्य के ममस्त प्राचीन कवियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं। और उनके उत्साह से ही प्रेरणा प्रहण करते हैं।<sup>२</sup> तुलसी नायक के अद्वितीय पराक्रम का निरूपण करने के लिए ऐसे ही प्रसंगों को ग्रहण करते हैं पर वे वीर रस के पुट आलंबन के लिए कुछ प्रसंगों को निकाल देते हैं। कुछ को मोड़ देते हैं और कुछ नवीन प्रसंगों का सृजन भी कर लेते हैं। मोल्ल भी अपनी पीठिका में वाल्मीकि, व्यास, बाण भट्ट कालिदास, नाचन सोम भीम, नन्पार्य, श्रीनाथ, रंगनाथ, आदि कवियों से प्रार्थना करती और उनसे प्रेरला प्रहण करती है।<sup>३</sup> पीठिका के एक

<sup>१</sup> मोल्ल रामायण की पीठिका, २०-२३      <sup>१</sup> मानस, ११३-१४

<sup>३</sup> मोल्ल रामायण की पीठिका, १, १०

छन्द में वे पोतना की रचना शैसी का अनुकरण करती है। मोल्ल नायक के पराक्रम का निरूपण करना चाहती है। इसी लिए अन्यकाण्डों की अपेक्षा युद्ध काण्ड में विस्तार वर्णन करती है।

### ३-१३ कवि भावना और राम का आकलन :

‘तुलसी मानस में उत्साह का निरूपण करना चाहते हैं।’ नायक की सभी क्रियाएं वीर रस में परिणत होती है। मोल्ल रामायण में भी मानस के जैसे राम जन्म का उद्देश्य दुष्ट शिक्षा और शिष्ट रक्षा है। विश्वामित्र के साथ प्रथम वन गमन और द्वितीय वन गमन में राम के उत्साह का परिचय मिलता है। राम का लक्ष्य धर्म की प्रतिष्ठा है और वह मानस का स्थायी भाव उत्साह का अभिन्न रूप है। राम के इसी उत्साह की प्रशंसना शुनल जी करते हैं।—‘बाल्यावस्था में ही जिस प्रसन्नता के साथ उन्होंने घर छोड़ा और विश्वामित्र के साथ बाहर रहकर अस्त्र शिक्षा प्राप्त की तथा विघ्नकारी विकट राक्षसों पर पहले पहल अपना बल जमाया, वह उस उल्लास पूर्ण साहस का प्रतीक है जिसे उत्साह कहते हैं। छोटी अवस्था में ही ऐसे विकट प्रवास के लिए जिनकी धड़क हमने खुलते देखी उन्होंके पीछे चौदह वर्ष वन में रहकर अनेक कष्टों का सामना करते हुए जगत् को क्षुब्ध करनेवाले कुम्भकर्ण और रावण जैसे राक्षसों को मारते हुए हम देखते हैं। इस प्रकार जिन परिस्थितियों के

बीच में वीर जीवन का विकास होता है उसकी परंपरा का निर्वाहि हम राम चरित मानस मे देखते हैं।<sup>१</sup>

मानस और मोल्ल रामायण दोनों में प्रधान रस वीर है क्योंकि दोनों कवियों का प्रयत्न उसी के प्रतिपादन के लिए क्रियाशील होता है। मानस और मोल्ल रामायण का ढाँचा इप प्रकार है कि उनमें वीर रस को छोड़ कर अन्य रस प्रमुख हो ही नहीं सकता। नायक की चेष्टाओं में भी उत्साह का ही निरूपण है। मानस के आदर्श राम राज्य की प्रजा में प्रमुख रूप से धर्म और गौण रूप से अंध को महत्व देती है। मोल्ल रामायण के अंत में जब राम राजा बनते हैं तब उनके द्वारा धर्म का ही सफल निर्वाह किया गया है।<sup>२</sup> धर्म का निर्वाह भी संभव होगा जब दुष्ट शक्तियों का दमन भी हो। उस कार्य की क्रियाशीलता के लिए वीरता अत्यंत आवश्यक है।

### ३-१४ मानस में रस : विभिन्न विद्वानों के मत :

मानस के रस संबन्धी मतों में शंभूनाथ सिंह, राजपति दीक्षित, भगीरथ मित्र आदि के विचार अनुशीलन के योग्य हैं।

शंभूनाथ सिंह का विचार है कि 'मानस' को आधिकारिक कथा में वीर रस अंगी रस है पर ग्रंथ का पर्यवसान वीर रस

<sup>१</sup> डा. रामचन्द्रशुक्ल, गोस्वामी तुलसीदास, पृ. ११४

<sup>२</sup> मोल्ल रामायण, ६-३/१३५

में नहीं बल्कि भक्ति रस में हुआ है।'

डा. राजपति दीक्षित कहते हैं कि मानस में शांत (भक्ति) रस ही सर्वोपति विराजमान है। अन्य सभी रस के अंगीभूत हैं।'

डा. भगीरथ मिश्र का कहना है कि वास्तव में तथ्य यह है कि मानस में आद्यांत वीर रस की ही प्रतिष्ठा है।

डा. सरनाम सिंह के अनुसार समूचे राम चरित मानस में वीर चरित्र की ही प्रधानता है और राम काव्य प्रणेताओं में कम से कम तुलसीदास ने अपनी कथानक का अवतरण वीर रूप में ही हुआ देखा है। कर्तव्य की वेदी पर सीता के स्नेह का बलिदान राम की कर्म वीरता की धुंधुभी बजा रहा है।

उपर्युक्त उद्धरणों से यह स्पष्ट होता है। राजपति दीक्षित को छोड़कर अन्य सब आलोचक मानस में वीर रस को प्रधान मानते हैं। राक्षस संहार के बाद राम का रणवीर रूप साक्षात्कार होता है। सीता के स्नेह का बलिदान करके राम कर्मवीर बनते हैं। दोनों काव्यों में राम के प्रत्येक कार्य के साथ वीरता जोड़ी गयी है।

३-१५ मानस और मोल्ल रामायण के विभिन्न रस :

संयोग शृंगार मोल्ल रामायण में उस रूप में नहीं है जैसे मानस में है लेकिन वियोग में संयोग की सुख की कल्पना की गयी है। पूर्वराग का समावेश मानस में है। मोल्ल रामायण ही

नहीं, लेकिन तेलुगु के प्रसिद्ध रामायणों में भी शृंगार के इस रूप का पूर्णतः अभाव है।

१३ वीर रसः मानसः के ताटका वधः प्रसंग में राम के अलौकिक पराक्रम का परिचय प्राप्त होता है।

एकहि बान प्रान हरि लीन्हा।

दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा॥

मोल्ल रामायण के उस प्रसंग में इस प्रकार का वर्णन है—

तन चाटुन भयपडेडि राम चन्द्रुनि कनियेन्

... ...

ई याहु दानि जंपग नायम्मुन केसि गोप्य नगरे बोखल्  
चोयनि रोयुडु नम्मुनि नायुडु भय मेरिगि तनमनम्मुन  
नलुकन्।

मोल्ल रामायण में राम के क्षात्र तेज पर प्रकाश पड़ता है। एक और ताटका को आकृति को देखकर राम भय प्रकट करता है साथ ही अकला पर अत्याचार करने की अपनी असमर्थता पर खेद प्रकट करते हैं।

मानस के राम विराघ और कवच्छों को देखकर तुरंत उनको समाप्त करते हैं। लेकिन मोल्ल रामायण में कवच्छ का प्रसंग नहीं है। केवल विराघ का ही प्रसंग है।

मोल्ल रामायण में राम अपने पराक्रम का परिचय परशु—  
राम को देते हैं जिससे परशुराम मुग्ध हो जाते हैं। बाद में

परशुराम राम की शक्ति का परीक्षा करते हैं। वाल्मीकि रामायण का प्रभाव मोल्ल पर पड़ा है।

मोल्ल रामायण में राम का खर से कोई संवाद नहीं होता। खर से राम भयंकर युद्ध करते हैं और उसका सिर काट लेते हैं। मोल्ल के राम मानस के राम के जैसे कर्मवीर नहीं हैं। वे रण वीर हैं और वीर रस की प्रधानता उन में हैं। मानस में राम की कर्म वीरता उनके कैकेयी संवाद में ही उपलब्ध है। मुनि मिलन के प्रसंग में राम का राक्षसों से भ्रस्त मुनि जनों के सामने राक्षस संहार की प्रतिज्ञा करना उनके उत्साह का प्रतीक है। मोल्ल रामायण में यह प्रसंग नहीं है। संस्कृत काव्यों के आधार पर की गयी सच्चाना होने के कारण मोल्ल रामायण में इस प्रसंग का अभाव है। विभीषण के तिलक प्रसंग में राम की दान वीस्ता का निरूपण है। यह प्रसंग मोल्ल रामायण में भी है।

मानस के युद्ध वर्णनों में तुलसी ने सरल सीधि और मार्मिक चित्रों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। विभिन्न अस्त्रों के नाम, वाहनों की सूची और छोटे राक्षसों का युद्ध भी अनेक छन्दों में वर्णन किये जाने के कारण पर्याप्त विस्तार होते हुए भी उस में रोचकता का अभाव है। मोल्ल रामायण में इस प्रसंग का अभाव है। मानस के इस प्रसंग में शौर्य की उदात्तता नहीं है।

शृंगार रस पारिवारिक मर्यादाओं की रक्षा मानस काव्य का पहला उद्देश्य है। मानस मे शृंगार मर्यादा का उल्लंघन कभी नहीं करता। वियोग शंगार मे भी नारी निदा तुलसी करने हैं क्योंकि संभवत वे अपनी पत्नी रत्नावली के प्रेम की प्रतिक्रिया को मूले बिना नहीं रह सकते। तुलसी की अपेक्षा मोल्ल की परिस्थितियां भिन्न थीं। मोल्ल के युग मे समाज मे रसिकता विलासिता ऊचे ध्रातल पर थीं और समाज मे स्त्री का मूल्य एक भोग्या के रूप में था। वैसे तो उम समय के साहित्य में शृंगार रस का उछत रूप मिलता है। मोल्ल की रचना इसी लिए लौकिक शृंगार मे अस्पृक्त नहीं हो सकी।

३ पूर्व राग राम सीता का परस्पर प्रथम दर्शन मानस के जनक वाटिका प्रसरण मे होता है। लेकिन मोल्ल रामायण मे राम और सीता का प्रथम मिलन धनुर्भंग के समय मे राज-दरबार में ही हुआ है। इस तरह मोल्ल रामायण मे पूर्वराग का पूर्णत अभाव है।

४ सयोग शृंगार, मानस मे सयोग का भी निष्कलक चित्रण है। कैकेयी दण्डरथ के मन को लुभाकर अपनी चेष्टाओं मे उसे प्रसन्न करती है और अपनी इच्छा प्रकट करती है। मोल्ल रामायण के इस प्रसंग मे अभिव्यक्ति की भिन्नतम होने पर भी शृंगार रस का ही विवेचन है।

सीता को वनगमन से रोकने के लिए राम के अनुरोध में

नायक के आतंरिक स्नेह का निरूपण है। वन की विकट परिस्थितियों में भी सयोग सुख का अनुभव करनेवाली सीता के वर्णन में संयोग शृंगार का वर्णन उल्लेखनीय है।

वन गमन के समय मानस और मोल्ल रामायण दोनों में सीता की श्रांतिता और व्याकुलता का वर्णन नहीं है। स्त्री के साहचर्य से वन गमन करनेवाली सीता अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती जिसका उल्लेख मोल्ल रामायण में नहीं है।

<sup>1</sup> वियोग शंगार : मानस में वियोग शंगार का मर्म स्पष्ट वर्णन प्राप्त होता है। सीता हरण के पश्चात् राम की विकलता के चिवण में तुलसी ने भाव और कला का समन्वय किया है।

लगभग इसी शैसी में मोल्ल के विरही राम भी अपने उद्गारों को प्रकट करते हैं। प्रत्येक मृग पंछी, वृक्ष, बान्ध से राम सीता का पता पूछते हैं :

‘इस संदर्भ में मोल्ल आलंबन सीता के लिए अनेक पर्याय शब्दों का प्रयोग करती है जो सीते के सौदर्य पर प्रकाश डालते हैं जैसे नेणाक्षी, नेलनांग, वामाक्षी, निभयान,। तुलसी मृगनैनी’ कहकर सीता का संबोधन राम से करवाते हैं। तुलसी इस वर्णन में उपमेयों के द्वारा उपमानों का तिरस्कार करके सीता के अतुलनीय सौदर्य की और सकेत करते हैं। मोल्ल में भी इसी प्रकार का भाव कुछ भिन्न शैली में देखा जा सकता

है। राम कहते हैं कि हे कोयल तुम्हारी भाँति मंजुल आलाप करनेवाली सुकुमारी सीता को क्या तुमने देखा है। हे चक्रवाक तुम्हारे तरह स्तन मार से युक्त सीता को क्या तुमने कहीं देखा है।...

इसी प्रकार हरिण, चन्द्रमा भ्रमर मराल घनसार वृक्ष, कंदली, चेपक, लता आदि सबसे राम अनेक रूपों में अंगवाली सीता के संबन्ध में पूछते हैं। तुलसी ने सीता के अंगों का सौंदर्य का वर्णन प्रत्यक्ष रूप से न करके उपमानों की सूची के द्वारा प्रच्छन्न रूप से देते हैं। सोता के कामुक रूप के धरेतक संबोधनों का प्रयोग भी मोल्ल में है। जैसे गुरुकुच, सुकुमारी, नीलवेणी इत्यादि। मोल्ल रामायण मानस को उपेक्षा लघु काव्य होकर भी राम के विरह वर्णन का विस्तार मोल्ल में ही अधिक हैं। इस जात से भी कवियों के रुचि भेद पर प्रकाश पड़ता है।

तुलसी ने राम अतिकामी शब्द के द्वारा विरही राम की कामुकता पर प्रकाश डाला है। मोल्ल में विरही राम के कामुक रूप का प्रस्फुटन हुआ है। तुलसी के राम की अपेक्षा मोल्ल के राम में विरह का तीव्र या मार्मिक रूप दिखाई देता है। मोल्ल के राम सीता के न मिलने से भयभीत होते हैं, निराशा से मूर्छित होते हैं, धाकावट का अनुभव करते हैं, विरहाग्नि में तप्त होकर शोक करते हैं, प्रलाप करते हैं, दीनता को स्वीकार करते हैं।

मानस में हनुमान के द्वारा सीता के भेजे गये राम के संदेश में भी राम के वियोगी पति हृदय के प्रीति रस का बड़ा मार्मिक वरिचय प्राप्त होता है :

लेकिन मोल्ल रामायण में राम हनुमान से कोई संदेश नहीं भेजता है। हनुमान को केवल मुद्रिका देते हैं। और सीता उसे पाकर राम की आत्मीयता का अनुभव करती है।

सुन्दर काण्ड में विरहिणी सीता का रूप वर्णित है। राम के विरह में तपनेवाली सीता का मनोबैज्ञानिक रूप मोल्ल रामायण में है। विरहिणी सीता के केश लंबे जटाओं के रूप में दिखाई पड़ते थे। मलिन और फटे वस्त्रों को धारण करके धूल को ही विभूति के रूप में अपने शरीर में लेपकर दिव्य मूर्ति रामचन्द्र जी को सीता ने अपने मन में स्थापित किया। पृथ्वी पर ही लेटकर सोती है और वह बीच में फिर जाग कर तारक ब्रह्म मंत्र का जप करती है :

निङुद पेन्नेरिवेणि जडलुगा सवरिंचि

मलिन जीर्णावरंदु बोलिगद्वि

भूमीरजंबु विभूति पूतग बूसि.

तन दिव्य मूर्ति चित्रमुन निलिपि

निरशन स्थिति तोड निलचि भूशय्यन्

बवलिचि निदुर येर्पडग विडिचि

तारक ब्रह्म मंवंबु बटिपुचु  
 गठिन राक्षस दुभृगमुललोन  
 नहित लंका महाद्वीप गहन सीम  
 दपमु सेयुचु तुन्नानु दन्नुगूर्चि  
 नाकु प्रत्यक्ष मगु मनि नाथुनकुनु  
 विन्नविंपुमु सत्वसंपन्न नीवु ।

मोल्ल का यह विरह वर्णन बहुत ही मर्म स्पर्शी एवं सरल है। एक तपस्विनी के रूप में वह यहाँ दिखाई दे रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मोल्ल ही सीता के साथ तादात्म्य स्थापित करके अपने इष्ट देव की प्राप्ति के लिए कठोर तपस्या कर रही है। लगभग इसी से मिलता जुलता वर्णन तुलसी ने भी किया है :

कृस तनु सीस जटा एक बेनी ।  
 जपति हृदय रघुपरि गुन श्रेनी ।

यथपि उक्त दो वर्णनों में सादृश्यता है फिर भी एक स्पष्ट अंतर भी देखा जा सकता है। मोल्ल रामायण में सीता अपनी विरह स्थिति का वर्णन स्वयं हनुमान के सामने करती है। मानस में इस प्रकार की बात नहीं है।

तुलसी का शृंगार रस निरूपण मानस में सीमा बद्ध होने पर भी उस में भावव्यंजना का सूक्ष्म रूप है। मोल्ल रामायण

में भी सक्षम भाव व्यंजना है और साथ ही शृंगारिक ऐन्ड्रियता का संस्पर्श भी है।

६ करुण रस : दशरथ मरण और लक्ष्मण मूर्छा के प्रसंग इस दृष्टि विशेष से उल्लेखनीय है। मार्मिक प्रसंगों की परिधि में ही कवि के रस कौशल की परीक्षा हुई है।

मोल्ल रामायण में दशरथ मरण एक ही छन्द में वर्णित है साथ ही इसमें अंध तापम शाप का प्रसंग नहीं है। लेकिन मानस में अंध तापस का प्रसंग संक्षिप्त रूप से वर्णित है।

मानस में लक्ष्मण मूर्छा के प्रसंग में करुण रस का मार्मिक वर्णन है। शोक के आवेग के मर्यादा का बन्धन छिन्न भिन्न ही जाता है। इसी लिए मानस में राम को अपने सत्य पालन पर भी क्षोभ हो जाता है। यह क्षोभ हृदय की दुर्बलता नहीं है लेकिन उद्वेग का उत्पोड़न है।

मोल्ल रामायण के इस प्रसंग में राम लक्ष्मण के पराक्रम स्मरण करके खेद प्रकट करते हैं। राम के विलाप का इतना मर्मस्पर्शी वर्णन प्रस्तुत किया गया है कि हनुमान भी अपने स्वामी के दुःख में भाग लेते हैं और हनुमान अपने करुणा परित हृदय का सच्चा परिचय देते हैं। मोल्ल भी करुण का श्रेष्ठ चित्रण करती है। राम भी लक्ष्मण के दुःख के माने आहृत दिखाई पड़ते हैं और उन्हें विलाप करने का भी सामर्थ्य नहीं है।

इस प्रसंग में मानस के तुल्य मार्मिकता का अभाव मोल्ल रामायण में दीखता है। इसी प्रकार राम के वन गमन प्रसंग में जनता की प्रतिक्रिया भी करुण रस का प्रतीक है।

७ भक्ति रस : मानस में राम के निर्गुणहृष्टल रूप तथा विष्णु रूप का भी सविस्तार निरूपण हुआ है। राम के दोनों रूपों के सामंजस्य के कारण वे आरद्ध देव बने हैं। मोल्ल रामायण में देवताओं को आश्वामन देते समय और सीता के पातिव्रत्य का उल्लेख राम से करते समय विष्णु का साक्षात्कार हुआ है। मानस के अनुसार वे विराट विश्वव्यापक और देवतायों से कोटि गुणित बलशाली बतलाये गये हैं। मोल्ल रामायण में केवल विष्णु रूप का ही वर्णन है।

राम का ईश्वर रूप भक्ति रस का आलंबन है। मानस के सभी पात्र राम से अनपायनी भक्ति की कामना करते हैं। दशरथ जनक, वशिष्ठ आदि गुरुजन भी इसी दृष्टिकोण से राम की वंदना करते हैं। भरत तो भक्ति का साकार रूप ही है, लक्ष्मण भी भक्ति से अभिक प्रभावित है। जटायु जैसे पक्षी भी राम की कृपा से राहुप्य मुक्ति प्राप्त करते हैं। मुख्य कथा के अलावा ऋमिका और उपसंहार भाग में भक्ति रस का विस्तार वर्णन मिलता है। परब्रह्म स्वरूप राम को लोग ऋम से रशरथ सुत राम न समझ ले इस दृष्टि से तुलसी बीच बीच में अपनी और भक्ति के पोषक उपकरणों का विस्तृत वर्णन करते हुए चलते हैं। मोल्ल रामायण के राम प्रमुख रूप से मानव के

रूप में हैं। फिर भी यद्य तद्व उनके विष्णु रूप के संबन्ध में उल्लेख हुआ है केवट अन्योक्ति और वचन वक्रता से भक्ति और कर्म का समन्वय स्थापित करता है—

मुडिगोनि रामु पादमुलु सोकिन धूलि वहिंचि रायि ये  
र्पड नोक कांत ययेनट पत्मुग नीतनि पाद रेणु वि  
ययेड वडि नोड सोक निदि येमगुनो यनि संशयात्मुडे  
कडिगे गुहुंडु रामपदकंजयुगंबु भयम्मु पेंपुनन् ,।

राम के चरण रज स्पर्श से एक शिला सुन्दरी के रूप में परित्ति हुई है। उसकी पाद रेणु यदि संयोग से मेरी नाव में लग जाय तो पता नहीं यह कौन सा रूप धारण करेगा। इस प्रकार संशय से प्रेरित होकर गुह ने राम के चरण कमलों को भयां-दोलित मन से धो डाला।

यह सुन्दर भाव मानस के इस छन्द से बहुत साम्य रखता है—

मांगी नाव न केवट आना। बहइ तुम्हार मरमु मै जाना।  
चरन कमल रज कहुं संवु कहइ। मानुष करनि पूरी कछ अहइ।  
छुअत सिला मई नारी सुहाइ। पाहन ते न काठ कठिनाई।  
छरणिउव मुनि धरिणी होइ जाई। बाट परह मोरि नाव  
उडाई।

कथा के आग्रह के कारण यद्य तद्व भक्ति की कुछ छोटे अवश्य मिल जाती है। इस अधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि

मोल्ल रामायण में भक्ति रस का प्रवाह मानस के समान है। मानस के राम भक्ति के जैसे सुदृढ़ आलंबन हो सकते हैं वैसे मोल्ल के राम कदाचित नहीं हो सकते। क्योंकि राम के प्रति उनके दृष्टिकोण में ही भारी अंतर है। जटायु राम के हाथों से अग्नि संस्कार पा कर मुक्ति ग्रहण करता है। हनुमान दास्य भक्ति का पुंजीभूत साक्षात्कार है और वे अपने को राम का सेवक कहने में सुख अनुभव करते हैं। विराथ, शबरी आदि भी भक्ति से भगवान का सान्निध्य प्राप्त करते हैं।

### ३-१६ निष्कर्ष :

मानस में विभिन्न रसों को उचित स्थान देते हुए भी तुलसी ने वीर रस को प्रमुख रूप से प्रतिष्ठित किया है। वीर रस का स्थायी भाव उत्साह विविध रूपों में साक्षात्कार पाया है। मोल्ल रामायण में युद्धोत्साह को ही उत्साह मानकर सीमित क्षेत्र में अधिक प्रयत्न शील बनाया गया हे।

## कला पक्ष

४-१ प्रस्तावना :

मोत्तु रामायण और मानस में भावपक्ष और कलापक्ष दोनों समानरूप में विद्यमान हैं। कला पक्ष के अंतर्गत अलंकार, शैली, काव्यरूप, छन्द और भाषा आ जाती हैं। इन सब का विवेचन आगे किया जा रहा है।

४-२ अलंकार :

आचार्य कवि और कवि अलंकारों की स्थिर धर्मिता को स्वीकार करते हैं। जिस प्रकार कालिदास की शकुंतला वल्कल के साथ भी अधिक मनोज्ञ लगती है उसी प्रकार भाव प्रधान वर्णन के लिए अलंकारों का विशेष महत्व नहीं रह जाता। आश्चर्य-चूडामणि के अनुसार स्वाभाविक शोभा से युक्त पदार्थों के लिए संस्कार की आवश्यकता नहीं रह जाती।

अभिव्यक्ति की विभिन्नता के कारण अलंकार भी अनेक होते हैं। अलंकार का उपयोग भाव को सजाना, वर्ण वस्तु के रूप, गुण कर्म को अधिकाधिक तीव्र अनुभव कराने में होता है। तुलसी ने भी इसी दृष्टि से मानस के विभिन्न स्थलों पर

अलंकारों को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। मोल्ल ने भी अपनी कृति में अलंकारों का प्रयोग किया है। प्रकृति वर्णन, सौंदर्य वर्णन और प्रसंगों की प्रभावित्पादिकता के लिए उत्होंने अलंकारों की सहायता ली है। अलंकारों के प्रयोग में तुलसी की भाँति मोल्ल को भी विशेष सफलता मिली।

### शब्दालंकार :

शब्द और अर्थ दोनों से संबद्ध होने के कारण अलंकार भी दो प्रकार के हैं। शब्दालंकारों में शब्दों का परिवर्तन नहीं लेकिन अर्थालंकारों में शब्दों का परिवर्तन किया जाता है। पर अर्थ हमेशा अक्षुण्ण होता है। शब्दालंकारों में अनुप्रास, यमक, इलेष और वक्रोक्ति प्रमुख हैं। मानस और मोल्ल रामायण दोनों में इन अलंकारों का प्रयोग हुआ है। मोल्ल रामायण में के शब्दालंकारों की विशेषता यह है कि उस में शब्द वैचित्र्य का प्रदर्शन किया गया है। तेलुगु साहित्य के प्रमुख कवि शब्द वैचित्र्य के निरूपण में अपना गौरव और पांडित्य का अनुभव करते हैं। वास्तव में मोल्ल को काव्यालंकार, छन्ध आदि का ज्ञान नहीं है। फिर भी श्रीकण्ठ मल्लेश्वर की कृपा से कविता करना सीख ली है।

**अर्थालंकार :** कवि के काव्य कौशल का मूल्यांकन अर्थालंकारों के ऊपर ही आधारित होता है। इन अलंकारों में उपमा,

उत्प्रेक्षा और रूपक अत्यंत महत्वपूर्ण अलंकार है। मोल्ल रामायण में इन के अतिरिक्त परिसंबंध्या, अर्थन्तर न्यास आंदि अलंकारों का भी प्रयोग हुआ है।

१ उपमा : तुलसी ने इस क्षेत्र में चमत्कार पूर्ण उपमान संगृहीत किये हैं। राम चरित और मानस के रूपकों में उन्होंने उपमान को वीचि विलास के समान मनोरम माना है और सीता मौद्दीर्यवर्णन सब उपमाओं को जुठारी और लघु बताया है।

लुप्तोपमा : नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन वारिज नयन।

पूर्णोपमा : माधु चर्णि सुभ सरिस कपासू।

मालोपमा : बदउ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइ पर दोषा। पुनि प्रनवऊ पृथुराज समाना। पर अध मुनइ सहस दसकाना। बहुरि सक्र सम बिनवऊ ते ही। संतत सुरानीक हित जैही। वचन वज्र जेहि सदा पियारा। सहस नयन पर दोष निहारा।

मोल्ल रामायण में लुप्तोदमा का उल्लेख नहीं है लेकिन पूर्णोपमा और मालोपमा का उल्लेख है।

पूर्णोपमा : मेलिमि संध्या रागमु

त्रलिन चीकटियु गलिसि वरुणुनि वंकन्

नीलमु केंपुनु नतिकिन  
पोलिक जूपट्टे नट नमोमणि तलगन् ।

पश्चिम दिशा में सांध्य राग अद्भार दोनों अंगूठी में जड़े गये  
नील और लाल मणियों के जैसा है।

मालोपमा : राजुलु कांतियंदु रतिराजुलु रूपमुनंदु वाहिनी  
राजुलु दानमंदु मृगराजुलु विक्रम केलि यंदु गो  
राजुलु भोगमंदु दिनराजुलु संतत तेज मंदु रा  
राजुलु मानमंदु नगरम्मुन राजकुमारु लंदरुन् ।

साकेत नगर के राजकुमार प्रकाश में राजाओं के जैसे आकार  
में मन्मथ के जैसे, दान गुणों में समुद्र के जैसे, पराक्रम में सिंह  
राज के जैसे, भोग में कृष्ण के जैसे प्रकरता में सूर्य के जैसे और  
अभिमान में दुर्योदन के जैसे हैं।

मानस में राम के वनवास प्रसंग में राम सीता और लक्ष्मण  
के लिए ब्रह्म, माया और जीव, मदन, रति और मधु अथवा  
बध्नि, रोहिणी ओं बुध के सार्थक उपमानों का प्रयोग हुआ है।  
मानस में जटायु रावण, सीता की उपमा व्याघ्र और मृग से देता  
है। मोल्ल रामायण में शूर्पणखा रावण को सीता का नखशिख  
वर्णन सुनाते समय अनेक उपमानों का प्रयोग करती है। इस  
प्रसंग में नासिका के लिए पक्षी की चोंच, भृकुटी के लिए काम  
बाण, वदन के लिए मुकुर और स्तनों के लिए सुवर्ण कलश की  
उपमाएं दी गयी हैं।

२ उत्प्रेक्षा : सीता के प्रथम दर्थन के बाद राम की प्रति-क्रिया उत्प्रेक्षालंकारों में व्यक्त होती है।

कैकेयी वर याचना में कृद्य कैकेयी के लिए मानस में सर्गेष भृजंग भासिनी रोष तलवारी, रोष तरंगिणी कहा गया है।

मोल्ल रामायण के अयोध्या काण्ड में चन्द्रोदय का वर्णन सुन्दर उत्प्रेक्षा में किया गया है। चस्त्र की चन्द्रिकाएं देखकर समुद्र में लहरें उठ रही हैं मानो पुत्रोत्पत्ति के शुभ समय में समुद्र अपना संतोष व्यक्त कर रहा हो।

कोडुकुदर्यिचे नंचलरि कोरि सुधांबुधि मिन्नु मुट्टि य  
पुडु जन भूल्ल गप्पे नन बूर्णत नोंदेनु सांड चन्द्रिकल  
पुडमिकि वाल नेल्लि गति बोल्पेस लारग जदू डोप्पे न  
यूयुडु पति मेनि मच्च युनु नोप्पे पयोनिधि पद्नाभुडे।

३ रूपक :

वास्तव में तुलसी रूपकों के राज हैं। लंबे लंबे सांग रूपकों का सफल निर्वाह मानस में है। राम चरित और मानस, रामकथा और सरय, विज्ञान और दीप, रामभक्ति और चितामणि तथा मानसिक भाव और रोग के सुवीर्ध रूपक प्रसिद्ध हैं।

मोल्ल रामायण में सांग रूपक या तुलसी के जैसे रूपक

माला नहीं है। मोल्ल रामायण में आनन्द और समुद्र विलास युक्त सुवर्ण कलश और सरन, चन्द्र और रामचन्द्र, विरह और अग्नि, हनुमान और कुंजर के बीच सुन्दर रूपक बान्धा गया है। बालकाण्ड के साकेत पुर के महलों के फरोके और विलासिनी स्त्रियों के अंचल में सुन्दर रूपक बांधा गया है।

कनक विलास कुंभमुलु गब्रिब कुबंबुलु लील निवके  
तनमुलु पैट कोंगुल विधंबुन ग्राल गवाक्षमुसहिन  
गनुगव यट्टल पोल्पे सगगा भुवि भोगुलु मेच्च भोगि  
जनमुल रीति जेल्व मरु सोंध निकायमु पायकम्पुरिन्।

### अतिशयोक्ति :

सीता सौंदर्य वर्णन में तुलसी ने इस अलंकार का उत्कृष्ट प्रयोग किया है। सीता वर्णन का यह प्रसंग चमत्कार से युक्त है।

सिय सोभा नहिं जाह बखानी। जगदंबिका रूप गुण खानी।  
जो छवि सुधा पयोनिधि होइ। परमरूपमय कच्छपु सोई।  
सोभा रजु मन्दरु सिंगा। मथै पानि पंकज निज मारु।

एहि विधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।

तदपि सकोच्च समेत कवि कहहि सीय तम तुल ॥

मोल्ल रामायण में शूर्पणखा के द्वारा किया गया सीता का नखशिख वर्णन कामुक रावण के द्वारा किया गया सोता का वर्णन आदि प्रसंगों में अतिशयोक्ति अलंकार का प्रयोग हुआ है।

## ५ स्मरण :

सुग्रीव के मिलने के पश्चात उससे सीता का पट प्राप्त करके राम को उसके स्मरण से बड़ा शोक होता है। मोल्ल रामायण के इसी प्रसंग में राम संयोग समय में सीता के साथ की गयी रति क्रीड़ाओं का स्मरण करके वियोग को प्रकट करते हैं।

पलुमारु नीहस्त पल्लवंबुल चेत्र नलिवेणि । ना ताप मामवेल  
 नलिनाक्षि परिरंभण क्रीड देलचु नी मदि नोप्पि ना नोप्पि मान्य वेल  
 चेलिय । योष्टामृत सेवकै नीयलक वडि दप्पि ना दप्पि गडपवेल।  
 माम दात्रानल परिताप मुडुपु नी तनुवु नातनवुन बेनचवेल  
 यनुचु सीत बिलुचु नंदंद परिकिंचु दिक्कुलालकिंजु निकिकचुचु  
 दशरथात्मजुङ्डु तन्नु दा मरचुचु बयलु कौगलिचु पलुवासिंचु ॥

(हे अणिवेणी, तुम अपने कर पल्लवों से मेरा स्पर्श करके ताप क्यों नहीं ढूर करती, हे नलिनाक्षि अपना आलिंगन देकर मेरी व्यधा क्यों नहीं मिटाती? हे सखी अपना अधरामृत मिलाकर मेरी प्यास क्यों नहीं बुफाती? हे हे भामा, अपना शरीर मेरे शरीर से लिपटाकर मेरा संताप क्यों नहीं शीतल करती। यों सीता को बुलाते हुए इधर उधर देखते हुए अपने आप को भुलकर सून्य का आलिंगन करते और प्रलाप करते थे।)

६ संदेह : वन में राम लक्ष्मण को देखकर हनुमान के संदेह का मानस में बड़ा सुन्दर निरूपण मिलता है।

मोल्ल रामायण में शूर्पणखा रावण के सामने सीता का वर्णन करते समय संदेहालंकार का सुन्दर निरूपण करती है। शूर्पणखा कहती है कि सीता की आँखें कोक नद हैं या काम बाण। इस दात के निर्णय करने में स्वयं सीता ही संदेह व्यक्त करती है। उनकी वाणी शुक की वाणी के समान है या किन्तरों की वाणी है वह भी संदेहास्पद है। उनका मुख चन्द्रमा जैसा है या मुकुर वह भी सीता निर्णय नहीं कर पाती, उनके स्तन चक्रवाक हैं या सुवर्ण कलश वह भी सीता नहीं जानती। उनके बाल नील मणियों का समूह है या अलियों का झुंड वह भी संदेह की वस्तु है। उनके नितंब कदली तरु या मदन का निवास स्थान वह भी संदेह उत्पन्न करता है। इस प्रकार देखनेवालों के मन में संदेह को जन्म देती हुई सीता शोभा मंडित है।

### ७ अपह्रनुनि :

मानस के समुद्र वर्णन में हेत्वपह्रुति के कारण अधिक चमत्कार दिखाई पड़ता है।

प्रभु प्रताप बडबानल मारी। सोषेउ प्रधम पयोनिधि बारी।  
तव रिपु नारी रुदन जलधारा। मरेऊ बहोरी मयउ तर्हि खारा॥।  
मोल्ल रामायण में इस अलंकार का प्रयोग नहीं प्रआ।

### ८ दीपक :

शूर्पणखा रावण संवाद में इस अलंकाह का सुन्दर निरूपण

हुआ हैं। यहां तुलसी तुलसी ने वक्ता की अपेक्षा अपने उद्देश्य का अधिक ध्यान रखते हुए सत्कर्म का भी संबन्ध निर्वाहि किया है—

राजनीति बिनु धन बिन धर्मा । हरिहि समर्पे बिनु सत्कर्मा ।  
विद्या बिनु विवेक उपजायें । श्रम फल पढे किये अरु पायें ॥

मोल्ल रामायण के बाल काण्ड में राजा दशरथ के राज्य पालन प्रयंग में इस अलंकार का प्रयोग हुआ है। राजा दशरथ के माध्यम से इस काव्य में कवयिकी सच्चे के लक्षणों का विवरण देती है। यहां राजा के व्यस्थितत्व की अपेक्षा उत्तम शासक के लक्षणों के प्रति मोल्ल के दृष्टिकोण का परिचय मिलता है।

### ३. व्यतिरेक :

मानस के सीता सौंदर्य वर्णन में इस अलंकार का बड़ा समर्थ प्रयोग दृष्टिगोचर होता है। वहां सीता को चन्द्रमा और लक्ष्मी से भी अधिक उत्कृष्ट बताया गया है।—

— — — । सीय बदन मम हिमकर नाहीं ।  
जनम सिधु मुनि बंधु विषु दिन मलिन सकलंक ।  
सिय मुख समता पाव किकि चंदु बापुरो रंक ॥

मोल्ल रामायण में रावण सीता का वर्णन करते समय इस अलंकार का वर्णन हुआ है।

सुरकांतल सरिराह यक्ष सतुलुन् सूर्टिगा राह कि  
 न्नर भामल सरिराह सिद्धवनितल न्यायंबुगा पोल रा  
 गरुड स्वील समान लें तो चवुकल गंधर्व लोलाक्षुलुन्  
 मरि येरी निनु जेपिप्प चेप्प दरुणुल् मत्तेभ कुमस्तनी।

(हाथियों के कुंभ स्तल के जैसे स्तन वाली सीता। मुर लोंक  
 की बालाएं, यक्षों की पत्नियां किन्नरों की स्त्रिया सिद्धों की  
 वनिताएं, गरुड जाति की मुन्दरियां, गंधर्म जाति की युवतिया  
 वे सब सौंदये की निधि मानी जाती हैं। लेकिन यह दोष युक्त  
 कल्पना है क्योंकि इन सब के पहले तुम्हार नाम आना  
 चाहिए।)

#### १० सहोकित :

राम धनुर्भग के प्रकरण में इस अलंकार का उदाहरण  
 प्राप्त होता है—

सब कर संसउ अरु अग्यान् । मन्द मही पन्ह कर अभिमान् ।  
 भृगुपति केरि गरब गरुबाई । सुरमुनि नरन्ह केरि कदराई ।

मोल्ल रामायण में इस अलंकार का प्रयोग नहीं हुआ है।

#### ११ परिकर :

इस अलंकार में सामिप्राय विशेषणों की अपेक्षा होती है।  
 मुनत श्रवन वारिधि बंवाना । दस मुख कोलि उठा अकुलाना।

मोल्ल रामायण में विभीषण जब राम की शरण में आते हैं तब राम की स्तुति अनेक नामों से करते हैं। इस छन्द में राम के वंश, पराक्रम लोक रक्षक और सर्व लोक वंदित विशेषणों का उल्लेख हुआ है।

भानु कुलोत्तंस वंदितामर लोक जनकी नायक शरणु शरणु  
ताटका प्राण विदारण रघुराम सकल लोकाधार शरणु शरणु  
दिवकु नीवनि वच्चितिनि दीन मंदार परम पुरुष राम शरणु  
शरणु

मात्रु पित्रादुल माडिक संरक्षिचु सर्वलोक स्तुत्य शरणु शरणु  
रानु वेरचि नाड रक्षिचु रक्षिचु, मिपुडु नाकु नभय मिम्मि  
इम्मि

चूहु चूहु निन्नु जोच्चिति शरणम्मु कावु कावु नन्नु करुण तोड।

### १२ परिकांकुर :

सीता कृत अशोक प्रार्थना में अशोक शब्द के प्रयोग में इस मार्मिकता स्पष्ट है—

सुनहु विनय मम विटप असोका। सत्य नाम करु हरु मम सोका।

मोल्ल रामायण से इस तरह का अलंकार प्रयोग नहीं है।

### १३ अप्रस्तुत प्रशंसा :

रावण के प्रति सीता की इस भर्त्सना में इस अलंकार का प्रयोग हुआ है।

मुनु दसमुख खयोत प्रकासा । कबहुकि नलिनी करह विकासा ।  
मोल्ल रामायण में शूर्पणखा से किया गया सीता वर्णन के प्रसंग  
में इस अलंकार का प्रयोग हुआ है ।

१४ परिमंख्या : राम राज्य वर्णन में इस का प्रचृत्र प्रयोग  
मिलता है ।

दण्ड जतिन कर भेड जहां नर्तक नृत्य समाज ।  
जीतहु मनहि सूनिक अस रामचन्द्र के राज ॥

मोल्ल रामायण के बालकाण्ड में साकेत नगर वासियों के जन  
जीवन और युद्ध काण्ड में राम राज्य की कल्पना प्रसंग में इस  
अलंकार का प्रयोग हुआ है ।

कुटिलत नदुलंदु गुतिलमुलंदु बोंकु तूदमुलंदु बूतुलंदु  
लेमि वैरुलयंदु ले नमल नडुवलंदु भंग मंबुदुलंदु बरुल बंदु  
गोपंबु खलुलंदु कूर वर्तनुलंदु वडकु वीणलयंदु व्यसनु संदु  
बंधमु रतु लंदु वट शिरोजमुलंदु मोहनु धनमंदु मुदितलदु  
चिंत कवुलंदु तपसुल चित्तमंदु वर्ण मितिंबु चित्तरुवंदु यवनु  
लंदुन ने कानि योंडेंड चेंदकुंडु लील धर येले रामभूपाल वरुदु।

(राम के शासन काल में राज्य में सुसंपन्नता थी । कुटिलता  
सिर्फ नधियों और केशों में है । अभाव सिर्फ वैरियों के हृदय में  
और नारि की कटि में है । क्रोध केवल खल और कुटिल वर्तन-  
वालों में है । फँकृति या स्पंदन वीणा और पियक्कडों में ही है ।

बंधन तो केवल रसिकता और केशों की चोटी में है। मोह केवल धन और वनिताओं में है। एकाग्रता मुनियों और कवियों के मन में है। वर्णों का संक्रमण तस्वीरों और यवन जाति के लोगों में है। इस प्रकार रामचन्द्र जी के राज्य में जनता की स्थिति थी।)

#### १५ आर्ग :

तुलसी ने यहां राम के मुह से अपने भक्त की सार्वाधिक प्रियता प्रतिप्रादित की हैं।

सब मम प्रिय सब मम उपजाए। सबते अधिक मनुज मोहि भाए।  
तिन्ह मह द्विज द्विज मह श्रुति धारी। तिन्ह मह निगम धर्म अनुसारी।

मोल्ल रामायण में इस अलंकार का प्रयोग नहीं हुआ है।

#### १६ भाव शब्दलता :

इस में अनेक प्रकार के भाव परस्पर मिश्रत होकर किसी एक मुख्य भाव के अंगीभूत होते जाते हैं।

कह त्रिजटा मुनु राजकुमारी। उर सर लागत मरह सुरारी।  
प्रभु ताते उर हतइ न तेही। सहि के हृदय बसति वैदेही।

यहां मति वितर्क, असूया, स्मृति और चिंता आदि भाव सीता के प्रति विटजा है के शब्दों भाव के अंग हो गये हैं। मोल्ल रामायण में यह अलंकार नहीं है।

### निष्कर्ष :

तुलसी के अलंकारों में तत्सम वर्णों की बहुलता है। इस का कारण यह है कि तुलसी ने संस्कृत काव्यशास्त्रों के कुछ जुने हुए अलंकारों को ही अपनाकर उन्होंने को आवश्यक महत्व दिया है। मोल्ल ने भी वाल्मीकि रामायण से अधिक प्रभावित होने पर भी तुलसी के जैसे चुने हुए अलंकारों को ही अपनायी है। मोल्ल और तुलसी दोनों की मान्यता ऐसी प्रतीत होती है कि अधिक अलंकृत काव्य जन साधारण के लिए न तो सुगम होती है और न प्रशंसनीय। इसी लिए अपने काव्यों में दोनों ने प्रसंगानुकूल और भावोत्कर्षक स्थलों में ही औचित्य पूर्ण ढंग से अलंकारों का प्रयोग किया है।

### ४-३ शैली :

मानस और मोल्ल रामायण की शैलियों में अंतर है। व्यक्तित्व की आकृति, प्रकृति, प्रतिभा, कल्पना, निरीक्षण शक्ति विवेचन चातुरी, व्यवहार कुशलता, प्रेरणा पटुता और प्रभाव शीलता आदि का प्रतिबिंब कृति पर पड़े बिना नहीं रहता।

### ४-३१ कृति के अनिवार्य तत्व और साहित्य में उसका स्पष्टीकरण :

हरेक काव्य के दो अनिवार्य तत्व होते हैं। अनुभूति और अभिव्यक्ति। विभिन्न पात्र और विभिन्न शैलियों के अनुसार

कवि की शैली में भी विभिन्नता होती है। साहित्यकार शैली की विविधता भाषा के द्वारा व्यक्त करता है क्योंकि भाषा अभिव्यक्ति का साधन है।

तुलसी का ध्यानआरंभ से ही शैली के तत्वों की और था इस लिए मानस के आरंभ में ही वाणी विनायक वंदना में वार्ण, अर्थ, रस तथा छन्द का अभिप्राय के साथ स्मरण करना और अपनी भाषा के अतिमुँजुल रूप की घोषणा कर ना उनकी सचेष्टता को व्यक्त करती है। मोल्ल रामायण की पीठिका में भी मोल्ल इस विषय का संकेत देती है। उनके अनुसार स्वयं रामचन्द्र जी उनके मुख से रामकथा कहलवाते हैं जो भक्ति और मुक्ति की साधना है। इसीलिए अन्य कवियों से प्रार्थना करते हैं कि अगर कृति में गलतियां हो जाय तो उनकी क्षमा करें। यह मोल्ल की शैलीगत विशेषता है जिसका प्रस्फुटन कृति के आरंभ में ही व्यक्त होता है।

अबतार जन्मान्तर वर्णन, श्रोता वक्ता की घरंपरा, अलौकिक कार्यों का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन, कथा का महात्म्य आदि को तुलसी ने ग्रहण किया है। मोल्ल से वंदनीय कवियों में वाल्मीकि, भवभूति कालिदास, रंगनाथ, तिककना आदि रामकाव्य प्रणेता हैं। तुलसी के मानस के जैसे मोल्ल रामायण में श्रोता वक्ता शैली का पालन हुआ है। मोल्ल रामायण के श्रोता वाल्मीकि हैं और वक्ता नारद महर्षि।

निगमों के आधार पर तुलसी ने विभिन्न स्थितियों तकों और दार्शनिक तत्वों का भी प्रतिपादन किया है। वाल्मीकि रामायण से तुलसी ने मूल कथा के विविध वर्णन और आध्यात्म रामायण से भक्ति और दशैन संबन्धों अंगों की स्वीकार किया है। इसी प्रकार मोल्ल पर भी वाल्मीकि रामायण का प्रभाव है। केवट प्रसंग में जो भक्ति और धर्म का समन्वय है उसका आधार आध्यात्मक रामायण ही है। तुलसी पर गीता का भी प्रभाव है। लेकिन मोल्ल इस ग्रन्थ से पूर्णतः अप्रभावित है। मोल्ल रामालण में औपचारिकता के अनुसार आरंभ में विभिन्न देवताओं की वंदना के साथ संक्षिप्त काव्य लिखने में कवयिकी का उद्देश्य पूर्व कवियों की वंदना आदि का स्पष्ट उल्लेख है।

तुलसी प्रसन्न राघव हनुमन्नाटक और महानाटक से अधिक प्रभावित हैं। पुष्पवाटिका मिलन, परशुराम प्रसंग, सीता रावण संवाद और अंगद रावण संवाद आदि प्रसंगों में उपर्यूक्त काव्यों का प्रभाव अधिक दृष्टिगोचर होता है। मोल्ल रामायण में इन काव्यों का प्रभाव नहीं है।

मानस में नीति वर्णन का भी प्रसग है। तुलसी भृत्यहरि शतक, चाणक्य नीति, शुक्रनीति हितोपदेश, पंचतंत्र आदि में प्रभाव ग्रहण करते हैं। मोल्ल रामायण में भी विभीषण रावण को धर्म और नीति का उपदेश देता है और युद्ध ने उत्पन्न होने: वाले नष्टों की लंबी सूची देता है। मानस में पात्रों का चरित्र

महज और स्वाभाविक है। देवता और राक्षस, मुनि और नागरिक, राजा और सेवक विद्वान् और अशिक्षित, राणी और दासी, सभी पात्रों के चिकित्सा में स्वाभाविकता विद्यमान है। पात्रों की वाणी की उन्होंने के मूल स्वरों में कवि प्रस्तुत करते हैं। मोल्ल की इस मौलिकता का कारण पावानुकूल भाषा। मानस के दणरथ वशिष्ठ संवाद गुरुता और विद्वत्ता का प्रतीक है।

जै गुरु चरन रेनु सिर धरहि। ते जनु सकल विभव बस करहि।  
इसी प्रकार ग्रामीण लोगों में ग्राल्यता स्पष्ट है।

तरनिउ मुनि रनि होइ जाई। बाट परह पोरि नाव उडाई।  
यहां धरनि, बाट, परई, उडाई, और कला आदि शब्द विचारणों हैं।

मोल्ल रामायण के अनेक छन्दों में तन्सम शब्दों की बहुलता है। मोल्ल की इस रचना का उद्देश्य राम कथा को सामान्य जनता की समझ में लाना है ताकि सामान्य व्यक्ति आसानी से उसे समझ सकें। रावन सीता के सामने राम की हसी उडाता है और उस प्रलंग के छन्द दर्शनों हैं—

जडलु धरियिचि तपसुल चन्दमुननु  
दम्मुहुनु दानु धोर दृग्ममुलंदु  
कूरगायलु गूडुगा गुडुचुनटिट  
रामु डेरीति लंकु रागलंडु।

इस छन्द में जडलु, चंदमु, तम्मुडु, तानु, कूरगायलु, कूडु  
कुडुचुनटिट आदि बोलचाल की भाषा के शब्द हैं। इन्हीं शब्दों  
की बहुतता के कारण सामान्य जनता इस काव्य को आसानी  
समझ सकती है।

मानस के में पुष्पवाटिका मिलन, राम विवाह और राज्या-  
भिषेक आदि सुख मूलक प्रसंग हैं तथा रामनिर्वासन, दशरथ  
मरण, सीताहरण और लक्ष्मण मूर्छा आदि दुःख मूलक प्रसंग।  
मोल्ल रामायण में भी इसी प्रवृत्ति के अनुसार सुख दुःखों का  
व्यक्तीकरण हुआ है। भूर्णेखा के द्वारा रावण के सामने की  
गयी सीता का नखशिख वर्णन सीता के वियोग में राम का  
विलाप, किञ्चिकथा काण्ड के वर्षा ऋतु वर्णन में राम का खेद  
आदि प्रसंगों में शुद्ध लौकिक शृंगार है।

तुलसी ने मानस में रसनिष्पत्ति की प्रक्रिया को दो क्रमिक  
स्थितियों में वर्णित किया है। प्रथम स्थिति में ध्यान रस होना  
है और द्वितीय स्थिति में वर्गेन रस। तुलसी ने ध्यान रस का  
निरूपण इस प्रकार हैं किया है—

प्रश्न उमा के सहज सुहाई। छल विहीन मुनि शिव मन भाई।

यह स्थिति दो क्षणों तक रहती है और उसमें आश्रय तो मौन  
रहता है। सहचर्य और साम्य की कल्पनाओं और उद्भावनाओं  
की अभिव्यक्ति इसमें होती है। इस स्थिति को अलंकार करते हैं।

इन अलंकारों में माधुर्ये गुणों की योजना है और यह ध्वन्यात्मक रूप धारण करती है —

कंकन किंकिन नूपुर धुनि मुनि । कहत लखन सन राम हृदय  
गुनि ।

मानस में प्रबन्धात्मकता की सफल योजना के कारण दोहापाई शैली की प्रमुकता है। प्रबन्ध के लिए अपेक्षित छन्द छम्पय और दोहा-चौपाई है। इस तरह छन्द गत शैली के द्वारा भी तुलसी ने प्रबन्धतत्व का निर्वाह किया है। मोल्ल रामायण महाकाव्य नहीं है, साथ ही तेलुगु में लिखे गये महाकाव्यों में एक ही छन्द का निर्वाह का निर्वाह नहीं हुआ। इसी लिए महाकाव्य या संक्षिप्तकाव्य जो भी हो छन्दों की बहुलता अत्यंत आवश्यक है। इसीलिए मोल्ल रामायण में मात्रिक छन्दोंका निर्वाह हुआ है।

#### ४-३२ निष्कर्ष :

मानस से तुलना करने पर हम इस निष्कर्ष पर ठहर सकते हैं कि मोल्ल रामायण में वस्तु और पात्र से अधिक रस की अनुकूलता को विशेष मान्यता दी गयी है: इस काव्य में वर्णनात्मकता की प्रधानता के कारण अलंकारिक शैसी को भी मान्यता मिल गयी है। मानस में उपर्यूक्त शैली के प्रभाव में काव्य कुछ दबा सा रह गया है। मानस में अतिमंजुलता के संपादन के लिए तुलसी ने विभिन्न शैलियों का समन्वय किया है।

लेकिन मानस के जैसे मोल्ल रामायण में शैलियों की बहुलता नहीं होने पर भी यथोचित स्थानों पर मौलिकता का समावेश हुआ है।

#### ४-४ काव्यरूप :

मोल्ल रायायण और मानस दो भिन्न प्रकार के काव्य हैं। मानस शास्त्रीय लक्षणों से युक्त महाकाव्य है और मोल्ल रामायण सामान्य जनता के लिए लिखा गया संक्षिप्त काव्य। फिर भी मोल्ल रामायण में महाकाव्यत्व को प्रकट करनेवाले लक्षणों की कभी नहीं हैं। सर्ग बन्ध की योजना में मानस और मोल्ल रामायण वाल्मीकि रामायण से अधिक प्रभावित है।

#### ४-४१ महाकाव्यत्व :

मानस और मोल्ल रामायण में इतिवृत्त का विभाजन किञ्चिक्धा का काण्ड तक एक ही तरह चलता है। लेकिन सुन्दर काण्ड के विभीषण की शरागति से लेकर सेतु बन्धन तक का प्रसंग तुलसी मानस में सुन्दर काण्ड के अंतर्गत ही लेते हैं। इसकी अपेक्षा यह प्रसंग मोल्ल रामायण के युद्धकाण्ड के अंतर्गत लिया गया है। मोल्ल के राम सामान्य मानव के व्यापारों का भी समन्वय हुआ है।

इतिवृत्त प्रसिद्ध और पौराणिक होने पर मोल्ल रामायण धर्मार्थकाममोक्षों का आद्योपान्त निरूपण मानस के जैसे नहीं हो

पाया। मोल्ल रामायण में केवल कृतु, प्रकृति, संयोग वियोग, युद्ध आदि प्रसंगों का विशेष वर्णन है। दोनों काव्यों का नाम-करण राम के नाम पर ही हुआ है।

डा. श्रीकृष्णलाल के अनुसार मानस एक पुराण है और काव्यात्मकता भी अतः उसे पुराण काव्य कह सकते हैं। शुक्ल जी के विचार से मानस एक चरित काव्य है हिन्दी साहित्य में चरित काव्य बहुत थोड़े हैं। मानस के सब्जेक्टिव और अब्जेक्टिव रूपों पर निर्णय देते हुए शुक्लजी कहते हैं कि मानस के संबन्ध में यह प्रश्न नहीं उठता है क्योंकि वह एक प्रबन्ध काव्य या महाकाव्य है।

शंभुनाथ सिंह के अनुसार मानस में शास्त्रीय महाकाव्य और चरित काव्य दोनों के लक्षणों का समन्वय हुआ है। शास्त्रीय महाकाव्य के अनुसार घटनाओं का निर्वाह हुआ है। डा. राजपति दीक्षित के अनुसार मानस एपिक है। मानस महाकाव्य के प्रायः सभी लक्षणों से संपन्न है। उसको पाश्चत्य 'एपिक' के चश्में से देखकर भी श्लाघ्य भी कहना होगा। एपिक के दोनों दोनों की विशेषताएँ मानस में वर्तमान हैं। मानस से महाकाव्यत्म का निरूपण जिस रूप में हुआ है उस रूप में मोल्ल रामायण का निरूपण नहीं किया जा सकता। विदानों की फुकाव जिस प्रकार मानस की और है उस प्रकार मोल्ल रामायण।

चरित्र चिप्रण की दृष्टि से भी मानस कई गुने श्रेष्ठ माना

जाता है। राम धीरदात्त नायक है फिर भी उसमें उनगुणों के अतिरिक्त अन्य गुणों का भी समावेश हुआ है। पर मोल्ल रामायण के राम, सीता, हनुमान आदि पात्रों में देवत्व का रूप दिखाई नहीं पड़ता।

मानस में पुराणों एवं चरित काव्यों की विशेषताओं को देखकर कुछ लोग यह नहीं मानते कि मानस एक महाकाव्य है। लेकिन मानस कार ने वस्तु और नायक के साथ रस, प्रकृति, चरित्र चित्रण, जीवन दर्थन और समाज निरूपण आदि तत्वों को महितो महियग्न रूप प्रदान किया है। उपर्युक्त सभी तत्व मानस के महाकाव्य को सिद्ध करते हैं।

मोल्ल रामायण में कवयित्री का दृष्टिकोण एकांगी है उसमें उन्मुक्त शृंगार वर्णन को अनावश्यक प्रश्रय मिला है। महाकाव्य के अनेक लक्षणों का इसमें कुशल निर्वाह दिखाई पड़ता है। फिर भी अभावों एवं दोषों से प्रहीत होने के कारण इस में मानस को चाहता एवं संपन्नता के दर्शन नहीं होते।

मानस का वस्तु चयन पात्र, चरित्र चित्रण, रस निर्वाह समाज निरूपण, संस्कार विवेचन तथा अन्यान्य प्रसंगों का वर्णन उसे एक महाकाव्य सिद्ध करने में अत्यंत सहायक है। लेकिन मोल्ल रामायण में वस्तु पौराणिक होते पर भी चरित्र, रस आदि महाकाव्य के लिए उपर्युक्त स्तर पर नहीं है। कवयित्री ने अपनी रुचि के अनुसार प्रसंगों की योजना करती है। बालकाण्ड

में मारीच और सुबाहु राक्षसों का प्रसंग, भरत के ननिहाल जाने का प्रसंग अयोध्या कावड़ में मंथरा का प्रसंग, दशरथ के शाप की बात, उनके मरण का प्रसंग भरत के अयोध्या में आगमन का प्रसंग, सुन्दर काण्ड में हनुमान के लंका प्रवेश के समय लंकिणी नामक राक्षसी का प्रसंग, आदि मोल्ल रामायण में नहीं है। अयोध्यकाण्ड के दशरथ राम को युवराज बनाने का निश्चय करना और तत्पश्चात् रात्रि का वर्णा अनायास आता है। मोल्ल की इस प्रसंग योजना पर भारत के रामोपाख्यात का प्रभाव है।

विदेशी महाकाव्यों की तुलना मानस की सर्वोत्कृष्टता है प्रतिपादित करते हुए डा. राजपति दीक्षित कहत हैं कि कि यही नहीं हम सिर उठाकर यह भी कह सकते हैं कि वैसे न मिल्टन के पारहेज लास्ट में है, न स्पेंसर के फेयरी क्वीन में और न दान्ते की दिवंगा कमेडिया में।

#### ४-४२ निष्कर्ष :

मानस की महानता के मूल में इसका एक निजी गौरव है। उसकी प्रसिद्ध उसमें समाविष्ट राम, भक्ति आदर्श चरित्र चित्रण नीति तत्वोपदेश, लोकधर्म, समाज धर्म के आदर्श निर्वाह एवं पौराणिक कथा शैसी के कारण है। संक्षेप में मानस को पौराणिक महाकाव्य के रूप में माना जा सकता है। मोल्ल रामायण का काव्य रूप इससे भिन्न है। इसे वर्णनात्मक संक्षिप्त

प्रबन्ध काव्य के रूप में माना जा सकता है।

#### ४-५ छन्द योजना :

सफल छन्द योजना हर एक काव्य के लिए अपेक्षित तत्व है। तुलसी ने दोहा-चौपाई शैली को अपनाया साथ ही उन्होंने अनेक मात्रिक एवं वाणिक छन्दों को भी मानस में यथोचित स्थान दिया है। मोल्ल रामायण में छन्दों की अनेकता है और मोल्ल ने वाणिक छन्दों का ही अधिक प्रयोग किया है। उन्होंने मात्रिक छन्दों का प्रयोग नहीं किया। देशी शब्द समूह की बहुलता के कारण इस काव्य को सामान्य जनता सरलता से समझ सकती है।

#### ४-५१ मात्रिक छन्द और मानस :

दोहा-चौपाई के अतिरिक्त मानस में सौरठा, हरिगीतिका, त्रिभंगी और तोमर आदि छन्दों का प्रयोग है। चौपाई में कथा का निर्वाह निर्झरणी के समान चलता है। पद्मावत की इस शैली से तुलसी अत्यंत प्रभावित थे।

दोहा और सौरठा मानस में मिश्रम स्थलों में प्रयोगित हैं। जहां पाठक की दृष्टि चित्तन और मनन की और आकर्षित करने प्रयत्न करता है वहां इस छन्द का निर्वाह हुआ है। अलग या युग्म प्रयोग आठ अर्धालियों के पश्चात् एक बार प्रयोग हुआ है। जहां इस क्रम का भंग हुआ है वहां यह संख्या २,५,

७, ९, २९ और ३७ तक चलता है। विजयानंद विपाठी इस छन्द के बारे में कहते हैं कि जहां ११ अर्धालियों के बाद दोहा आ गया है वहां ६ चौपाईयां मानना ही न्याय है। अगर इसका संख्या कम है तो वहां चौपाई के स्थान पर अन्य विषयानुकूल छन्दों को प्रमुख स्थान दिया गया है। गोस्वामी जी छन्द के स्थान पर वस्तु को अधिक महत्व देते हैं और शब्द संगीत, लय और भावामिव्यंजना को महत्व मिलां है। पिंगल शास्त्र के नियमों को लोक विहित होने पर भी उनके बारे में तुलसी ने अधिक चिंता नहीं की। और उनकी शैली में सहज और सरल प्रभाव हिखाई पड़ता है। इस प्रकार तुलसी ने अपना छन्द ज्ञान और समन्वय शक्ति का परिचय देते हैं।

हरिगीतिका तुलसी का लोक प्रिय छन्द है। मानस में इसका १८० बार प्रयोग हुआ है। हरिगीतिका भाव, प्रभाव, एवं हृदय विधान को रंगीन बनाती है।

भनिति भद्रेश वस्तु भलि करनी। राम कथा जग मंगल करनी।  
मंगल तरनी कलि भल हरनि। तुलसी कथा रघुनाथ की।

शिव विवाह, राम विवाह, राम स्तुतु और रावण युद्ध के प्रसंगों में हरिमीतिका और शौरला छन्द का प्रयोग हुआ है। उल्लास एवं उत्साह के चिवण इस छन्द के द्वारा सफलता पूर्वक हो सकते हैं। आनंद की पराकाष्ठा में रुक रुक कर छोटे वाक्यों में विचारों की अभिव्यक्ति संभव है। लेकिन तुलसी अनूठे छन्दों का ही प्रयोग करते हैं।

### ४-५२ वार्णिक छन्दः

मानस के सभी वार्णिक छन्द संस्कृत से संबन्धित है। उन में इन्द्रवजा, वंशस्त और मालिनी का एक बार, वसंत तिलका, रतोद्वता और स्वग्धरा का दो बार, अनुब्टप का सात बार भुजंग प्रयोग का आठ बार और शार्दूल विक्रीडित का दस बार, प्रामाणिका का तेरह बार और त्रोटक का २१ बार प्रयोग हुआ है। मालिनी, शार्दूल विक्रीडित और स्वग्ध छन्दों में अधिक वंणों और यतियों का समावेश होने से विस्तुत चित्रण अथवा विश्रम के स्थलों में ही इसका प्रयोग किया जाता है। मानस के इन तीनों छन्दों के प्रयोग में गोस्वामी ने कला कुशलता का परिचय दिया है। उनमें प्रथम दो से शिव की और अंतिम चार से राम की वंदना प्रस्तुत की गयी है। मालिनी छन्द का प्रयोग हनुमान की वंदना में किया गया है। छन्दों का सरस एवं सुमदुर प्रयोग से ग्रंथ का वातावरण दिव्य और पवित्र दिखाई पड़ता है।

मानस की चौपाइयों की संगीतात्मकता का कारण यह है कि उनमें हिन्दी और संस्कृत के विभिन्न छन्दों का समावेश हो गया है। चौपाइयों में प्रयुक्त स्वरों और व्यंजनों की नाद सृति में ऐसा उत्तम आरोह या अवरोह हैं कि गायकों के लिए भी यह उपकारक सिद्ध होती है। समस्त वाद्ययंत्रों के साथ उत्साह पूर्वक लाय उन्हें गाया करते हैं। गोस्वामी ने अनेक स्थलों पर अपने का राम चरित्र का गायक भी कहा है। इस

काव्य की प्रेरणा में प्रत्येक दोहे के पश्चात् एक विशेष अर्थाली के संपुट को टेक के रूप में प्रयुक्त किया जाता है।

#### ८-५३ मोल्ल रामायण के छन्दः :

मोल्ल रामायण में छन्दों की बहुलता है। मोल्ल रामायण में केवल वार्णिक छन्दों का प्रयोग है। इन में उत्पलमाला चंपकमाला, मत्तेभ, शार्दूल विक्रीडित, सीस, कंद, आटबेलदि नेटगीति, लयग्राही, मत्तकोकिल, मालिनी पाये जाते हैं। कुल-मिलकर इस काव्य में ८१२ छन्द हैं।

नेलुगु में कंद पद्ध लिखने गमय पिंगल शास्त्र के अधिक नियमों का पालन करना आवश्यक होता है। मोल्ल की रुचि हस छन्द की और अधिक है। उस छन्द के माध्यम से अधिक भाव भी प्रकट किये जा सकते हैं। मार्गों कविता के लिए उपयुक्त छन्द उत्पलमाला, चंपकमाला, मत्तेभ, शार्दूल विक्रीडित, मालिनी, लयग्राही और मत्त कोकिल हैं। मोल्ल रामायण में इन छन्दों का उपयोग गौण रूप में है।

#### मार्गी छन्दः :

उत्पलमाला और चंपकमाला का प्रयोग प्रकृति वर्णन में और शार्दूल मत्तेभ का प्रयोग वीर रस प्रधान प्रसंगों में हुआ है। राम के धनुर्भग के समय मत्तेभ का और राजा दशरथ के शौर्य का वर्णन करते समय शार्दूल विक्रीडित का प्रयोग हुआ है।

इसी प्रकार हनुमान के समुद्र लंघन और अनेक राक्षसों से उनके युद्ध आदि प्रसंगों में इस छन्द का नियोजन है। प्रकृति वर्णन युद्ध शौर्य का प्रदर्शन, पराक्रम वर्णन आदि प्रसंगों में मार्गीय छन्दों का प्रयोग हुआ है। इस संदर्भ में अन्य छन्दों का भी प्रयोग हुआ है। लेकिन उनकी संख्या गौण है।

देशी छन्द :

रावण के द्वारा सीता के सौंदर्य वर्णन में लयग्राही का प्रयोग हुआ है। ताड़का के रूप वर्णन और भयग्रस्त रावण के वर्णन में मत्तकोक्तिल का प्रयोग हुआ है। मोल्ल को अधिक सफलता सीस, कंद, आटबेलदि और तेटगीति की रचना में मिली है। कंद की संख्या अधिक है। लेकिन मोल्ल को और अधिक सफलता सीस की रचना में अधिक मिली है। सीस छन्दों की संख्या इस रस के विवेचन में आठ है और आटबेलदियों की संख्यां बीस। छन्दों की संख्या भी लगभग पच्चीस है। फिर भी सीस छन्दों की रचना में मोल्ल को अधिक सफलता मिली है।

भक्ति रस के लिए मोल्ल ने उत्पलमाला और चंपकमाला छन्दों को अपनायी है। इस रचना के विवेचन में उत्पलमाला की संख्या ९ और चंपकमाला की संख्या ३ है। फिर भी उत्पलमाला में उन्हें अधिक सफलता मिली। करुण रस का चित्रण सीस छन्दों के द्वारा अधिक हुआ है। इस रस के विवेचन में सीस

छन्दों की संख्या १२ है।

प्रकृति चित्रण मोल्ल रामायण में दो बार ही हआ है। अयोध्या काण्ड के आरंभ में और सुन्दरकाण्ड में हनुमान के लंका प्रवेश के बाद प्रकृति चित्रण के लिए छंद, आटवेलंदि तेटगीति, उत्पलमाला को मोल्ल अपनाती है। हास्य रस में कंद छन्दों की संख्या अधिक है। भीभत्स रस की अभिव्यक्ति विभिन्न छन्दों के द्वारा हुई है।

मोल्ल रामायण में प्रायः प्राचीन रुढ़ि का पालन हुआ है। बालकाण्ड को छोड़कर शेष सभी काण्डों में आरंभ और अंत में कंद छंद का ही प्रयोग हुआ है। युद्ध काण्ड का तृतीय आश्वास मालिनी छन्द से अंत होता है। इसे एक अपवाद के रूप में माना जा सकता है।

मोल्ल रामायण के कुछ छन्दों में संगीतात्मकता है। हनुमान लंका में अपनी शक्ति का प्रदर्शन करते हैं। उस समय उत्पलमाला छंद का प्रयोग हुआ है। उसमें त वर्ग ध्वनियों के प्रयोग के कारण संगीतात्मकता उत्पन्न हुई है। हनुमान लंका में युद्ध करते समय रची गयी शब्दों की योजना में युद्ध की फुफुनाहट अभिव्यक्त करने में मोल्ल सफल हुई है। रावण युद्ध के लिए जाते समय विभिन्न वाद्य यंत्रों के नाम का उल्लेख है और उन छन्दों में शब्द योजना उन ध्वनियों का आभास देती है।

### निष्कर्ष :

तुलसी छंद के बंधनों के आगे नत मग्नक नहीं हुए। वे विभिन्न छंदों का सामंजस्य करते हैं जो भाव के वहन और ज्ञापन में समर्थ हैं। मोल्ल ने मार्गी छंदों की अपेक्षा देशी छंदों का अधिक प्रयोग किया है। मोल्ल रामायण में कंद की संभास अधिक है और मौल्ल ने अधिक सफलता सीस छंद की योजना में पायी है। आटवेलदि के द्वारा देशी शब्दावली का अधिक प्रयोग मोल्ल करती है। इस तरह छंद योजना में तुलसी और मोल्ल दोनों सफल हैं।

### ४-६ भाषा :

तुलसी के अनुसार भाषा का संबन्ध संस्कृतेतर लोक भाषा से रहा और इस दृष्टिकोण के अनुसार उन्होंने प्रकृति आदि के वर्णन भी लोक भाषा में किया। मोल्ल ने भी लौकिक देशीय शब्दावली का अधिक प्रयोग किया है। प्रायः तेलगु के मार्गी शाखा के अंतर्गत काव्य संस्कृत समासों और शब्दों से किलष्ट बनाये जाते थे जो साधारण जनता की समझ में नहीं आते थे। इसीलिए मोल्ल ने अपनी भाषा में देशी शब्दावली का अधिक प्रयोग किया।

### ४-६१ मानस की भाषा का रूप :

मानस की भाषा पश्चिम अवधि के रूपों को रखने पर भी

वह वयस्वाडी अवधि है। इस के साथ संस्कृत प्राकृत और अपभ्रंश के अतिरिक्त अरबी और फारसी के भी शब्दों का विशिष्ट योगदान है। तुलसी दीर्घ संस्कृत कवि परंपरा द्वारा परिपक्त भाषा के भांडार तक पहुंच गये। अवधि की मधुरता भी उनकी रचना में थी। इस प्रकार उनमें दोनों प्रकार की भाषाओं का आधिपत्य था।

मानस के समस्त भाषा-गठन में संस्कृत की प्रधानता है। हर एक काण्ड के आदि श्लोक और वंदना में संस्कृत का ही एकाधिकार है। जनोपयोगिता की दृष्टि से वे जन भाषा के प्रति पक्षपात रखते थे। किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से वे संस्कृत भाषा के प्रति श्रद्धा भाव रखनेवाले थे। इसी लिए संस्कृत भाषा को धर्याप्त मात्रा में पर्याप्त स्थान दिया। जन भाषा के प्रति आत्मीयता और संस्कृत के प्रति श्रद्धा का भाव केवल तुलसी के द्वारा ही गंभीर है। उनकी भाषां में वाल्मीकि की स्वाभाविकता, व्यास की समास शक्ति मारवी का अर्थ गौरव, बाण का लालित्य, कालिदास की प्रासादिकता, चन्द की अनेकरूपता, कबीर की ओजस्विता और सूर की माधुरी और मर्यादित सम्बन्ध रूप विद्यमान हैं।

तुलसी ने नाना पुराण निगमागम और वाल्मीकि रामायण की सम्मति को स्वीकार किया है। यह मानस की सांस्कृतिक संपन्नता है। जिन प्रसंगों के द्वारा वि जारों की अभिव्यक्ति में

अभीप्सित सफलता तुलसी को मिलता है उन्हों प्रसंगों को उन्होंने अपनाया। केवट प्रसंग के चित्रण में भाषा और भाव को तुलसी ने आध्यात्म रामायण से ग्रहण किया है।

तुलसी की शब्द योजना :

तुलसी ने अपने स्रोतों का नाम पहले ही उल्लेख किया है। अतः उसकी क्रिया को ग्रहण कहना ही उपयुक्त होता है। इस ग्रहण में पद से संज्ञा अथवा क्रिया के पद पाद से श्लोक का चातुर्थ भाग, अर्थ से उसका अर्थ भाग, वृत्त से उसका छंद और प्रबन्ध से उसका कथानक अभिप्रेत है।

तुलसी ने अपेक्षानुसार तत्सम, तद्भव, देजश और विदेशी शब्दों का बिना किसी संकोच के व्यवहार किया है। मानस के श्लोकों में संस्कृत पदावली है।—

गंकरं शंप्रदं सज्जनानंददं शैलकन्यत्वरं परम रम्यं।

काम मद मोचनं ताम रस लोचनं वामदेवं भजे भावगम्यं।

कंवु कुन्दंदु कर्पूर गौरं शिवं सुन्दरं सच्चिदानंद कंदम्।

सिद्ध सनकादि योगीन्द्र वृन्दारका विष्णु विधि वंद्य  
चरणारविदं।

उन्होंने हिन्दी संस्कृत मिश्रित भाषा का भी प्रयोग किया है—

यत्र कुव्रापि भम जन्म निज कार्य बस भ्रमत जग जे नि संकट  
अनेकं

तव त्वद भक्ति सज्जन समागम सदा भवतु से राम विश्राममेकं।

मानस में देशी शब्दावली का बहुल प्रयोग है। पखारन, पनही, बरिआता, केवट, बांफ, अहेर आधि अगणित शब्द इसके उदाहरण हैं। समय के प्रभाव के कारण उनकी भाषा में अरबी, फारसी शब्दावली को भी उपयुक्त स्थान मिला है। अंबारी, अबीर, सहन, बलाह, हलक, अकास, गनी, ताज, हाल, खास, खलक आदि शब्द अरबी से ग्रहीत हैं। जहांन, जमात, बखसीस, दरबार, गुमान, गरुर आदि फारसी से ग्रहीत हैं। इस शब्दों के ग्रहण यें तुलसी ने अवधी की प्रवृत्ति को ध्यान में रखकर उनके परिवर्तित रूप को ही अपनाया है।

### शब्द शक्तियां और गुण :

तुलसी ने अभिधा, लक्षणा और व्यंजना को सफलता के साथ निर्वाह किया है। आक्लन के लिए यहां व्यंजना शक्ति का एक उदाहरण द्रष्टव्य है—

चाँस चरन नख लेखनि धरनी । नूपुर मुखर मधुर कवि बरनी।  
मनहुं प्रेम बस बिनती करही । हमहि सीय पद जानि परिहरही।

शब्द शक्तियों के संबन्ध सें जो बात ऊपर कही गयी है वही बात गुणों के संबन्ध में दुहरायी जा सकती है। नीचे कुछ उदाहरण—

१ प्रसाद गुण : तुलसीदास प्रभु कृपा करहु अब मे निज दोष  
कुछ नहि गोयी ।

दोसत ही गह बीत निसा सब कहहु नाथ  
नींद भरि सोयी॥

२ माधुर्य : कंकन किंकिन नूपुर धुनि मुनि । कहत लखन सन  
राम हृदय गुनि ।

मानहु मदन दुंदुभी दीन्हों । मनसा विस्त्र विजय  
वहं कीन्हों ।

३ ओज गुण : मत्त भट मुकुट दशकंठ साहस, सहल सूंग बिदरनि  
जनु वज्र ठरंकी । दसन धरि धुरति विकरत  
दिग्गज कमठ सेषु संकुचित मंकित पिनाकी ।

#### ४-६२ मोल्ल की भाषा :

मोल्ल ने पीठिका में ही स्पष्ट किया है कि अपनी कृति  
पामर जनों के लिए है। इनके निम्न लिखित विवरण से यह  
बात स्पष्ट हो जाती है—

वलिवपु सन्न पय्येदनु वासिग गंधपु बूत तोडुतन्  
गोलदिग गान वच्चु वलि गुष्ब चनुंगव ठीवि नोप्पगा  
देलुगनि चेप्पु चोट गडु तेटल माटल गोतरीतुलन्  
बोलुपु वहिंपकुन्न मरि पोंदगुने पडहादि शब्दमुल् ।

(तेलुगु काव्यों में भाव तेलुगु के देशी शब्दों में नयी रीति से  
इस प्रकार फलकना चाहिए जैसे फीने आंचल में से चंदन लिप्त  
स्तन अपनी शोभा दिखाते हैं। पटहादि शब्दों का प्रयोग ठीक नहीं।)

पूर्व वर्षों में संस्कृत का तेलुगु रूपांतर प्रस्तुत करते समय यत्र तत्र भाव व्यक्तीकरण के लिए तेलुगु के कविगण अपनी विद्वत्ता दिखाते हुए तत्सम शब्दों का प्रयोग करते थे। इससे भाव किसी की समझ में नहीं आते। क्या ऐसी भाषा के प्रति किसी को रुचि हो सकती है।

(शहद के स्पर्श मात्र से मुह मीठा हो जाता है। वैसे ही काव्य का अर्थ शीघ्र समझ में आना चाहिए, अन्यथा गूढ़ शब्दों के प्रयोग के कारण काव्य का अर्थ यदि समझ में न आये तो वह गूँगे और बहरे के वार्तालाप के समान ही होता)

कंदुव्र माटल सपमेत  
लंदमुग गुर्चि चेप्प नदि तेलुगुनकुन्  
बोंदे रुचिये वीनुल  
विदे मरिकानुपिंचु विबुधुल मदिकिन्।

(चमत्कार युक्त शब्दों को लोकोक्तियों के साथ प्रयोग करके यदि तेलुगु में काव्य लिखा जाय तो वह सहृदयों के लिए रोचक और कर्ण प्रिया होता है।)

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट होता है मोल्ल सरल, देशों शब्दावली से युक्त तेलुगु भाषा को काव्य रचना के लिए उप-युक्त समझती है।

पारावार गभीरिकिन धुर्तिल सत्पदूमारिकिन् नित्य वि  
स्मरोदार विहारिकिन् सुजन रक्षा नक्ष दक्षारिकिन्

साराचार विचारिकिन् मदरिपुक्षमा पाल संहारिकिन्  
वीरा साटि नृपालकुल दशरथोर्वी नाथ जंभारिकिन् ।

उनकी संस्कृत शब्दावली सुगम और सुबोध है। यह भास्कर रामायण के विश्व आसानी संस्कृत निष्ठ तेलुगु भाषा में काव्य का प्रयोग करना चाहती है। इस में कवयित्री की सफलता को पंडित लोग भी स्वीकार करते हैं।

मोल्ल रामायण में निरर्थक शब्दों का प्रयोग भी नहीं है। इन की भाषा की विशेषता है ग्रामीण शब्दों का प्रयोग।

#### ४-६३ निष्कर्ष :

गोस्वामी का अध्ययन बड़ा विशाल था। अतः उन्होंने अपने मानस को अतिमंजुल बनाने के लिए संस्कृत के विभिन्न ग्रंथों से अनेक शब्दों, भाव और अर्थ खण्डों तथा छंदों का केवल उपयुक्त स्थलों में ग्रहण करके उनका सदुपयोग किया। उनमें अभिव्यक्ति की पूर्णता और पुष्टता के साथ औचित्य, मर्यादा और सोहेश्यता का भी ध्यान है। लेकिन मोल्ल काव्य शास्त्र, पिगल, रस आदि से पूर्णतः अनभिज्ञ है जिसका परिचय उन्होंने पीठिका में ही स्पष्ट किया है। फिर भी समस्त अलंकारों और भाषा की योजना में वे तुलसी के समकक्ष ठहरती हैं।

## उपसंहार

मोल्ल रामायण के साथ मानस के इस तुलनात्मक अध्ययन से तुलसीदास के विशाल अध्ययन, प्रकाण्ड पांडित्य तथा अद्वितीय काव्य कौशल का विशिष्ट परिचय प्राप्त होता है। मानस के द्वारा तुलसी की प्रतिभा और ज्ञान का सच्चा परिचय मिलता है। नाना पुराणादि विभिन्न स्रोतों से वस्तु ग्रहण करके उन्होंने अपनी कारतिकी प्रतिभा के साथ महाकाव्य का निर्माण किया है। इस काव्य को विश्व साहित्य में महोत्कृष्ट स्थान है।

तुलसी ने कवि स्वातंत्र्य और काव्य सोंदर्य का सम्मिश्रण किया है। मोल्ल रामायण में भी इस प्रकार का सम्मिश्रण है, लेकिन तत्कालीन समाज की विलासता और रसिकता से मोल्ल अत्यंत प्रभावित थी जिसका परिचय यत्तत्र राम के चरित्र के माध्यम से व्यक्त होता है। रस सृष्टि में आवश्यक संयम और मर्यादा से पूर्ण शृंगार के निरूपण के अतिरिक्त तुलसी न हास्य, करुणा, रौद्र, अद्भुत, शान्त आदि रसों का भी सफल निर्देशन किया है। मोल्ल रामायण में भी उपर्युक्त सभी रसों का निर्वाह हुआ है। राम के विप्रलंब शृंगार के द्वारा मोल्ल करुणा को जिस रूप में प्रतिष्ठित करना चाहती है, उस रूप में प्रतिष्ठित नहीं कर पायी है। इसी के कारण यत्तत्र रस का

आभास भी हुआ है। वीर रस की प्रधानता मानस के जैसे मोल्ल रामायण में भी है।

काव्य कला की दृष्टि से मानस ही सर्वोपरि ठहरता है। उन्होंने ऐसे अलंकारों को भी ग्रहण किया जिससे भावं के प्रवाह, प्रभाव एवं उत्कर्षपूर्ण रूप से व्यक्त हो सके। मोल्ल रामायण में स्वभावोक्ति अलंकार की बहुलता है और काव्यशास्त्रों के अनुसार वह अलंकार के अंतर्गत नहीं आता। मानस की शैली में पूर्व परंपराएं और पूर्ण विकसित वैयक्तिकता का सुन्दर सामंजस्य है। लेकिन मोल्ल रामायण में दोनों के सामंजस्य का पूर्ण रूप से निर्वाह नहीं हुआ। मानस का महाकाव्यत्व भी स्वयं सिद्ध है। लेकिन मोल्ल रामायण एक संक्षिप्त वर्णनात्मक प्रबन्ध काव्य है। मोल्ल रामायण के इतिवृत्त का निर्वाह, पात्र परिकल्पना, रस परिपाक, भाव और कला पक्षों का युन्दर आयोजन सभी दृष्टियों से परखने पर यह सिद्ध होता है कि मानस और मोल्ल रामायण में पर्याप्त अंतर होते हैं। मोल्ल ने मार्गों छन्दों का कम उपयोग किया है और देशी शब्दावली से युक्त देशी छंदों का सफलता पूर्वक निर्वाह किया है। मानस की भाषा, वस्तु, पात्र, रस आदि की दृष्टि से सुगम और समर्थ है। अनेक ग्रंथों से भी तुलसी ने पद, पाद और छन्द को ग्रहण किया है। और यह उनकी मधु संचयी प्रतिभा का प्रमाण है। मोल्ल रायायण में भी ऐसी प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है। मोल्ल ने वाल्मीकि रामायण और आध्यात्म रामायण से विपय संचयन किया है। मानस के

जैसे तत्वों का साभोर और निस्संकोच स्वीकरण मोल्ल में नहीं हुआ है। एक लोक नायक भक्त एवं कवि के समन्वित व्यक्तित्व से तुलसी मानस की रचना में प्रवृत्त हुए हैं। मोल्ल ने प्रधान रूप से कवकित्री के व्यक्तित्व से प्रेरित होकर मोल्ल रामायण की रचना की। मोल्ल के पूर्व राम कथा से संबन्धित उत्कृष्ट काव्य तेलगु में रचे गये जैसे रगनाथ रामायण और भास्कर रामायण आदि। इसी लिए विस्तार से राम काव्य लिखने की क्षमता रखते हुए भी उन्होंने उसे एक प्रकार से संक्षिप्त रूप में ही लिया। दोनों कवियों ने उत्तर रामायण की कथा को छोड़ दिया है, यद्यपि तुलसी ने उत्तर काण्ड की रचना की ततापि उसमें वाल्मीकि रामायण के समान लव-कशु वृत्तांत आदि नहीं है। अपने दार्शनिक धार्मिक तथा भक्ति गत धारणाओं के निरूपण के लिए उत्तर काण्ड को तुलसी ने प्रस्तुत किया है।

तुलसी ने दर्शन-सिद्धान्तों का विवेचन करके तद्वारा दास्य भक्ति की प्रतिष्ठा की है। मोल्ल रामायण में भी हनुमान विभीषण आदि दास्य भाव के प्रतिनिधि मात्र हैं, पर उनमें मानस की जैसी दास्य भक्ति दुर्लभ है। इस भक्ति का विवेचन मानस में दर्शन के माध्यम से हुआ है। लेकिन मोल्ल रामायण में दर्शन के परिवेश में भक्ति का विवेचन नहीं हुआ। तुलसी ने दर्शन शास्त्र के सिद्धान्तों को ग्रहण करने पर भी उनमें दुरुहता आने नहीं दी। दर्शन जैसे गंभीर विषय को भी उन्होंने अपनी सख्त, सरफ, ललित और सुबोध शब्दावली में व्यक्त किया है।

जिसे पंडितों का शब्दाङ्कबर भी व्यक्त नहीं कर पाया है। इसी प्रकार धर्म के सिद्धान्तों को भी उन्होंने व्यावहारिक निरूपण के द्वारा अधिक अनुकरणीय बनाया है। मोल्ल रामायण में सीता, विभीषण और कुम्भकर्ण रावण को और मास्यवंत मेघनाथ को नीति का उपदेश देते हैं। उन सभी को उपदेशों में पारिवारिक मर्यादा की रक्षा युद्ध के कारण उत्पन्न होनेवाली अस्त-व्यस्तता और शांति का उपदेश आदि सविचार है। मानसकार के कलियुग वर्णन में तत्कालीन अवांछनीय परिस्थितियों का वर्णन है। इसी प्रसंग में राम राज्य की प्रतिष्ठा तत्कालीन समस्याओं का परिस्कार होने के कारण काव्यत्व को दृष्टि से भी औचित्यपूर्ण वर्णन है। मोल्लरामायण में रामराज्य का वर्णन संक्षिप्त है। राम के शालन में जनता की स्थित के वर्णन में मोल्ल तत्कालीन समाज की रसिकता और कामुकता का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करती है।

मोल्ल ने मानवीय धरातल पर राम को देखा और तुलसी ने अतिमानवीय धरातल से। लेकिन दोनों काव्यों में प्राप्त राम के तत्व अभिन्न हैं। मोल्ल रामायण में साहित्य सौदर्य प्रथान विषब है और मानस में आध्यात्मिक चित्तन।

लौकिक शृंगारी भावनाओं को भक्ति के रंग में रंगने की प्रवृत्ति मानस में नहीं है। मोल्ल में लौकिक शृंगार का वर्णन है लेकिन तद्वारा भक्ति को रंगने की चेष्टा उत्तमें नहीं है।

तुलसी ने शैव वैष्णव का समन्वय मानस में किया। मोल्ल के पिता श्रीकण्ठ मल्लेश्वर के उपासक हैं और उन्होंने अपनी वर पुत्री को भी शैव धर्मानुयायी बनाया था। फिर भी मोल्ल रामचन्द्र जी से प्रेरणा लेकर राम की कथा की रचना करती है। इस प्रकार मोल्ल के व्यक्तित्व में शैव वैष्णव धर्मों का समन्वय हुआ है यद्यपि उनके काव्य में इसका प्रतिबिंब नहीं दिखाई देता।

वैदिक धर्म, विधर्मी मुसलमानोशासन और विभिन्न धार्मिक सांप्रदायिक प्रभावों के कारण उत्तर भारत में धीरे धीरे घटता रहा। इस की प्रतिष्ठा और सांप्रदायिक मान्यताओं का प्रचार और प्रसार मानसकार का लक्ष्य है। आन्ध्र प्रदेश में वैदिक धर्म अक्षुण्ण रहा। इसीलिए मोल्ल रामायण में इस विषय पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है।

अनेक विभिन्नताओं से युक्त होने पर भी भारत में अंत-निहित सांस्कृतिक धारा एक ही है। दोनों काव्यों में एक ही भारतीय संस्कृति अंकित है। जिसमें आर्य द्राविड आदि भैदों के लिए कोई स्थान नहीं है। वह चित्र समूचे भारत की सांस्कृतिक भाषा संस्कृत में मुरक्कित है और भिन्न भिन्न रूपों में देशों भाषाओं में भी प्रतिबिंबित है। इस प्रकार मानस और मोल्ल रामायण दोनों सांस्कृतिक मान्यताओं को प्रतिष्ठित करनेवाले काव्य हैं।

## **ABOUT THE AUTHOR**

**Name** : Dr. K. Narasimha Murthy, *M.A.*, (Hindi),  
Sahitya Rathna, Ph.D.

**Profession** : Lecturer in Hindi  
Govt. Degree College, Piler.

**Topic of  
Research** : Telugu Bhashi Hindi Kathakaar

**Publications** ; Ramacharithamanas and Molla Ramayan  
Comparitive Study

2 Telugu Bhashi Hindi Kathakaar

3 Many Poems and Stories and literary essays  
Published in various Telugu and Hindi  
Magazines.